SHAMA-E- HAQIQAT- PDF (HINDI)

SUFI MAHMOOD ZAHOORI QADRI

Mob: 8217871086

Website: www.sufizahoorkhaliqullahi.com

وَطَآئِفَةٌ قَدْاَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ بِاللّٰهِ يُظُنُّونَ غَيْرَالْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ

एक ग्रोह इन्सान का ऐसा है कि तहकीक़ उनके
नफ़ूस ने गुमान कर लिया है अल्लाह ही पर
ग़ैर अल्लाह का यह गुमान जाहिलियत का है।

शम-ए-हक़ीक़त

(हिन्दी)

मुसन्निफ़

हज़रत मौलाना सूफ़ी

मुहम्मद खलीक़ उल्लाह शाह क़ादिरी

हस्ब फ़रमाइश

जनाब मुहम्मद जमालुद्दीन साहब खलीक़ी इफ़तिख़ारी

पब्लिशर

जनाब मुहम्मद कमालुद्दीन सिद्दीकी खलीक़ी इफ़तिख़ारी

हल्दी कलाँ, तहसील-करछना, इलाहाबाद

नाम किताब : शम-ए-हक़ीक़त

बारे तृतीय : ग्यारह सौ

माह : दिसम्बर-2015

कवर : वदूद अहमद

कम्पोजिंग : शिज़ा कम्प्यूटर्स

कीमत : 120/- (केवल एक सौ बीस रूपये)

मुद्रक :
आलिया प्रिन्टर्स, इलाहाबाद
मोबाइल : 9794867772

विषय-सूची

अध्याय	विषय	पेज नम्बर
	गुज़ारिश	5
	और अब - शम-ए-हक़ीक़त (हिन्दी में)	7
1.	हम्द पाक	9
2.	मरातिब जाते इलाही	13
3.	दुनिया की पैदाइश का सबब	17
4.	कलिम-ए-तौहीद का अर्थ	22
5.	तौहीद का सुबूत कुरआन से	26
6.	तौहीद का सुबूत हदीस से	41
7.	तौहीद का सुबूत औलिया अल्लाह की किताबों से	45
8.	रसूल करीम की तारीफ़ कुरआन में	57
9.	रसूल करीम की तारीफ़ औलिया अल्लाह की नज़र में	78
10.	बैअत की ज़रूरत	97
11.	ज़रूरी नसीहतें और शरीअत पर चलने की ताकीद	112
12.	ग़ज़लयात - लेखक	120
13.	हज़रत पीरी मुर्शिद की स्वानेह हयात	127
14.	ग़ज़लयात - हज़रत मौलाना सूफ़ी शाह मुहम्मद इफ़तिखारूल हक़ (बिसमिल) क़ादिरी, चिश्ती, मुजीबी, क़द्स अल्लाह सिर्रहू	132
	किताब का खुलासा (सारांश)	149
	तसव्वुफ़ की तस्दीक़ में दूसरे मज़हब के बुजुर्गों की बातें	152
15.	तरीक़ए फ़ातिहा और खुलफ़ा के नाम व पते	157

◆◆◆

किताब मिलने का पता

1. **जनाब सूफ़ी शाह मुहम्मद इफ़तिख़ार उल्लाह क़ादिरी .....**
   16, याकूतगंज, इलाहाबाद

2. **जनाब मुहम्मद ज़हूर खाँ साहब क़ादिरी .....**
   82, तपस्सया रोड (साउथ), कोलकाता-46

3. **जनाब मौलवी मक़बूल अहमद साहब क़ादिरी**
   मदरसा सिराजुल उलूम
   105, नीम सराय, पो0 बेगम सराय, इलाहाबाद-12

4. **मुस्तफ़ा खाँ आटो वर्क्स**
   वाटर फील्ड रोड, 117, मुसफ़्फर मनोर
   28 रोड, बाँदरा (वेस्ट) मुम्बई-50

5. **अब्दुल ग़फ़्फ़ार सोप फैक्टरी**
   बड़ी संघत, जहानाबाद (बिहार)

6. **जनाब लल्लन मिस्त्री**
   क़िला रोड, जौनपुर

7. **जनाब अज़ीम उद्दीन (वल्द रोशन ज़मीर क़ादिरी मरहूम)**
   18, बरनतला, इलाहाबाद-13

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

गुज़ारिश

حَامِدًا وَّمُصَلِّیًا فَبَعۡدُ

ऐ साहबे कलिमात लामुतनाही "जिसकी इन्तिहा नहीं" हम्द कुल्ली 'तमाम तारीफें' तुझी को ज़ेबा हैं। क्योंकि तेरा ग़ैर मौजूद नहीं है। और रहमत कामिला व सलामती ताम्मा तेरे कलिम–ए खुलासए कलिमात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शायाँ है। इसलिए कि वह तेरी ज़ात, सिफ़ात और तमामी अफ़आल का आईना और मजहरे अतम है और नीज तेरे उन कलिम के लिए जो तेरे कलिमए खुलासए कलिमात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मिराअत (आईना) व मज़ाहिर हैं।

अम्मा बाद। आँकि फ़क़ीर मुहम्मद खलीक़ उल्लाह खलीफ़ा व सज्जादानशीन हज़रत मौलाना व मुर्शिदना सूफ़ीए बा सफ़ा मुहम्मद इफ़तिख़ारूल हक़ क़ादिरी, चिश्ती, सुहरवर्दी व नक्शबन्दी, रहमानी व मुजीबी क़द्स अल्लाह सिररहू का है। उसके मुरीदीन व मुतवस्सिलीन ने ज़ोर दिया कि कलिमात रूश्दो–हिदायत (मारफत की तालीमात) एक मुख़्तसर आमफ़हम किताब की शक्ल में मुज्तमा करे ताकि जरूरतमन्द अस्हाब अमूमन और मुरीदीन खुसूसन फ़ैजयाब हों। और मेरे लिए सवाब जरिया का बाअस हो। लिहाजा यह बन्दए नाचीज़ फ़क़त अल्लाह की तौफ़ीक़ और भरोसे पर

कलम उठाता है। फ़क़ीर चन्दाँ इल्म नहीं रखता यह सिर्फ फ़ैज़ और तसर्रुफ़ शैख है इसके सिबा कुछ नहीं। यह हक़ीक़त इस्लाम इसलिए जाहिर नहीं किया जा रहा है कि अहबाब उसकी तहसीन फ़रमाएँ बल्कि महज़ तालिबान हक़ उससे मुस्तफीज़ हों और यह फ़क़ीर उसका बदला अल्लाह से पाए। अल्लाह पाक कुबूल फ़रमाए और नफ़सानियत से बचाए। आमीन।

इस नाचीज़ ने कोई बात अपनी तरफ़ से नहीं तहरीर की है बल्कि जो कुछ लिखे है वह कुरआन व हदीस और मशाहीर उलमाए बिल्लाह ही तहरीरों और अक़वाल से क़वी दलायल व बराहीन के साथ पेश किया है। लिहाजा नाज़रीन किराम से बा अदब गुजारिश है कि अगर वह कोई बात क़ाबिल गिरफ़्त समझें तो उससे क़िता नज़र फ़रमा कर मुसन्निफ़ को सज़ावार न ठहराएँ। बल्कि जिन किताबों या उल्माए रब्बानी के हवाले दिए गए हैं, उनकी तसानीफ़ से तशफ्फी फ़रमा लें।

दीन के काम में अक़्ल व ख़िरद को दखल नहीं और यहाँ अपने आपको कुरआन व हदीस के मुक़ाबिल में कुछ न गिनना ही अक़लमन्दी है। अपने इल्म व अक़्ल की तराजू में कुरआन व हदीस को तौलना नादानी है बल्कि अपने इल्म को जो समुन्दर के मुक़ाबिले में एक क़तरा की हैसियत रखता है उसे भी रुख्सत कर देना चाहिए।

बक़ौल हज़रत शाह न्याज़ अहमद बरैलवी रहमतुल्लाह अलैह–

शेर- **जभी जा के मतबे इश्क़ में सबक़े मुक़ाम फ़ना लिया।**
जो पढ़ा–लिखा था न्याज़ ने उसे साफ़ दिल से भुला दिया।।

हज़रत मौलाना रूम रहमतुल्लाह अलैह–

शेर- **गर ब इसतिदलाल कारे दीं बुदे।**
फर्ख़ राज़ी राज़दारे दीं बुदे ।।

हज़रत हाफ़िज़ शीराज़ी रहमतुल्लाह अलैह–

7 **बयक जुर्आ रसीद अज़ मैं चू हाफ़िज।**
हमा अक़्लो खिरद बेकार बीनम।।

नाज़रीन किराम इस किताब से फ़ाएदा उठाएँ और इस फ़क़ीर को अपनी दुआओं में याद रखें।

खुदावन्द कुद्दूस व तुफ़ैल अपने हबीब पाक साहबे लौलाक हमें सिराते मुस्तक़ीम पर चलाए और वही इसलाम और ईमान अता फ़रमाए जो उसके और उसके नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नज़दीक है।

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى
آلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ۔

–लेखक

और अब !

शम-ए-हक़ीक़त

हिन्दी में !

फ़क़ीर हक़ीर मक़बूल अहमद क़ादिरी, चिश्ती, इफ़्तिखारी खलीफ़ा व सज्जादा नशीन हज़रत सूफी शाह मुहम्मद ख़लीक़ उल्लाह क़ादिरी, चिश्ती, इफ़्तिखारी रहमतुल्लाह अलैह का है। हालाँकि यह नाचीज़ अपने आपको उस दर का कुत्ता भी तसव्वर करना बे अदबी समझता है। मगर पीर की नज़रे करम को क्या कहूँ, यह सब उन्हीं का सदक़ा है, यही कहना पड़ता है।

शेर – मैं हर बार सोचता हूँ रह रह कर।
मैं क्या था और क्या बना दिया तूने।
करम किया दिले दर्द आश्ना दिया तूने।
हयातो मौत का झगड़ा मिटा दिया तूने।।

⌘ ⌘ ⌘

जब तक बिका न था कोई पूछता न था।
तुमने मुझे खरीद के अनमोल कर दिया।।

शमए–हक़ीक़त उर्दू हज़रत की हयात पाक में तीन बार छप चुकी है और उसकी तरतीब और छपवाने में मेरा हाथ रहा है। हिन्दी दाँ हज़रात की ख्वाहिश पर मेरे करम फ़रमा हज़रत के बड़े साहबज़ादे और ख़लीफ़–ए–आज़म हज़रत सूफ़ी शाह मुहम्मद इफ़्तिखार उल्लाह् क़िबला ने मुझे इस किताब को हिन्दी में लिखने की फ़रमाइश की। चूँकि इन्कार की कोई गुनजाइश न थी इसलिए जहाँ तक मुमकिन हो सका आसान हिन्दी ज़बान में लिखा ताकि समझने में आसानी हो। ज्यादा से ज्यादा लोग इससे फ़ायदा उठाएँ और मुझ फ़क़ीर को अपनी दुआओं में याद रखें।

किताबों से तलब हक़ पैदा होती है लेकिन मक़सद यानी मारफ़त इलाही हासिल नहीं होती। पीर कामिल का मुरीद होकर इस रास्ते में क़दम रखना चाहिए वरना गुमराही में पड़ जाएगा।

हज़रत मौलाना रूम रहमतुल्लाह अलैह–

शेर– सद किताबो सद वरक़ दर नार कुन।
रूए खुद तू जानिबे दिलदार कुन।।

अर्थ– सैकड़ों किताबों को जला दे और खुद को दिलदार (मुर्शिद) के हवाले कर दे।

शेर– मुनकरे बैत किसी कामिल से जल्दी बैतकर।
नूह का तूफ़ान है कश्ती अभी साहिल पे है।।

⌘ ⌘ ⌘

शेर– गर चाहता है तू कि पता यार का लगे।
उसकी तलाश कर जिसे अपनी खबर न हो।।

⌘ ⌘ ⌘

शेर– जो थीं कहने की बातें कह चुके तालिब मियाँ बिसमिल।
अमल कर बैठना उस पर सआदत इसको कहते हैं।।

व आखिरो दावाना अनिल हम्दो लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

खाक पाए मुर्शिद
मक़बूल अहमद सूफ़ी अनहु

अध्याय - 1

हम्द पाक

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلیٰ الْکَمَالِ الْمُطْلَقِ وَ الْجمالِ الْمُحَقَّقِ عَیْنِ اَعْیَانِ
الْخَلْقِ وَنُورِ تَجَلِیَّاتِ الْحَقِّ فَصلِّ اَللّٰھُمَّ بِكَ وَمِنْكَ فِیْهِ عَلَیْهِ
وَسَلِّمْ فِیْ کُلِّ لَمْحَةٍ وَّنَفَسٍ عَدَدَمَا وَسِعَهٗ عِلْمُ اللّٰهِ۔

क़लम कह कर के बिसम्मिलाह हो वस्साफ़ बेहद का।
मवहहिद हो कि हामिद हो तू महमूद और अहमद का।।

मौजूद तुई ब हर वजूदे।
मशहूद तुई ब हर शुहूदे।।
हम नाज़ो हम न्याज़ दारे।
दर परदा निहाँ चिह साज़ दारे।
गह जलवए अहमद मी नमूदे।
9 दिलहाए जहाँनियाँ रबूदे।।
बूक्करो उमर गहे तू गश्ती।।
जुन्नार दिल मरा शिकस्ती।।
उस्मानो अली तू नामदारी।
दर हर सिफ़ते क्याम दारे।।
काँ कन्ज़ खफ़ी चूँ जल्वा खास्त।
ईं हुजलए मुमकिनात आरास्त।।
दरयाए अलस्त जोशहा ज़द।
अमवाजे हदूसहा बर आमद।।
ईं रम्ज़ अयाँ ज़े लाइलाहस्त।
अशहदु अललाइलाह गवाहस्त।।

कीं बातिनो ज़ाहिर ईं हमा ओस्त।
ह्म अव्वलों ह्म आख़िर ह्मा ओस्त।।
ज़ीं बेष ख़लीक़ फ़ाश म खरोश।
मकुशा ज़े नवेदे राज़ सर पोष।।

अर्थ- हर वजूद में तू मौजूद। हर हाज़िर में तू मौजूद। नाज़ो–न्याज़ वाला। परदे में क्या ही साज़ छुपा हुआ है। कभी शक्ल अहमद में जल्वागर हुआ। दुन्या वालों के दिल चुरा लिए। कभी अबूबकर और उमर बना और मेरे दिल की जुन्नार (बुत) को तोड़ डाला। उस्मानो अली अपना नाम रखा और हर सिफ़त में तेरा क़्याम है। जब उस कन्ज़ मख़्फ़ी (ज़ात इलाही) ने अपना जहूर चाहा तो आलमे इमकान (दुनिया) को सजाया। दरयाए अलस्त में जोश पैदा हुआ तो उससे सूरतों की लहरें उठीं। यह भेद कलिमए तैयबा से खुला और इस पर कलिमए शहादत गवाह है कि यह ज़ाहिरो बातिन सब वही है, अव्वलो–आखिर सब वही है। ऐ खलीक़ इससे ज्यादा मत खोल, छुपे हुए भेदों पर से परदा मत उठा।

नअत पाक

अह्द अज़ग़ैब चूं दर मुक़ामे मारफ़त आमद।
ब मीमे मारफ़त तरकीब अहमद याफ़्त नामेऊ।।
ब अव्वल अज़ हमा अव्वल ब आखिर अज़ा हमा आखिर।
बज़ाहिर बूद पैग़म्बर ब बातिन बुद प्यामेऊ।।
उरूज अज़हर हर नुज़ूले कदो शुद हर ज़ात हक वासिल।
चुनँ वासिल कि गश्ता क़ाबा क़ोसैनश मुक़ामेऊ।।
तुफ़ैले ज़ात पाके आँ हबीबे खास ज़ाते हक़।
हमा कामे दो आलम शुद पिज़ीरफ़ता बकामेउ।।
बा आलम आँ कसे कू खाक पाए खादिमानश शुद।
हुमाए रफ़्अतो अज़मत मुसख्खर सुद बदामेऊ।।
असीरे दाम जुलफ़श अज़ बलाए ह्श्र कै तरसद।
कि बाशद दोज़ख़ो जन्नत हमा दर इहतिमामेऊ।।
सवादे नामए आमाल तो अज़ हुरमते बिसमिल।
खलीक़ यकसर बरद दर हश्र जुल्फ़े मुश्क फ़ामेऊ।।

अर्थ- अहद जब मुक़ाम मारफ़त (पहचान) में आया तो मारफ़त की मीम से उसका नाम

अहमद हुआ। पहलों में सबसे पहला, आखिरों में सबसे आख़िर, जाहिर में पैग़म्बर बातिन में उसका प्याम। हर नुज़ूल (पस्ती) से उरूज करके बलन्द होकर ज़ात हक़ से वासिल हुआ, और ऐसा वासिल हुआ कि सिर्फ़ दो कमानों की दूरी रही। बल्कि उससे भी कम। महबूबे खुदा की ज़ातपाक के सदक़े में दोनों आलमों के तमाम काम बने। दुनिया में जिस किसी ने उनके गुलामों की गुलामी इख़्तियार की तो बलन्द इक़्बाली की हुमा (इज़्ज़तो मरतबा) हाथ आई। उनकी जुल्फ़ों का क़ैदी (आशिक) क़यामत की सख्तियों से कब डरता है कि जन्नत और दोज़ख का इन्तिज़ाम उनके हाथों में है। ऐ खलीक़ तेरे आमालनामे की सियाही बिसमिल की खुशबूदार जुल्फ़ों की हुरमत से बिल्कुल मिट जायेगी।

मनक़बत हज़रत अली

लिखे नामे अली की मदह यह किसका इम्काँ है।
कि जिसकी दफ़्तरे तारीफ़ से यक जुज़्ब कुरआँ है।।
सवादे चश्म दीने अहमदी है नूरे कुरआँ है।
खुदा के नाम से मिलती हुई इस नाम की शाँ है।।
ज़बाँ पर जब अदब से मुर्तज़ा का नाम आता है।
तो बहरे बेक़राने रहमते हक़ जोश खाता है।।
गले में डालते बच्चों के हैं नादे अली लिख के।
बहादुर लड़ते हैं जंगगाह में नामे अली ले के।।
मुहब्बत कर अली से गर है कुछ तक़दीर से लेना।
अजब कुदरत है उसके नाम में वल्लाह क्या कहना।।
ज़बाँ से या अली कहते ही दिल को जोश आता है।
अगर दिल से कहे देखे तो क्या ही लुत्फ आता है।।
अली का नाम भी नामे खुदा क्या राहते जाँ है।
असाये पीर है तेग़े जवाँ है हर्ज़ तिफ़लाँ है।।

मनक़बत हज़रत पीरो मुर्शिद

ऐ शाह इफ़्तिख़ार रहमानिए, मा।
सामाने हमा बे सरो सामनिए मा।।
बा तू राहतस्त व जमैयते दिल।
बे तू हमा रंजस्तो पराशिये मा।।

अगर हर मूए मन गरदद ज़बाने।।
जे तू रानम बहर यक़ दास्ताने।।
न्यारम गौहरे शुकरे तू सुफ़तन।
बहर मूए जे इहसाने तू गुफ़तन।।
ऐ अज़ फ़रोगे रूयत रोशन चिराग़ दीदा।
चश्मे चु चश्म मस्तत चश्मे जहाँ न दीदा।।
हम चूँ तू नाज़नीने सरता बपा लताफ़त।
गीती निशन न दादा ऐज़द न्याफ़रीदा।।

अर्थ-ऐ हमारे शाह इफ़्तिखार रहमानी हमारी बेसरो--सामानी के सामान आप ही हैं। आपसे आराम और दिल को तस्कीन मिलती है और आपके बग़ैर हमारे लिए रंज और परेशानी है। अगर मेरे हर बाल ज़बान हो जायें तो मैं हर एक से तेरी दास्तान कहूँ। अगर मैं हर बाल से तेरे एहसानात का शुक्रिया अदा करना चाहूँ तो भी अदा नहीं कर सकता। ऐ कि आपके रोशन चेहरे से चिराग़ रोशन हुए और आपकी मस्त आँखों की तरह दुनिया में कोई आँख न देखी। सरतापा आपकी तरह हसीन और नाज़नीन का न तो दुनिया ने पता दिया और न ही यज़दाँ खुदा ने पैदा किया।

❖ ❖ ❖

अध्याय - 2

मरातिब ज़ाते इलाही

11 तमाम आलम की पैदाइश से पहले ज़ात क़दीम (ज़ात इलाही) अपनी सिफ़तों अफ़आल कुल्ली बिलकुवा की मजमूइयत के साथ आलमे हाहूत यानी कन्ज़ मख़्फ़ी (जहाँ अल्लाह तआला का ग़ैर न था, छुपा हुआ खज़ाना) में छुपी थी।

كُنْتُ كَنْزاً مَخْفِيّاً فَاَحْبَبْتُ اَنْ اُعْرَفَ فَخَلَقْتُ الْخَلْق

हदीस पाक का अर्थ, अल्लाह एक छुपा हुवा खज़ाना था पस उसको मुहब्बत आई कि पहचाना जाऊँ पस पैदा किया मख़्लूक़ को (सारे आलम को)।

यानी अपनी मारफ़त (पहचान) का शौक़ हुवा चूँकि बिला परदा व हिजाब जहूर पाना (ज़ाहिर होना) नामुमकिन था इसलिए ला जिस्म (बग़ैर जिस्म के) ब हफ़्त तनज़्ज़ुलात (सात मरातिब) शुयूनात (सानों) तऐयुनात (मैजूदात) मुख़्तलिफ़ा (अलग–अलग) मुज़्मलन (खुलासा के तौर पर) व मुफ़स्सलन (खुला हुआ) परदए नूरानी व जुलमानी (रोशनी व अँधेरा) से जल्वए शुहूद (जाहिर, मौजूद) में नुजूल फ़रमाया (ज़ाहिर हुवा) लेकिन उसकी ज़ात क़दीम में कोई कमी या बेशी (ज़्यादती) न हुई।

كَانَ اللّٰهُ وَلَمْ يَكُنْ مَّعَهٗ شَيْئٌ اَلْاٰنَ كَمَا كَانَ

हदीस पाक का अर्थ, अल्लाह अकेला था उसके साथ कोई शै 'चीज़' मौजूद न थी और अब भी वह जैसा था वैसा ही मौजूद है 'यानी उसका ग़ैर न था न अब है न हो सकता है'।

ज़ात क़दीम का सात मनाज़िल में नुजूल। पहली मंजिल बाहूत। जब ज़ाते क़दीम को अपना ज़हूर मन्ज़ूर हुवा (ज़ाहिर करना) तो कुल आफ़रीनिश (मख़्लूक़ात) को जैसा कि अज़ल से अबद (शुरु से आखिर) तक ज़ाहिर करना मक़सूद था (इरादा) मुज्मलन अपने आप में मुलाहिज़ा फरमाया जैसा कि कोई साने (मूजिद) किसी सन्अत (ईजाद)
12 की ईज़ाद (बनाना) से पहले अव्वल उसका नक़्शा अपने दिल में तसव्वर (जमाता) करता है और तदाबीर सन्नाई (बनाने की) ज़िहन नशीन करता हैं। पस उस वक़्त वह मस्नू (ईजाद) उसकी सन्अत (कारीगरी) से ज़ाहिर होता है। मगर यहाँ सन्अत व मसनू सब एतिबारी हैं। इसलिए कि सन्अत साने की ग़ैर होती है। मसलन कुम्हार की सन्अत

मिट्टी पर ज़रगर (सुनार) की सन्अत ज़र पर (सोना पर) यहाँ कि बजुज़ ज़ात उहद (अकेला) क़दीम के कोई शै क़दीम नहीं पस साने व सन्अत व मस्नू एक हैं। यानी जो सन्अत करनी मन्जूर हुई वह खुद साबे आप ही बन गया। इस की स्वुर इलमिया (ख्याली सूरतें) और मुक़ाम इरादा भी कहते हैं।

दूसरी मंज़िल लाहूत। यह मुक़ाम शुहूद इलमी तफ़सीला है यानी जो कुछ मुक़ाम बाहूत में ज़ात ने मुजमलन अपने ख्याल के आईने में मुलाहिज़ा फ़रमाया था अब वह तज्वीज़ व तशखीस मुफ़स्सलन इल्म हज़रत हक़ में मुकम्मल हुई। चूँकि जात हक़ जलाल है और जलाल से जमाल जहूर पज़ीर (ज़ाहिर) हुआ और वह नूरे मुहम्मदी है। जलाल को जमाल से इश्क़ हुआ और उसी जमाल से यानी हक़ीक़त मुहम्मदिया से तमाम आलम का जहूर हुआ जो कुछ इल्मो इरादा में मुजमल था वह मुफ़स्सल हुआ।

तीसरी मंजिल अबरुत। इसको आलमे अरवाह भी कहते हैं। यह मुक़ाम भी नुजूल ज़ात का बमरतबए इल्मी व शुहूदी तफ़सीली व मरतबए शुहूद खारज़ी सिफ़ातिया है यानी वही शुहूद इल्मी जैसा कि बमरतबए लाहूत था ब अम्र कुन (होजा) शुयूनात व तऐयुनात मुतग़ायरा (ग़ैरियत) एतिबारिया वजूद सिफ़ाती में आया। और अस्मा (नामों) व सिफ़ात (कमालात) का ज़हूर हुआ वाजिब से इम्कान में आया।

चौथी मंज़िल मलकूत। इस मुक़ाम में ज़ात बे चूँ (क्यों, कैसे) ने शुयूनात जबरूती पर किसी क़दर कसाफ़त और इज़ाफ़ा करके लतीफ़ सूरतों और अलग–अलग शक्लों से ज़हूर फ़रमाया।

13 पाँचवी मंजिल आलमे मिसाल। यह मुक़ाम व एतिबार कसाफ़त शहादत है और ब एतिबार लताफ़त आलमे मिसाल। सूरतें और शक्लें मिस्ल आलमे नासूत के जाहिर हुई मगर लतीफ़।

छठवीं मंज़िल नासूत । मिसाली शक्लों पर कि बिलकुल इस आलम की शक्लों की तरह हैं, एक ग़िलाफ़ (परदा) नासूती कि वह अरबा अनासिर (मिट्टी, पानी, आग, हवा) से है इजाफ़ा करके ज़ात अज्साम (जिस्मों) में ज़ाहिर हुई। यानी उस ज़ात क़दीम ने हुस्नो जमाल ज़ाती और सिफ़ाती मुक़ाम हाहूत से मुक़ाम शहादत तक नुजूल फ़रमाया किसी क़दर कि ख़फ़ा (परदा) बाक़ी था कमाल तअश्शुक जहूर (जाहिर होने के शौक़ में) ने वह भी गवारा न किया लाजिरम मवालीद सलासा यानी जमादात नबातात और हैवानात (पत्थर, पेड़–पौधों, जानवरों) में ज़हूर फ़रमाया।

सातवीं मंज़िल इंसानी। शश (छः) मरातिब नुजूल में दोनों जहान तमाम ब कमाल (पूरे तौर पर) ज़ाहिर हुए मगर मुद्दआए मारफ़त

اَجْبَبْتُ اَنْ اُعْرَفْ

यानी अपने पहचाने जाने का मक़सद हासिल न हुआ और मारफ़त इलाही की लियाक़त कौनैन में किसी के अन्दर न पाई, उस जात बे चूं ने वजूद इन्सानी में नुजूल फ़रमाया, जिससे तकमिला मारफ़त को पहुँचा (पहचाना गया) कुल आलम एक पेड़ की तरह है और इन्सान उसका समर (फल) और ज़ात मुहम्मदी मग़्ज़ समर (फल का बीज) है। जैसे शजर (पेड़) मग़ज़ (बीज) से ज़ाहिर होता है वैसी ही तमाम आलम नूरे मुहम्मदी से ज़ाहिर हुआ है। जैसा कि नबी–ए–करीम ने इरशाद फ़रमाया–

اَنَا مِنْ نُوْرِ اللّٰهِ وَكُلُّ خَلَائِقُ مِنْ نُوْرِىْ

–हदीस पाक का अर्थ, मैं अल्लाह के नूर से हूँ और कुल मख़्लूक़ मेरे नूर से है। पस हर ज़ात इन्सानी हक़ीकत मुहम्मदिया की ऐन है। जिस तरह कि फल में वही बीज खुद समाया हुआ है जिससे कि पूरे पेड़ और खुद फल ने वजूद पाया है। बिल्कुल
14 इसी तरह हर इन्सान में नूरे मुहम्मदी यानी ज़ात मुहम्मदी व शाने रूह मौजूद है। पस हुज़ूर पाक हयातुन–नबी इस माना करके हुए कि उन औलियाए कराम की शान में जिन्होंने मारफ़त कुल्ली (पूरी पहचान) हासिल कर ली है उन सब फ़ानूसों (चिरागों) में वही नूर वाहिद (अकेली रोशनी) रोशन होता चला आ रहा है। खुलासए कलाम यह कि इन्सान खुलासाए काएनात (साराँश) मौसूफ़ ब जमी सिफ़ात (तमाम कमालात वाला) और खास सूरते रहमान है। (अर्थ हदीस पाक, हमने आदम को अपनी सूरत पर पैदा किया) जब उस कन्ज़ मख़्फ़ी ने अपना हुस्न लायज़ाली (न मिटने वाला) और जमाले बे मिसाली (मिस्ल नहीं) के तमाशे का इरादा किया तो अव्वल चमन आफ़–रीनिश (दुनिया का फुलवारी) को अन्वाओ अक़्साम (तरह–तरह) के शजर हाये बूक़लमूं (जुदा–जुदा पेड़–पौधों) और गुलहाये मौज़ूँ (उम्दा फूलों) से आरास्ता किया (सजाया) और आखिर में खुद व लिबास इन्सानी मुलब्बस (इन्सानी लिबास में) होकर तमाशा के लिए आया।

हजरत अब्दुल कुद्दूस गंगोही रहमतुल्ला अलैह–

शेर– **आस्तीं बर रुख कशीदी हम चूँ मक्कार आमदी।**
बाखुदी खुदी दर तमाशा सूए बाज़ार आमदी।।

अर्थ- ज़ात बेरंग सूरत के परदे में खुद ही अपनी खुदी के साथ दुनिया के तमाशा गाह में आयी।

इसीलिए आदम अलैहिस्सलाम को फ़रिश्तों से सज्दा कराया गया और अज़ाज़ील (शैतान) जिसने ला इल्मी से इन्कार किया लानती हो गया।

मौलाना रूम–

शेर– अगर ईं नुक्ता दानिस्ते अज़ाज़ील।
हज़ारॉं सज्दा आवुरदे दरॉं दम।।
गर न बूदे ज़ात हक़ अन्दर वजूद।
कै रवा बूदे मलक करदन सुजूद।।

अर्थ– अगर शैतान इस भेद को जानता तो उस वक़्त हज़ारों सजदे करता। अगर ज़ाते हक़ ज़ाते आदम में न होती तो फ़रिश्तों को सज्दा हर्गिज़ जायज़ न होता।

(पारा, 4, रुकू, 7, एक ग्रोह ऐसा है जिसके नफ़ूस ने हिम्मत की है इस गुमान पर कि अल्लाह के साथ गैर अल्लाह भी मौजूद है सो यह ख़्याल जिहालत यानी गुमराही है) और जो ऐसा गुमान करे कि अल्लाह और गैर अल्लाह दोनों मौजूद है वह जिहालत वह गुमराही में जा पड़ा। इसी इल्म को हिजाब अकबर (सब से बड़ा परदा) कहा गया है। दारा शुकोह ने हज़रत शाह मुहिब उल्लाह इलाहाबादी से कुछ सवालात किये थे जिनमें एक सवाल यह भी था कि वह कौन सा इल्म है जो हिजाब अकबर है? आप ने जवाब में इरशाद फ़रमाया, कि जो इल्म, आलिम और मालूम को एक
32 दूसरे से अलग बताए वह इल्म हिजाब अकबर है और जो तीनों को एक कहे वही बर हक़ है। इसलिए कि वजूद महज एक है जिसका गैर मुमकिन ही नहीं है।

हज़रत शाह न्याज़ अहमद बरैलवी-

शेर- हुस्न जानाँ जलवा गर हर शै में है!
दीद अपने में नहीं काई ज़बूँ!!

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنسَاهُمْ أَنفُسَهُمْ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝

पारा, 28 रुकू 6, और मत हो जाओ उन लोगों की तरह जो अल्लाह को भूल गए पस उनका नफ़्स ही उनसे भुला दिया गया और वह लोग हैं जो फ़ासिक़ हैं) यानी अल्लाह का भूलना खुद अपनी हक़ीक़त को भुला देना है, जिस तरह अण्डा फ़ासिक (गन्दा) हो जाता है तो उसमें बच्चा पैदा होने की सलाहियत ही खत्म हो जाती है। उसी तरह फ़ासिक़ों को मारफ़त इलाही से महरूमी हो जाती है। वह नहीं जान्ते कि अल्लाह खुद ही बशानरूह उनकी जानों में मौजूद है कुरआन में फ़रमाता है।

(वफ़ी अन्फ़ुसेकुम अफ़ला तबसेरून)

(मैं तुम्हारी जानों में हूँ क्या तुम नहीं देखते) अगर दरमियान जमीन व आसमान के ग़ैर अल्लाह होते सिवा अल्लाह के तो यक़ीनन बिगड़ जाते मालूम हुआ कि सारी कसरत वहदत है, अल्लाह की ऐन है गैर नहीं, जो मुनज़्ज़ह है क्यों कि वजूद वाहिद है।

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً ۝

(पारा 1, रुकू 4, और जब कहा तेरे रब ने फ़रिश्तों से कि तहकीक़ मैं जमीन पर अपना ख़लीफ़ा बनाने वाला हूँ) ज़ाहिर है कि अजल[1] मस्दर[2] बदो मफ़ऊल[3] है। एक

1. अजल (बनाना) 2. मस्दर (Infinitive mood) 3. मफऊल (Accusative Case)

33 मफ़ऊल लफ़्ज़ (इन्नी) (में) दूसरा मफ़ऊल लफ़्ज़ ख़लीफ़ा बनाने वाला हूँ, इसलिए कि उसका गैर तो मुमकिन ही नहीं है। यही वजह है कि पहचान के बाद अल्लाह वालों ने अनानियत (मैं) का नारा बलन्द किया है। क्योंकि वह गैरियत नहीं पाते बल्कि ऐनियत देखते हैं।

हज़रत अब्दुल कुद्दूस गंगोही-

शेर- आस्तीं बर रुख करीदी हम चू मक्कार आमदी!
बाखुदी खुददर तमाशा सूए बाज़ार आमदी!!

अर्थ- मुंह छुपा कर मक्कारों की तरह खुद ही तमाशा दिखाने वाला बन कर तमाशा दिखाने आया।

एक पावर हाऊस तारों के ज़रिया बल्बों में रोशनी बन जाता है और वह रोशनी बल्ब की अपनी नहीं होती बल्कि उसी पावर हाऊस की होती है। लिहाज़ा वह बल्ब पावर हाऊस का खलीफ़ा हुआ। क्योंकि उसी पावर हाऊस की करंट ही रोशनी की शकल में बल्ब के अन्दर मौजूद है। बल्ब अपनी मारफ़त के बाद अपने को पावर हाऊस से मिला पाएगा। और सही मानों में उस पावर हाऊस का खलीफ़ा हो जायेगा। बिलकुल यही मिसाल जात वाहिद की है कि वही बज़रिया साँस जिस्म इन्सानी में जलवागर है। यानी उसी की हयात, कुदरत, कलाम, समाअत व बसारत, इरादा और इल्म का कामिल मज़हर है। यही वजह है कि उसे खलीफ़ा लक़ब से पुकारा गया है। यूँ तो हर इन्सान ख़लीफ़तुल्लाह है मगर दरअसल वह इन्सान ख़लीफ़ा या क़ायम मुक़ाम है जिसने अपने आपको रूह पाया। और रूहुल अरवाह से मुन्तहिद हो गया।

हज़रत न्याज़ अहमद-

शेर- लिबासे बुलबशर पोशीदा मस्जूदे मलक गश्तम!
बतस्वीरे मुहम्मद हामिदो महमूद बूदस्तम!!
न्याज़ अन्दर हक़ीक़त लायज़ालो लमयज़ल हस्तम!
मगर बाईं तऐयुन नीस्तो नाबूद बूदस्तम!!

34 **अर्थ** - आदम की सूरत इख्तियार कर के खुद ही फरिश्तों से सज्दा कराया, मुहम्मद की शक्ल में हामिद व महमूद हुआ। न्याज़ हकीकत के एतिबार से बाक़ी और इस सूरत के लिहाज़ से फ़ानी हूँ।

إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُم مَّا أَنزَلَ اللَّهُ بِهَا مِن سُلْطَانٍ ۚ

(पारा, 27, रुकू, 5, अल्लाह के नाम के सिवा जितने भी नाम है वह कोरे नाम

अध्याय - 3

दुनिया की पैदाइश का सबब

जानना चाहिए कि ग़ायते तख़्लीक (पैदाइश) का सबब मारफ़त इलाही है। जिसका ज़रिया इबादत है–

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنَ

–कुरआन, पारा 27, रुकू 2. नहीं पैदा किया मैंने जिन और इन्सान को मगर अपनी इबादत के लिये।

नबी पाक ने इबादत के लिए एक शर्त इरशाद फ़रमाई है–

(हदीस पाक का अर्थ, तमाम ताअतों का सर तौहीद है।)

इसलिए कि तौहीद का उल्टा शिर्क है और इबादत बग़ैर तौहीद के नाक़िस है और मारफ़त का हासिल होना नामुमकिन है। कुरान पाक–

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذَالِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيْدًا

–पारा 5, रुकू 15, यक़ीनी अल्लाह शिर्क को माफ़ न करेगा, उसके अलावा जितने भी गुनाह होंगे जिसको चाहेगा माफ़ कर देगा।

इसलिए कि जिसने शिर्क किया वह बड़ी गुमराही में जा पड़ा।

असली मग़फ़िरत (माफी) यही है कि बन्दा अपनी जात से फ़ानी (मिट) और अल्लाह की ज़ात से बाक़ी हो जाये।

शेर– फ़िराक़े यार दोज़ख नाम दादन्द।
विसाले यार जन्नत नाम करदन्द।।

अर्थ–अल्लाह से जुदाई का नाम दोज़ख और विसाल का नाम जन्नत है।

शिर्क और लिक़ाए 'मलाक़ात' इलाही के बारे में कुरआन ने फ़रमाया– 16

فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا

–पारा 16, रुकू 3, अगर अल्लाह की मुलाक़ात का शौक़ है तो अमल स्वालेह करो और अल्लाह की इबादत में किसी को शरीक न करो–

قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَاءِ اللّٰهِ ؕ

पारा 7, रुकू 10, वे लोग बड़े घाटे में हैं जिन्होंने अल्लाह की मुलाक़ात को झुठलाया।

يَا اَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ

–पारा 30, रुकू 9, इन्सान कोशिश कर ज्यादा यक़ानी तू अब रब से मुलाक़ात करेगा।

चूँकि शिर्क तौहीद का उल्टा है और तौहीद को समझे बगैर मारफ़त इलाही का हासिल होना मुमकिन नहीं, इसलिये तौहीद को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।

सैयदिना मौला अली ने फ़रमाया–

مَنْ عَرَفَ نَفْسَهٗ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهٗ

–अपनी पहचान ही अल्लाह की पहचान है। इस क़ौल को अल्लाह वालों ने हदीस कहा है। तौहीद से ही हमको हमारी पहचान हो सकती है कि हमारी असलियत क्या है और अल्लाह से हमारा क्या रिश्ता है। पस तौहीद की चार शस्तिलाहें है। (बोल–चाल) अव्वल तौहीद शरई। (हमा अज़ओस्त) सब वही है। पस तौहीद तरीक़ती कुल्लियत पर है। मगर ग़ैरियत और ऐनियत दोनों मौजूद हैं कि इशारा (वह) का ग़ाएब पर होता है और अगर हाज़िर भी हो तो ख़ुदी मौजूद है। तीसरी तौहीद तहक़ीक़ी (हमा तुस्त) सब तू ही है। अब शिर्क जली (खुला) तो न रहा मगर शिर्क खफ़ी (छुपा) फिर भी बाक़ी है कि मैं और तू की बू आ रही है। चौथी तौहीद मारफ़त (हमा मनम) यानी सब मैं ही हूँ मेरा ग़ैर नहीं।

17

मौलाना रूम

शेर- चूँकि बेरंगी असीरे रंग शुद।
मूसा बा मूसिए दर जंग शुद।।
चूँ ब बेरंगी रसी काँ दाश्ती।
मूसिओ फ़िरऔन दारन्द आश्ती।।

अर्थ– जब बेरंगी रंग में तब्दील हुई तो मूसा ने मूसा से जंग की। और जब बेरंगी तक पहुँच हुई तो मूसा और फ़िरऔन में सुलह पाई–

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَىْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ وَّكِيْلٌ ۔

—पारा 7, रुकू 19 यही है अल्लाह परवरदिगार तुम्हारा नहीं है कोई पूजने के लायक मगर वह पैदा करने वाला हर चीज़ का पस इबादत करो उसकी और वह ऊपर हर चीज़ के कारसाज़ है। इस मफ़हूम (अर्थ) की दूसरी आयतों से साबित है कि बजुज़ माबूदियत (इबादत) ग़ैर खुदा कोई चीज़ शिर्क नहीं हो सकती पस जिस चीज़ पर हसरे तौहीद रहा उसी पर शिर्क भी मुन्हसर होना चाहिए। इसलिये कि दोनों लाज़िम व मलजूम (एक दूसरे के लिए जरूरी) है। कुछ लोगों ने शिर्क व तौहीद को कुरआन व हदीस से न समझकर ग़ैर शिर्क को शिर्क क़रार दे दिया और इस क़दर शोर मचाया कि बेचारे मुसलमान को फ़िज़ा (हवा) में साँस लेना दूभर कर दिया और अक्सर अफ़आल जवाहिर (काम) मसलन, सोम (तीजा) दहुम (दस्वाँ) चहल्लुम (चालीसवाँ) ताज़ियादारी, मीलाद व फ़ातिहा, क़याम व सलाम, उर्स समा, कबरों की ज़्यारत वग़ैरह
18 तक को शिर्क कहने से बाज़ न रहे। अफ़सोस कि एक पढ़ा–लिखा तब्क़ा कुरआन व हदीस के असली मफ़हूम को न समझकर गुमराह हो गया है और तमाम आलम को बज़ामे खुद मुशरिक जानता है और नहीं जानते कि जब तक तौहीद तहक़ीकी व वाक़ई से वाकिफ़ न होंगे, दुनियावी काम, खाना–पीना किसी से कुछ माँगना वग़ैरा–वग़ैरा सब शिर्क हो जायेगा। इसलिए कि नमाज़ में पढ़ते हैं–

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝

—पारा 1, रुकू 1, ऐ अल्लाह हम तेरी ही इबादत करते हैं और तेरी ही मदद चाहते हैं। पस मदद चाहना इबादत के वास्ते है न कि दुनियावी कामों के वास्ते।

लेकिन लोगों को इस बात की इहतियात करनी चाहिए कि बुजुर्गों की हर बात और हर काम को अपने–अपने मौक़ा पर पहचानें यानी शरीअत के अक़्वाल व अफ़आल शरीअत में और तरीक़त के तरीक़त में और हक़ीक़त की हक़ीक़त में। अगर ऐसा न करेंगे तो वहम में पड़ जायेंगे। इस वास्ते कि वही हलवा जो तबीब (हकीम) के लिए मुफ़ीद है वही मरीज़ के लिए मुहलिक, अगरचे अक़वाल (बातें) सब बुजुर्गों की एक हैं लेकिन अलग नज़र आती है। और बड़ा नुक़सान यह है कि अगर मुब्तदी होकर मुन्तही के फ़ेल (काम) की तक़्लीद (पैरवी) करेगा तो दोनों दीन से जायेगा। पस जिस तरह मरीज को लाजिम है कि वह क़ौल तबीब की पैरवी करे न कि तबीब के काम की इसी तरह हमको भी तमीज़ करना लाज़िम है।

अफ़सोस वह लोग कि जो मरतबन इलमुलयक़ीन भी नहीं रखते अपने नफ़्स की
19 हिदायत से अमरो नवाही (करने न करने का हुक्म) के बाहर कदम निकालते हैं। ऐसे लोग बुजुर्गों को बदनाम करते हैं और अपना अंजाम बद करते हैं। ग़ज़ब है कि ज़लालत (गुमराही) दुनिया में सरतापा (सर से पाँव तक) ग़र्क़ (डूबे) हैं और जहाँ कहीं दीन की बात आ गई मवह्हिद (सूफ़ी) बन गए। फ़कीरी बच्चों का खेल नहीं कि बाज़ारों में

बेगानी औरतों को तकते फिरें और घर बैठकर फ़क़ीरी का दम भरें। पनाह माँगता हूँ अल्लाह से अपने नफ़्स की बुराइयों से। लेकिन तौहीद हक़ीक़ी का समझना हर एक के लिए ज़रूरी है कि इबादत शिर्क से पाक हो और पैदाइश का मक़सद यानी मारफ़त इलाही हासिल हो। हज़रत शेख सानी शाह मुहिब उल्लाह इलाहाबादी से कुछ अलमाए ज़ाहिरी ने कहा कि तौहीद जो एक भेद है आप उसे नाअहलों के सामने पेश करते हैं यह ठीक नहीं मालूम होता। आपने जवाब में इरशाद फ़रमाया कि कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन जो बिलकुल ना अहल थे सबसे पहले उनको कलिमा तैयबा की तलकीन की गई लेकिन उन्होंने इन्कार कर दिया और इन्कार की वजह यह बताई–

أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَٰهًا وَاحِدًا إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ۝

–'पारा 23, रुकू 10, गरदाना (बनाया) मुहम्मद ने सब बुतों को इलाह वाहिद (अकेला) और यह अजीब बात है।' यानी अक़्ल के खिलाफ़ है कि हर चीज़ ऐन अल्लाह है न कि ग़ैर अल्लाह। यह कलिमा तैयबा उनके बातिल ख्याल को कि अल्लाह और ग़ैर अल्लाह दोनों मौजूद हैं और हर चीज़ ग़ैर खुदा है झुठलाने के लिए उतारा गया है। वही समझ बहुत से लोगों के अन्दर अब भी मौजूद है और पाक कलिमा को नापाक बना रखा है।

शेर- गर हमीं मकतबो हमीं मुल्ला।
कार इस्लाम खत्म खाहद शुद।।

अर्थ– अगर ऐसा ही मदरसा और ऐसे ही मौलवी हैं तो इस्लाम का काम तमाम हो चुका।

इसी मौजूदा ज़माना के बारे में जब कि लोग ग़लत समझ रखते हैं और शिर्क व तौहीद को नहीं समझते।

20. हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम ने पेशीन गोई फ़रमा दी है–

لا يبقى الإسلام إلا اسمه لا يبقى القرآن إلا رسمه

–(हदीस पाक का अर्थ, इस्लाम नाम के लिए रह जायेगा और कुरआन रस्मी रह जायगा)। हासिल यह कि लोग कुरआन व हदीस के ज़ाहिरी मानी लेंगे और कलिमा (लाइलाहा इल्लिल्लाह) के असली मफ़हूम और दूसरी आयतों को न समझेंगे।

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

शाह मुहिब उल्लाह फ़रमाते हैं कि इल्म, आलिम और मालूम तीनों एक हैं और जो इल्म इसके खिलाफ़ हो वह हिजाब अकबर (बड़ा पर्दा) है यानी मारफ़त इलाही के लिए रुकावट है।

हज़रत मुही उद्दीन इब्न अरबी अपनी किताब फुसूसुल हकम में फ़रमाते हैं–

فَمَنْ قَالَ باالاشفاع كان مشركا   وَمن قال باالافراد لاموحدا

अर्थ– जो हक़ और खल्क़ को दो कहता है मुशरिक है और जो दोनों को एक कहता है मवहहिद है।

शेर- यह कुल यक रंग बेरंगी है कसरत जिसको समझे हो।
यह है यक कागजे बेरंग पर तहरीर की सूरत।।

हज़रत मौलाना रूम

शेर- जुज़ वजूदे मुतलक़ो हसतिए पाक।
आँचे आयद दर ख्यालत हस्त खाक।।

तू कुजाओ मन कुजा आलम कुजा।
हस्त यक नूरे मुनज़्ज़ा ऐ फ़ता।।

दर हज़ाराँ आईना यक सूरतस्त।
वज़ तकस्सुर हम खिरद दर हैरतस्त।।

कसरते आईना आमद अज़ कुजा।
ई ज़े असमाए सिफ़ातस्त ऐ क्या।।

अर्थ- हस्ती पाक और मतलक़ के सिवा जो कुछ तेरे ख्याल में आता है झूठ है। तू कहाँ, मैं कहाँ, दुनिया कहाँ, ऐ नवजवान सिर्फ़ एक बेरंग नूर है। हज़ारों आईनों में एक ही सूरत है लेकिन आईनों की ज़्यादती से अक़्ल हैरान है। आईनों की ज़्यादती कहाँ से आई, ऐ शख्स यह सब तेरे नाम और सिफ्तें है।

❖ ❖ ❖

अध्याय-4

कलिमए तौहीद का अर्थ

जानना चाहिए कि कलिमा ईमान का सबसे बड़ा रुक्न 'उसूल' है। इस्लाम की असल 'बुनियाद' है। अल्लाह पाक ने हर नबी को यही कलिमा हिदायत फ़रमाया है। आज जो तफ़रक़ा उलमाए दीन में पड़ गया है वह यही है तौहीद को नहीं समझा। सबसे पहले कलिमाए पाक के मानी पर ग़ौर करना चाहिए। कलिमा शरीफ़ के मानी शरीअत के एतिबार से–

–(अर्थ, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं) कलिमा के मानी हक़ीक़त के एतिबार से।

–(अर्थ, अल्लाह के सिवा कोई मौजूद नहीं) कलिमा शरीफ़ के मानी व एतिबार मारफ़त–

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

–(अर्थ, मेरे सिवा कोई मौजूद नहीं) 'लाइलाह इल्लल्लाह 'कलिमा' में (ला) नफ़ी (नहीं) इस्म जिन्स है जो सिर्फ (इलाह) माबूद की नफ़ी नहीं बल्कि तमाम जिन्स इस्म वह भी ग़ैर अल्लाह की नफ़ी करता है। यानी कोई शै (चीज़) ग़ैर अल्लाह नहीं बल्कि ऐन अल्लाह है।

मौलाना रूम फ़रमाते हैं–

शेर- तेग़ ला दर क़त्ले ग़ैरे हक़ ब्रांद।
वन निगर ज़ाँ पस कि बाद अज़ ला चे माँद।।
माँद इल्लल्लाह बाक़ी जुमला रफ़्त।
शाद बाश ऐ दिल किशिर्कत सोख्तो रफ़्त।।
खुल हमूँ बूद अव्वलीनो आखिरीं।
शिर्क जुज़ दीदए अहवल मबीं।।

अर्थ- ला (नहीं) की तलवार ग़ैर अल्लाह पर चला दे, फिर ग़ौर कर कि ला के बाद क्या बचा, सिर्फ़ अल्लाह बचा और बाक़ी मिट गया, ऐ दिल खुश हो कि शिर्क जाता रहा खुद वहीं अव्वल और आखिर था, दो देखने के सिवा और कुछ शिर्क नहीं।

(ला) नफ़ी जिन्स इस्मो खबर को चाहता है। तो इस्म अल्लाह है और खबर उसकी ग़ैर इलाह है। पस ग़ैर इलाह मस्लूब (सबब) हो गया। यानी कोई इलाह गैर

अल्लाह नहीं है बल्कि ऐन अल्लाह है। माँद इल्लल्लाह (अल्लाह रहा) खबर अस्बात (होना) है। बाक़ी जुम्ला रफ़्त (फ़ानी हो गया) नफ़ी। पस मालूम हुआ कि कलिमए तैयबा बातिल के रद (झुठलाने) के वास्ते उतरा है। इसलिए कि कुफ़्फार व मुशरिकीन यह नापाक गुमान रखते थे कि हर चीज़ ग़ैर खुदा है और खुदा खुद फरमाता है कि कोई शै ग़ैर खुदा नहीं बल्कि ऐन खुदा है। पस कलिमये तैयबा ने इस नापाक गुमान को बातिल और रद कर दिया। क्योंकि वजूद वाहिद है, दो देखना ही शिर्क है। कि अल्लाह भी है और ग़ैर अल्लाह भी।

रसूल मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बाद एलान नबूवत कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन मक्का की एक जमाअत पर इसी कलिमा तैयबा को पेश फरमाया। उस जमाअत में अरबी ज़बान के बड़े–बड़े माहिरीन मौजूद थे जो अरबी ज़बान और उसके क़वाइद व ज़वाबित (ग्रामर) से बखूबी आगाह थे और अहले ज़बान होने की वजह से आज के अरबीदाँ तब्क़ा से ज्यादा अरबी जानते थे। नबी करीम ने उनसे सवाल फ़रमाया–

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

–(पारा 25, रुकू 7. तुम लोग बताओ आस्मानों और ज़मीनों को किसने पैदा किया)। मुशरिकीन ने जवाब दिया–

لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۝

–(पारा 25, रुकू 7. अल्लाह ग़ालिब और इल्म वाले ने पैदा किया) उसके बाद हुजूर अकरम ने फरमाया कि जब अल्लाह ही को खालिक़ और उसके सिवा हर शै को मख़लूक़ जान्ते हो तो एक वाहिद खालिक़ को छोड़कर हज़ारों बुतों को क्यों पूजते हो। उन्होंने जवाब दिया–

مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ۝

–(पारा 23, रुकू 15 हम नहीं पूजते हैं इनको मगर यह कि यह हमको अल्लाह से मिला देंगे और हमारे सिफारशी हो जायेंगे)–

اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ

–(पारा 23, रुकू 15 जब उनसे कहा कहो लाइलाहा इल्लल्लाह तो उन्होंने इन्कार कर दिया) जब हुजूर पाक ने उनसे इन्कार की वजह पूछी तो जवाब दिया।

–(पारा 23 रुकू 10 आपने हमारे सब बुतों को एक वाहिद खुदा बना दिया और तहक़ीक यह एक अजीब बात है) यानी यह कि तमाम बुत नहीं है ग़ैर खुदा बल्कि

ऐन खुदा और यह कुल कसरत वहदत है इस बात ने हमको हैरत में डाल दिया है कि कुल एक कैसे हैं। इसलिए हमको कलिमा तैयबा पढ़ने से इंकार है। अहले जबान होने की वजह से उन्होंने कलिमए तैयबा के जो मानी समझे थे वही मानीं सही है। कि नहीं है कोई शै ग़ैर अल्लाह मगर ऐन अल्लाह। धोखा यह हुआ कि ज़ात वाहिद बेरंग है और उस बे रंगी के दरया से मुख्तलिफ़ सूरतों शक्लों की मौजें पैदा हुई है वह तो दिखाई देती है, मगर जात बेरंग जो निहायत लतीफ़ है दिखाई नहीं देती। इसीलिए तमाम तऐयुनात (हदें) अलग–अलग मालूम हो रहे हैं हालाँकि वे सब एक हैं दूसरे से वैसे ही मिलें हैं जैसे कि दरिया की लहरें दरिया से मिली हैं और वे सब ऐन दरिया हैं न कि ग़ैर दरिया। इसी तरह दरियाये बे चूनी से सूरतों की लहरें बरआमद हुई हैं जो कि गैर हक़ नहीं ऐन हक़ है।

शेर- ज़े दरया मौज गूना गूँ बर आमद।
ज़े दरयाये बेरंगी बरंगे चूँ बर आमद।।

अर्थ- जिस तरह से तरह–तरह की मौजें पैदा हुयीं उसी तरह दरियाये बेरंग से सूरतें पैदा हुयीं।

24 अगर कलिमए तैयबा के यही मानी होते कि अल्लाह और ग़ैर अल्लाह दोनों मौजूद हैं और उन दोनों में महज़ अल्लाह माबूद है और बाक़ी सब मख्लूक़ तो वह लोग हर्गिज़ कलिमा पढ़ने से इंकार न करते। इसलिए कि वह बुतों को सिफ़ारशी और खुदा रसीदा (पहुँचे हुए) समझते थे, न कि माबूद हक़ीक़ी अल्लाह को वाहिद और ख़ालिक़ तो पहले से ही जानते थे और उसके सिवा हर चीज़ को मख्लूक़। पस मुही उद्दीन इब्न अरबी के क़ौल के मुताबिक जो हक़ और खलक़ को दो जाने मुशरिक है और जो दोनों को एक कहता है मवहहिद (मोमिन) है।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अब पूरे कलिमए तैयबा के असली मफ़हूम (अर्थ) को समझना चाहिए। यह कलिमा कहा गया है जिसमें एक ही खबर होनी चाहिए न कि कलाम जिसमें एक से ज्यादा की खबर होती है। यह बात साबित हो चुकी है कि (लाइलाहा इल्लल्लाह) का असली मफ़हूम यही है कि अल्लाह का ग़ैर मौजूद नहीं है लिहाजा मालूम हुआ कि अल्लाह मौसूफ़ (जिसकी तारीफ़ की जाये) और मुहम्मद रसूलुल्लाह उसकी सिफ़त। लिहाज़ा अब कलिमए तैयबा की यह तशरीह (खुलासा) हुई कि कोई शै मौजूद नहीं है मगर अल्लाह जो बशान तश्बीह (मुहम्मद) तंज़ीह नुमा (खुदा नुमा) है जैसा कि खुद आँहज़रत ने फ़रमाया कि–

اَنَا مِنْ نُوْرِ اللّٰهِ وَكُلُّ خَلَايِقِ مِنْ نُوْرِیْ

—'हदीस पाक का अर्थ, मैं अल्लाह के नूर से हूँ और कुल आलम मेरे नूर से है' ज़ाहिर है कि नूर में जुदाई नामुमकिन है लिहाजा कोई तऐयुन (हद) अल्लाह से जुदा नहीं बल्कि मिली हुई है। जैसे लहरें दरिया से जुदा और अलग नहीं होती। पस मालूम हुआ कि मुहम्मद (तारीफ़ किया गया) जो रसूलुल्लाह (यानी अल्लाह की खबर रखने
25 वाले) सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के ऐन हैं गैर नहीं। अल्लाह साहबे जलाल है और जलाल से जमाल ज़ाहिर हुआ जिसे आलमे लाहूत या हक़ीक़ते मुहम्मदिया कहते हैं। वह आफ़्ताब जमाल इस क़दर रोशन था कि उससे 18 हज़ार किरनें फूटीं। वहीं, 18 हज़ार आलम कहलाए वही हक़ीक़तें मुहम्मदिया मुतल्सम बशक्ले बशरी (इन्सारी सूरत में) हो रसूल की शान में अरब में ज़ाहिर हुई। जैसा कि हुज़ूर पाक ने खुद फ़रमाया—

—मैं बिला (मीम) का अहमद और बिला (ऐन) का अरब हूँ। मेरा देखना अल्लाह का देखना है।

मौलाना. रूम फ़रमाते हैं

शेर- ने ने कि हमूँ बूद कि मीआमद वमीरफ़्त हरक़रने कि दीदे।
ताआक़बत आँ शक़्ल अरब वार बर आमद दाराये जहाँ शुद।।
रूमी सुखने कुफ़्र न गुफ्तस्त व नगोयद मुनकिर मशौ बज़ातश।
काफ़िर शवद आँकर कि बइंकार बर आमद मरदूदे जहाँ शुद।।

अर्थ- नहीं नहीं वही है कि हर ज़माना में आता और जाता है। आख़िर में अरबी सूरत इख़्तियार करके आया और दुनिया का बादशाह हुआ। रूमी कुफ़्र का जुमला नहीं कहता है, इन बातों का इंकार न करो। जो इंकार करे वह काफ़िर है और दुनिया का मरदूद हो गया।

हज़रत. शाह न्याज अहमद बरैलवी—

शेर- हक़ अन्दर शान तश्बीही मुहम्मद नाम खुद खाँदा।
मुहम्मद गैर हक़ न बुवद बहुक्म जौके इरफ़ानी।।

अर्थ- अल्लाह ने खुद सूरत की शान में अपना नाम मुहम्मद रख लिया मारफ़त के ज़ौक से मुहम्मद अल्लाह के गैर नहीं।

❖ ❖ ❖

अध्याय-5

तौहीद का सुबूत कुरआन से

هُوَالْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْم

26 पारा, 27, रुकु 17, वही अल्लाह ही अव्वल है वही आखिर है वही ज़ाहिर है वही बातिन (छुपा) है और वही हर शै का अलीम (जान्ने वाला है) मालूम हुआ कि ग़ैर मौजूद नहीं है और हर शै उसके इहातए इल्म (जानकारी) में है उसी तरह जैसे पानी के इलम में बरफ़ या ज़र (सोना) के इलम में ज़ेवर।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ

पारा, 14 रुकू 6, नहीं पैदा किया हमने ज़मीन व आस्मान और जो उसके बीच में है मगर साथ हक़ के) यानी यह कि हर शै की हक़ीकत खुद ज़ात ही है कि उसी से पैदा हुई हैं लिहाज़ा हर शै ऐन हक़ है न कि ग़ैर हक़। हज़रत मगरबी फ़रमाते हैं-

शेर- दफ़्तरे हुस्न बुताने सरा ब नज़र मी आरभ!
अज़ तो दर हर वरक़े नामों निशाँ मी बीनम!!

अर्थ- जब मैं दुन्या की हसीनों पर नज़र डालता हूँ तो हर एक में तेरा ही नाम व निशान देखता हूँ।

سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِى الْاٰفَاقِ وَفِىْٓ اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ الْحَقُّ

(पारा 25, रुकू 1, हम जल्द दिखा देंगे उनको अपनी निशानियाँ तमाम आलम में और उनकी जानों में यहाँ तक कि ज़ाहिर हो जायेगा उनके वास्ते कि यह हक़ है।) मालूम हुआ कि अल्लाह ही पर ग़ैर अल्लाह का धोखा हो गया है जब कलिमाए तैयबा का असली मफ़हूम समझ में आ जायेगा तो खुद बखुद यह भेद खुल जायेगा कि अल्लाह ही है जो तंज़ीह है वही बशान तश्बीह ज़ाहिर है।

हज़रत मगरबी-

6 **शेर-** मानिये हुस्न तू जलवए जाँ मी बीनम!
अक्स रुख़्सार तू दर जामे जहाँ मी बीनम!!

अर्थ- तेरे हुस्न का जलवा जान में देखता हूँ, और दुनिया के हर तऐयुन में तेरे चेहरे का अक्स पाता हूँ।

فَاَيْنَمَا تُوَلُّوفَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ

(पारा 1, रुकू 14, पस जिधर मुँह करो उधर अल्लाह का चेहरा है) मालूम हुआ कि मखलूक अल्लाह का ग़ैर नहीं बल्कि ऐन है।

खाजा अजमेरी फ़रमाते हैं-

शेर- चेह जाये बादा व जाम व कुदाम साक़ी हस्त!
खमोश बाश मुईन दम मज़न हमा ओस्त!!

अर्थ- कहाँ शराब और प्याला, कहाँ साक़ी है, ऐ मुईन खामोश हो, दम न मार सब वही है।

رَبَّنَا مَاخَلَقْتَ هٰذَابَاطِلًا

पारा-4, रुकू-11 (ऐ हमारे परवरदीगार तूने बातिल नहीं पैदा किया) हुजूर पाक ने बातिल की तश्रीह में फ़रमाया कि ग़ैर अल्लाह को (मासिवल्लाह) बातिल कहते हैं। पस मालूम हुआ कि मखलूक ग़ैर उल्लाह नहीं ऐन अल्लाह है।

اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوْبَلٰى شَهِدْنَا

पारा-9, रुकू 12 (क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ ? कहा हाँ, गवाह हुए हम) अल्लाह तबारक व तआला ने रूहों (जानों) से सवाल किया, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? चूँकि उस वक्त रूहें (जानें) बेजिस्म के थीं और अपने को रूहुल अरवाह यानी अल्लाह से मुन्तहिद पाती थीं। जैसे कि लहरें दरया से अपने को मुन्तहिद पाती हैं। रूहें अपने और ज़ात के दरमियान हिजाब (परदा) न पा कर (गवाह) शाहिद थीं कि हम फ़ानी हैं और अल्लाह ही बाक़ी है। अल्लाह की अमानत यानी ज़ात की अमीन थीं न कि ख़ाइन (ख़ियानत करने वाली) शिर्क, दुई, खुदी या शैतनत न थी। अपना इन्कार और अल्लाह का इक़रार था, सायल व मसऊल (पूछने वाले जवाब देने वालों) में ऐनियत थी न कि गैरितयत।

28 लेकिन रूहों को तअल्लुक जिस्म से हो जाने के बाद उनको धोखा हो गया और अपनी खुदी को अलग क़ायम कर लिया और अल्लाह को अपने से खारिज (बाहर) और अपना ग़ैर समझ बैठीं। हालाँकि वही खुदी जो खुदा की थी वही यहाँ भी मौजूद थी। जब हिजाब (बुर्का) जिस्मानी ओढ़ लिया तो नशए बेखुदी जो बला (हाँ) कहते वक्त मौजूद था उतर गया और शिर्क के मर्ज़ में मुबतिला हो गई। अल्लाह पाक ने इसी बात

की तंबीह के लिए जब रूह को क़ालिबे आदम में दाखिल फ़रमाया तो तमामी फ़रिश्तों को आदम के लिए सज्दे का हुक्म फ़रमाया। ताकि रूहें अपनी असलियत को फ़रामोश न कर दें (भूल न जायें) और उन्हें यह बावर (यकीन) हो जाए कि वही मस्जूद मलाइक है। रूह अल्लाह की ऐन हैं न कि ग़ैर, वरना अल्लाह अपने ग़ैर को कभी सज्दे का हुक्म न फ़रमाता।

हज़रत मौलाना रूम-

शेर- गर न बूदे जाते हक़ अन्दर वजूद!
के रवा बूदे मलक करदन सुजूद!!

अर्थ- अगर जात हक़ आदम के वजूद में मौजूद न होता तो फ़रिश्तों को उसका सज्दा कब जायज होता।

وَيَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الرُّوحِ، قُلِ الرُّوحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّى وَمَا اُوْتِيتُم مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيلاً۔

पारा-15, रूकू-10, रुह के बारे में लोग आपसे सवाल करते हैं फ़रमा दो कि रूह अल्लाह का अम्र (हुक्म) है और तुमको इस बारे में थोड़ा इल्म दिया गया है) वाज़िह हो कि अल्लाह ने रूह यानी जान को अम्ररब्बी (रब का हुक्म) फ़रमाया। अम्र की दो किस्में हैं। एक अपने से ग़ैर पर जो बशान कलाम (गुफ्तगू) होता है और कलीम (बात करने वाले) से मुनफ़क यानी जुदा हो जाता है। दूसरे अपनी ज़ात पर जो बशान ख्याल या इरादा होता है और आमिर (हुक्म देने वाले) से जुदा नहीं होती। जब यह मालूम हो गया तो जान्ना चाहिए कि अल्लाह का गैर तो मौजूद ही न था जैसा कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया-

كَانَ اللّٰهُ لَمْ يَكُنْ مَعَهٗ شَيْءٌ اَلْاٰنَ كَمَا كَانَ

29 (हदीस पाक का अर्थ, अल्लाह अकेला मौजूद था और उसके साथ कोई शै मौजूद न थी और वह जिस शान से पहले था वैसे ही आज भी मौजूद है) लिहाजा जाहिर है कि अम्रेरब्बी (अल्लाह का हुक्म) खुद अपनी ही जात पर बशान ख़याल या इरादा हुआ। और आमिर (हुक्म देने वाला) अम्र (हुक्म) और मामूर (जिस पर हुक्म किया गया) तीनों एक हैं। हासिल कलाम यह कि रूहें इन्सानी ज़ात बहत (ज़ात इलाही) की ऐन है और इसीलिए मारफ़त इलाही अपनी मारफ़त पर मुन्हसर है जैसा कि रसूल अल्लाह ने फ़रमाया-

مَنْ عَرَفَ نَفْسَهٗ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهٗ

(हदीस पाक का अर्थ, अपनी पहचान अल्लाह की पहचान है)।

हज़रत मग़रबी फ़रमाते हैं-

शेर- तालिबे हक़ जाँ शवद जानस्त हक़!
तालिबे जाँ शौरे बिगीर अज़मा सबक़!!

अर्थ- हक़ की तलबगार जान है और जान ही हक़ है जान के तलबगार बनो और मुझसे सबक़ लो।

जब हमको अपनी मारफ़त (पहचान) हासिल होगी तो हम अपनी जान को रूहुल अरवाह यानी अल्लाह से मुतहर्रिक पाएँगे। और मालूम होगा कि जिस्म जामिद (ठहरा हुआ) है और रूह सुवहर्रिक (हरकत करने वाली) है और अल्लाह के इस्म (नाम) मुरीद (इरादा करने वाला) व क़लीम (कलाम करने वाला) व सभी (सुन्ने वाला) व बशीर, (देखने वाला) की मजहर है और जब यह कैफ़ियत हासिल हो जाती है तो जिस्मों जान एक हो जाते हैं।

हज़रत मौलाना रूम फ़रमाते हैं।

शेर- तन ज़े जानो जाँ ज़े तन मस्तूर नीस्त!
लेक कसरा दीदे जाँ दस्तूर नीस्त!!
सूरतश बर! खाको जाँ दर ला मकाँ!
लामकाँ बरतर ज़े वहमे सालिकाँ!!

अर्थ- बदन से जान और जान से बदन छुपा नहीं है लेकिन किसी को जान के देखने (पहचान) का तरीक़ा ही नहीं मालूम है। सुरत के एतिबार से तू जमीन पर है और तेरी जान लामकान में है। लामकान सालिकों के वहम से बहुत आला है।

हज़रत खाजा अजमेरी-

शेर- तन मियाने खल्क़ व जाँ निज़्दे खुदावन्दे जहाँ!
तन गिरफ़तारे ज़मीं व रूह दर हफ़्त आस्माँ!!

अर्थ- तन खल्क़ के दरमियान और जान खुदा के नज़दीक तन, ज़मीन पर और रूह सात्वें आसमान पर।

मालूम हुआ कि इन्सान सूरत के इतिबार से तो महदूद है और रूह के एतिबार से ला महदूद है।

فَاعْتَبِرُوْ يَآ اُوْلِى الْاَبْصَارِ ه

(पारा, 28, रुकू 4, ऐ आँख वालो एतिबार कर लो) किस चीज़ का एतिबार कराया जा रहा है जबकि अल्लाह का ग़ैर मौजूद ही नहीं है और वही अव्वल व

आख़िर, ज़ाहिर व बातिन है तो उसी को हर शै में देखना चाहिए।

हज़रत फ़रीद उद्दीन अत्तार फ़रमाते हैं-

शेर- चश्म ब कुशा कि जलवए दिलदार!
मुतजल्लास्त अज़ दरो दीवार!!

अर्थ- आँख खोलो कि दिलदार का जलवा हर दरो दीवार से रोशन है।

وَمَنْ كَانَ فِي هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ۝

पारा-15, रुकू-8, (और जो दुनिया में अन्धा है पस वह आखिरत में अन्धा है और खोया हुआ है राह) यानी जो दुनिया में मारफ़त इलाही से महरूम रहा वह आख़िरत में भी दीदार इलाही से महरूम रहेगा। इसलिए कि हर शै में वही जाहिर तर है और जब हमारी आँखें यहाँ बन्द रहीं तो वहाँ भी बन्द रहेंगी।

शेर- आँख वालो देख लो पहचान लो!
कल वही देखेगा जिसने आज सूरत देख ली!!

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ۝

31 (पारा-29, रुकू-19, तहक़ीक़ आया है औक़ात दहर से इन्सान पर एक ऐसा वक़्त कि यह था तो मगर शै मज़कूर न था।) यानी अरवाहे इन्सानी बहरे अमाए ज़ात में इस तरह मुदग़म (मिली) थीं जिस तरह साकिन दरिया में मौजें। यानी यह कि ऐ इन्सान तू मौजूद था लेकिन बशाने रूह, तुझमें और मुझमें कोई फ़र्क़ न था। यानी तेरी खुदी न थी। लेकिन जब जिस्म से तअल्लुक़ पैदा करा, दिया गया तो तुझे धोका हो गया और तू अपने को बजाये रूह के जिस्म यक़ीन करने लगा।

हज़रत मौलाना रूम-

शेर- ईं कि मी बानी ख़िलाफ़े आदमस्त!
नीस्तईं आदम गिलाफ़े आदमस्त!!
ऐ बिरादर तू हमीं अन्देशई!
मा बक़ी तू उस्तखानो रेशई!!

अर्थ- यह जो देखता है आदम नहीं है यह आदम का खोल है आदम नहीं, ऐ भाई तू वही ख्याल है उसके अलावा जो कुछ है, हड्डी और गोश्त पोस्त है।

आदमियत का इन्लाक़ रूह पर है जिस्म पर नहीं और रूह अल्लाह से मुनफ़्फ़क (जुदा) नहीं बल्कि हक़ीक़त में एक है।

وَطَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۝

ही नाम हैं जिनको तुमने और तुम्हारे बाप दादों ने गढ़ लिए हैं अल्लाह ने उनकी कोई दलील नहीं उतारी) यानी यह कि तमामी निशानियाँ शुयून उसी की हैं जिसको तुमने उससे जुदा समझ लिया है और अपनी समझ से उनका नाम रख लिया है। हर जगह हर शान में वही मौजूद है। हर चीज़ उसी की मज़हर है कोई चीज़ उसकी गैर नहीं। हज़रत मुईन उद्दीन अजमेरी फरमाते हैं कि जब अल्लाह ही हर जगह मौजूद है तो दूसरी चीज किस जगह मौजूद हो सकती है। लिहाज़ा गैर अल्लाह न मौजूद था, न है, न होगा, न हो सकता है। हज़रत फ़रीद उद्दीन अत्तार। (चुहक़ हरजा बुवद मन दर कुजायम) जब हक़ ही हर जगह मौजूद है तो फिर मैं कहाँ हूँ। यानी हर शान में वही मौजूद है कोई उसका गैर नहीं।

हज़रत शाह न्याज़ अहमद-

शेर- ऐ तालिबाँ, ऐ तालिबाँ मन बा शुमा हर जास्तम!
हम ज़लवागर दर दीदहा हम मुज़मिरे दिल हास्तम!!

अर्थ-ऐ तलिबो मैं तुम्हारे साथ हर जगह हूँ, आँखों और दिलों में मैं ही समाया हुआ हूँ।

وَيَسْتَنْبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ قُلْ اِىْ وَرَبِّىْٓ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ؕ

35 (पारा 11, रूकू 10, ऐ मुहम्मद आपसे पूछते हैं क्या यह हक है, कह, हाँ क़सम है मेरे रब की यह हक़ है) यानी हक़ ही हक़ है ग़ैर हक़ मौजूद नहीं और न था।

(पारा 15, रुकू 2, पढ़ तू अपनी किताब काफ़ी है तेरी जान ही आज के रोज़ तेरे ऊपर हिसाब लेने वाली) ऐ इन्सान अपनी हक़ीक़त पर गौर कर कि तू कौन है? तो तुझे मालूम होगा कि तू रूह है और रूहुल अरवाह से मिला हुआ है, तेरी ज़ात ज़ाते इलाही से जुदा नहीं। और जिसे तू अपना हिसाब लेने समझा हुआ है वह बादल मारफ़त (अपने को पहचानने के बाद) तेरी ही ज़ात निकलेगी। यानी तू खुद अपने आपका हिसाब लेने वाला होगा। पस जिसने पहचान लिया अपने आपको उसने पहचान लिया अल्लाह को, इसलिए कि अल्लाह मिस्ल आईना साज़ के है और सूरते इन्सान आईना, और रूह अक्स की तरह है। आईना साज़ यानी अल्लाह अपने अक्स यानी रूह से कह सकता है।

शेर- ऐ मेरे दिले शैदा जो तू है वही मैं हूँ।
फिर किस लिये है परदा जो तू है वही मैं हूँ।।
आईना बनाया फिर अक्स से यूँ बोले।
क्यों बात नहीं करता जो तू है वही मैं हूँ।।

اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَىْءٍ مُّحِيْطٌ ۧ

पारा 25, रुकू 1, (खबरदार हो वह यानी अल्लाह हर चीज को मुहीत है) जिस तरह पानी ओला को मुहीत है और कह सकता है कि (अना बिका मुहीतुन) कि मैं तुझको मुहीत हूँ इसलिये कि मुहीत और मुहात (घेरने वाली और घेरे जाने वाली) दो चीजें नहीं बल्कि एक हैं इसी तरह अल्लाह हर शै को मुहीत है।

وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ

पारा 27, रुकू 17, (जहाँ तुम हो वहीं मैं हूँ) जिस तरह सोना गहने से कह सकता है कि (अना मअका ऐनमा कुन्तुम) मैं तेरे साथ हूँ जहाँ तू है यानी दोनों में
36 ग़ैरियत नहीं बल्कि ऐनियत है। इसी तरह बन्दे और मौला के दरमियान ग़ैरियत नहीं बल्कि ऐनियत है।

हज़रत शाह न्याज़ अहमद बरैलवी-

शेर- बसा मेरी आँखों में तू इस क़दर।
कि तुझ बिन नज़र कुछ न आया मुझे।।

وَفِيْ اَنْفُسِكُمْ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ

पारा 26, रुकू 18, (मैं तुम्हारे नफ़्स में हूँ क्या तुम नहीं देखते) अल्लाह हमारे नफ़ूस (जानों) में इस तहर है जैसे रूई कपड़े में। रूई कपड़े से कह सकती है। (अना फ़ी नफ़सिका अफ़ला तुबसीरून) मैं तेरे अन्दर ही मौजूद हूँ क्या तू मुझे नहीं देखता। बिल्कुल इसी तरह हम अल्लाह के नूर से बने हैं और हममें और उसमें ऐनियत है।

हज़रत मौलाना रूम-

शेर- परदा बरदार व बरहना गो कि मन।
मी न गुन्जम बा सनम दर पैरहन।।

अर्थ- परदा उठा और मुझसे बेपरदा बात कर क्यों कि मैं महबूब के साथ किसी लिबास में नहीं रह सकता।

وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ

पारा 26, रुकू 16, (हम तुम्हारी शह रग (जान की रग) से ज्यादा तुम्हारे क़रीब हैं) जैसे दरया बुलबुला या लहर से ज्यादा उसके क़रीब है यानी दरया ही बुलबुला या लहर की सूरत में ज़ाहिर है। पस दरया को यह हक़ हासिल है कि वह लहर से कहे (अना अक़रबु एलैका) मैं तुझसे ज्यादा तेरे करीब हूँ। पस इस आयत से बन्दे और मौला के दरमियान इत्तिहाद साबित हुआ।

शेर- ज़ेवर में तू ज़र ढूंढ ख़ुदा ढूँढ खुदी में।
व फ़ी अनफुसिकुम क्या नहीं कुरआन में आया।।
क्यों इल्म पढ़ा तूने क्या नहनु से समझा तू।
अक़रब ही न समझा तू अल्लामा गरी क्यों है।।

37 ऐ आलिमे नादाँ तू बरीं इल्म गुरूरी।
नज़दीक व माबूद नई कलकि तू दूरी।।
दर दिल न कुनी ज़ाहिद गर उलफ़ते मुर्शिद।
हक़ रा न शनासी तू अज़ीं कन्ज़ो क़दूरी।।

अर्थ- ऐ नादान आलिम तुझे इसी इल्म पर घमंड है तू माबद के क़रीब नहीं बल्कि दूर है। ऐ जाहिद जब तक तेरे दिल में मुर्शिद की मुहब्बत न होगी तू इन किताबों (कन्ज़ो क़दूरी) से हक़ को न पहचानेगा।

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِىٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ۝

पारा 30, रुकू 20, (क़सम है अन्जीर की, जैतून की, तूर पहाड़ की और काबा शरीफ़ की कि तहक़ीक़ इन्सान को हमने बेहतरीन सूरत पर बनाया) अल्लाह पाक ने इन चार चीजों की क़सम क्यों खाई है। यक़ीनन इन्सान की पैदाइश से इन चीजों की निस्बत ज़रूर है। लिहाज़ा इनमें से हर एक चीज़ की अलग-अलग तशरीह (खुलासा) करना जरूरी है।

(1) अन्जीर- इसके बीज को बो देने के बाद पौदा, फिर पेड़ और फिर उसी पेड़ में फल आ जाता है और उसमें वही बीज जो बोया गया था मौज़ूद हो जाता है। तो अब वही फल उस बीज का क़ायम मुक़ाम या खलीफ़ा है। अगर वह फल अपने को पहचान ले तो उसमें और बीज में ऐनियत होगी। इसी तरह अल्लाह के नूर से नूर मुहम्मदी और उससे तमाम आलम जो पेड़ के मिस्ल है और हज़रत इन्सान उस पेड़ का फल है और रूहे इन्सानी मिस्ल बीज के है यानी नूर इलाही है। इसलिए इन्सान उस ज़ात वाहिद का खलीफ़ा है। मस्जूद मलाइक, अमानत का अमीन, वही रूह जो नूर इलाही है हज़रत इन्सान के पास अमानत है।

शेर- क़तरे में दरया समा क़तरे का क़तरा रहा!
बल्ब समाई तेरी उफ़ रे समुन्दर के चोर!!

हज़रत मगरबी-

शेर- तू बमानी जुम्ला आलमे!
हर दो आलम तुई बिन्गर दमे!!

अर्थ- ऐ इन्सान तू तमाम आलम की जान है, दोनों आलम खुद तू ही है ज़रा देख तो।

इसीलिए अल्लाह ने अन्जीर की क़सम खाई कि जिस तरह अन्जीर देखने में जुज़ है लेकिन उसमें समूचा पेड़ समाया हुआ है उसी तरह इन्सान देखने में तो जुज़ है मगर हक़ीक़त के एतिवार से जुज़े कुल नुमा है।

(2) ज़ैतून- इसका तेल माद्दी और मैला है। (कसीफ़) लेकिन अगर चिराग़ में बत्ती के ज़रिये उसे रोशन कर दिया जाए तो उसकी कसाफ़त (मैल) दूर होकर निहायत ही लतीफ़ (पाक) रोशनी देता है। माद्दियत खत्म होकर नूरी हो जाता है। इसी तरह अगर इन्सान को सच्ची तलब पैदा हो जाये और किसी शेख कामिल के ज़रिया इसको मारफ़त की दिया सलाई लगा दी जाये तो वह बजाए माद्दा के अपने को नूरी पाएगा और रूह जिस्म, जिस्म रूह का मज़हर हो जायेगा। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया।

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰهَا۔

पारा 30, रुकू 16, जिसने अपना तज़किया कर लिया, यानी बजाये जिस्म के रूह पाने लगा वह अल्लाह को पा गया, यानी जिस्मानी क़ैद से आज़ाद हो गया, और जिसने अपने आप को गर्द आलूद कर लिया यानी अपने को माद्दा (जिस्म) ही यक़ीन कर रखा वह ना मुराद रहा और पैदाइश के मक़्सद को पूरा न किया यानी मारफ़त हासिल न की।

(3) तूरे सीनीन- हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने अल्लाह के देखने की आरज़ू की मगर (लन तरानी) तुम मुझे नहीं देख सकते की आवाज ही सुनते रहे। जब आपका शौक़ बढ़ता ही गया और बार-बार देखने की तमन्ना करते ही रहे तो जवाब मिला (फ़ारिक़ नफ़सिका व तआल) अपनी खुदी से जुदा हो और आ जाओ। मूसा ने खुदी के परदे को चाक (फाड़ा) किया तो अल्लाह के फ़रमान के बमोजिब (खर्रा मूसा सइक़ा) मूसा पर ग़शी छा गई और वहीं से उन्हीं की ज़बान से आवाज़ आई (इन्नी अनल्लाहु ला-इलाहा इल्ला अना) तहक़ीक़ मैं ही अल्लाह हूँ मेरा सिवा नहीं है। यानी मूसा खुद से फ़ानी अल्लाह की ज़ात से बाक़ी हो गए। उनकी खुदी खुदा की खुदी से बदल गई। इसलिए अल्लाह तआला क़सम खा रहा है कि ऐ इन्सान अगर किसी कामिल के ज़रिया अपनी मारफ़त हासिल कर ले तो तुझ पर वही हालत छा जायेगी जो मूसा पर तूर पहाड़ पर छाई थी और ज़वान से अनलहक़ का नारा निकलने लगेगा।

हज़रत आरिफ़ सफ़ी इलाहाबादी-

शेर- गर अनलहक़ बोल उठूँ क्या अजब!
खुद वही मुझ में समाया देखिए!!

◆◆◆

हैरत जो वहाँ छाई परदे से निदा आई!
बेहोश न हो मूसा जो तू है वही मैं हूँ!!

(4) काबा- काबा तो महज मकान ही मकान है लेकिन असली काबा तो खुद इन्सान का दिल है। हदीस पाक।

(अर्थ- हदीस पाक, मोमिन का दिल) अल्लाह का अर्श (ठहरने की जगह है) हदीस पाक।

لِاَنَّ حُرُمَةِ الْمُسْلِمَا رُجُح مِنْ حُرُمَةِ الْكَعْبَةِ

(हदीस पाक का अर्थ- एक मुसलमान की हुरमत काबा की हुरमत से कहीं ज्यादा है। क्योंकि काबा वाला खुद उसी के वजूद में मौजूद है और वह उसी की हयात से ज़िन्दा व क़ायम है।

हज़रत सुल्तान बाहू-

शेर- तू खुद हज़रत मुसम्माई व अज़ अस्मा चिहमी जोई।
तू कुल्लुलकुल खुद बाशी व अज अज़्ज़ा चेहमी जाई।।

अर्थ- तू खुद नाम वाला (ज़ात) है नामों में क्या तलाश कर रहा है, तू कुल का कुल है और अज़्ज़ा (टुकड़ों) से क्या ढूँढता है।

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰا لِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا

(पारा 15, रुकू 9) और उतारा हम ने कुरआन से वह चीज़ कि शिफ़ा और रहमत है ईमान वालों को और ज़ालिमों के लिए महज़ घाटा मोमिन का लफ़्ज़ (शब्द) अरबी के तीन अलफ़ाज़ (शब्दों) से बना है (1) अमन (बे खौफी) युम्न (सच्चाई) अमानत (धरोहर) यानी मोमिन बेख़ौफ होगा इसलिए कि वह अल्लाह के इस्म (नाम) वली का मज़हर है। अल्ला तआला फ़रमाता है-

اَلَا اِنَّ اَوْلِيَاءَ اللّٰه لَاخَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ

(अर्थ - खबरदार हो जाओ तहक़ीक़ अल्लाह वालों को कोई खौफ़ है न कोई रंज व ग़म) मोमिन सच्चाई पर क़ायम और वादा का पक्का होगा यानी रोज़ अज़ल (अव्वल दिन जिस रोज़ रूहों से वादा लिया गया था) अलस्तुबि रब्बिकुम (क्या तुम्हारा रब मैं नहीं हूँ) के जवाब में (क़ालू बला) हाँ कहा था।

(अपना इन्कार और अल्लाह का इक़रार था कि तू ही मेरी हक़ीक़त है।)

शेर- अलस्तु अज़ल में हमीं ने कहा था!
बला कहने वाले भी कुर्बां हमी हैं!!

अमानत (धरोहर) हज़रत इन्सान ने अमानते इलाही उठाने का वादा किया था। अल्लाह तआला फ़रमाता है-

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يُّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا

अर्थ- तहक़ीक़ पेश किया था हमने अपनी अमानत को ऊपर आसमानों और ज़मीनों के, ऊपर पहाड़ों के पस इन्कार किया अमानत के उठाने से और डर गए, और उठा लिया उसको इन्सान ने और वह सख्त तारीकी और जिहल में था। वह अमानत क्या है यही रूह जो क़ालिबे आदम में मौजूद है। चूँकि रोज़ मीसाक़ (क़ौल व क़रार के दिन) रूहों और ज़ात के दरमियान कोई परदा न था, इसलिए उन्होने अपना इन्कार और खुदा का इक़रार किया था। दुई, शिर्क या ख्यानत न थी, अमीन होने का वादा किया था। यही अल्लाह के फरमान का मतलब है कि जो अल्लाह की ज़ात का अमीन होकर यानी मोमिन होकर क़ुरआन पढ़ेगा उसके लिए वह रहमत और शफ़ा है। जो ख्यानत यानी अपनी खुदी, दुई और शिर्क क़ायम कर के क़ुरआन पढ़ेगा वह जालिम और घाटा वालों में होगा। अल्लाह तआला फ़रमाता है।

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

(और रंजीदा न हो और मलाल न करो तुम्हीं ग़ालिब रहोगे। अगर तुम मोमिन रहे)

अफ़सोस कि अल्लाह तो ग़ालिब होने की खुशखबरी सुना रहा है और हम अपनी शैतनत और खुदी के नशा में अल्लाह की नाफ़रमानी कर रहे हैं ओर ग़ालिब होने के बजाये मग़लूब व मग़जूब हो रहे हैं। मालूम हुआ कि हमारे अन्दर जो ईमान था वह नहीं रहा यानी हम अमानत के अमीन नहीं रहे और दीन इस्लाम पर जो अल्लाह का पसन्दीदा दीन है क़ायम नहीं रहे। क़ुरआन- اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ

(अल्लाह के नज़दीक दीन इस्लाम ही पसन्दीदा दीन है) अफ़सोस कि नफ़सानियत में फँस कर हमने अपनी हक़ीक़त को भुला दिया है और दीन व दुन्या दोनों को खराब कर रहे हैं।

हज़रत मौलाना रूम-

शेर- तन तुरा दर सूए आबो गिल कशीद।
दिल तुरा दर सूए साहब दिल कशीद।।
कार खुद कुन कार बेगाना मकुन।
बर ज़मीने दीगराँ ख़ाना मकुन।।
चीस्त बेगाना तने ख़किये तो।
कज़ बराये ओस्त ग़म ना किये तो।।

अर्थ- तन के एतिबार से तू दुन्या की तरफ़ मायल है और दिल के एतिबार से अपनी हक़ीक़त यानी साहब दिल (अल्लाह) की तरफ़ खिंच रहा है। अपने काम में लग जा दूसरों का काम मत कर, और दूसरों की ज़मीन पर घर न बना। बेगाना क्या है? तेरा खाकी तन, उसी के लिए तू रंजीदा है।

पारा 21, रुकू 12 (ऐ लोगो न तुम्हारे लिए पैदा किया जाता है न फिर से उठाया जाता है मगर एक नफ़्स वाहिद के तहक़ीक अल्लाह ही सुने वाला और देखने वाला है) इस आयत पाक में हक़ीक़त की तरफ़ इशारा है न कि मजाज़ की तरफ़। अल्लाह ही असल है और तमाम आलम उसका वहम और ख्याल है। जैसे तुम्हारा ख्याल जो तुम खुद ही हो ख़ाब में एक वहमी व ख्याली दुनिया को जन्म देता है।

मसलन तुम ने इलाहाबाद में एक खाब देखा कि मैं एक हजार मील की दूरी पर बम्बई में चालीस बरस से दरज़ी का पेशा कर रहा हूँ और अहलो अयाल, रंजो खुशी भी है। यह सब क्या है और कहाँ है? ज़ाहिर है कि तुम्हारे अलावा कुछ नहीं है। तुम्हारे वहमो ख्याल ने ही एक वहमी व ख्याली दुन्या बसा ली है। अगर दरज़ी जाग जाये तो मालूम हो कि तुम्हारे सिवा किसी का वजूद न था न है।

इसी तरह तमाम आलम अल्लाह का ख्याल है। न ज़मान है न मकान है न और कोई शै। यही वजह है कि औलिया अल्लाह पहचाने के बाद अपनें को खबिन्दा (खाब देखने वाला) ही पाते हैं।

हज़रत मौलाना व मुर्शिदना इफ़तिखारुल हक़ रहमतुल्लाह अलैहि-

शेर- अदब मुझको मद्दे नज़र है व गर ना।
मैं इक खाब हूँ जिसका खाबिन्दा तू है।।

हमा हस्ती (सब कुछ) महज ख्याल है और जात वाहिद के सिवा कोई उसका ग़ैर नहीं।

शेर- जो कुछ तू देखता है वह फ़रेबे ख़ाब हस्ती है।
तख़ैयुल के करिश्मे हैं बलन्दी है न पस्ती है।।

مَنْ قَالَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ فَدَخَلَ الْجَنَّةَ

इसी मफ़हूम के तहत हुजूर ने फ़रमाया (जिसने तस्दीक़ क़लबी के साथ कह दिया कि नीं है कोई ग़ैर अल्लाह पस दाखिल हो गया जन्नत में) यानी वह खुद से मिट गया और हक़ के साथ बाक़ी (जिन्दा) हो गया। खुदी खत्म होकर शैतनत जाती रही।

शेर- धोका था मुझको ग़ैर का उलझा था अपने खाब में।
यार ने अब जगा दिया बाक़ी कुछ मलाल है।।

सब लोग सो रहे हैं जागने पर मालूम होगा कि हर चीज़ की असल ख़्याल ही है। **हज़रत मुही उद्दीन इब्न अरबी फरमाते हैं-**

اِنَّمَا الْكَوْنُ خَيَالٌ وَهُوَ الْحَقُّ فِى الْحَقِيقَتِ
كُلُّ مَنْ يَّفْهَمُ هٰذَا جَازَ اَسْرَارَ الطَّرِيْقَتِ

तमाम आलम महज ख्याल है और वह असल में हक़ है। पस जिसने इन बातों को समझ लिया वह तरीक़त (इश्क) के समुन्दर से पार हो गया। हज़रत अब्दुल करीम बिन जीली इन्सान कामल में लिखते हैं-

44 ख्याल रूह आलम की हयात है वह उनकी असल है। और उसकी असल औलाद आदम है। जो शख्स ख्याल की हक़ीक़त को कुदरते अज़ामी (बड़ी) से जान लेता है। उसके नज़दीक वजूद सिवाय ख्याल के कुछ नहीं।

❖ ❖ ❖

अध्याय-6

तौहीद का सुबूत हदीस से

كَانَ اللّٰهُ لَمْ يَكُنْ شَيْءٌ مَعَهٗ اَلْاٰنَ كَمَا كَانَ

(1) (अल्लाह अकेला था उसके साथ कोई चीज मौजूद न थी और जैसा वह पहले था वैसा ही अब भी है यानी अल्लाह महज़ मौजूद है, न उसका ग़ैर था, न है, न होगा। यह दुन्या आलम खाब है। बैत (मुरीदी) के वसीले से रहमते आलम के ज़रिया जो लोग खाब से जाग गए, अपने को खाबिन्दा पाया।

हज़रत पीरो मुर्शिद-

शेर- कैसा बन्दा कौन मौला मुझको सौदा हो गया।
जब है अल आनेनो कमा-कान तो फिर क्या हो गया।।

हज़रत मौलाना तालिब हुसैन।

शेर- फ़क़त एक दरया है बहद्दो पायाँ।
न मैं हूँ न वह है यह असरार क्या है।।
न मोमिन न काफ़िर न मौला न बन्दा।
मैं जैसा था वैसा ही हूँ और क्या है।।

हज़रत ख़्वाजा अजमेरी-

शेर- चूँ मुईन ज़र्रा सिफ़त रफ्त पए नूरे उज़्ली।
न तलूए न गुरूबे न ज़वाले बीनम।।

जब इस ज़र्रा सिफ़त ने नूरे अज़ली से रोशनी ली तो तुलू (निकलना सूरज का) न गुरूब (डूबना) न ही ज़वाल देखा।

शेर- रूहेम न जिस्मेम नूरेम न अल्लाह।
मा हस्तिये सिर्फ़ एम, नईनेम न आँ नेम।।
(न रूह, न जिस्म, न नूर, न अल्लाह,।
मेरी हस्ती सिर्फ है न यह हूँ न वह हूँ।।

45. हजरत बेदम वारसी-

शेर- वहाँ हम हैं जहाँ बेदम न वीराना न बस्ती है।
न आज़ादी न पाबन्दी न हुश्यारी न मस्ती है।।

اَنَا مِنْ نُوْرِ اللّٰهِ وَكُلُّ خَلَائِقُ مِنْ نُوْرِیْ

(2) हदीस पाक का अर्थ, मैं अल्लाह के नूर से हूँ और कुल चीज़ मेरे नूर से है। मालूम हुआ कि नूर इलाही मिस्ल बीज के और नूर मुहम्मदी मिस्ल अँख्वा के और तमाम आलम मिस्ल पेड़ के हैं, जैसे पेड़ और उसका हर जुज़ बीज का ग़ैर नहीं, इसी तरह आलम अल्लाह का गैर नहीं। हदीस पाक।

كل وَالَّذِىْ نفسِ مُحَمَّدٍ بِيَدِه وَلَوَانَّكُمْ نُوْدَلِّيتُمْ بِحَبْلِ الْاَرْضِ السَّفْلىٰ

لَحَبِطَ عَلَى اللّٰهِ ثُمَّ فَقَرَاءَ هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ هٰذا باطِلاً

(3) मैं उसकी क़सम खा कर कहता हूँ जिसके क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है, कि अगर रस्सी से डोल बाँध कर ऊपर से गिराओ तो वह अल्लाह हो पर गिरेगी) फिर इस बात की तसदीक़ में क़ुरआन की आयत पढ़ी (कि वह यानी अल्लाह ही अव्वल है, आखिर है और ज़ाहिर है और बातिन है) मालूम हुआ कि मख्लूक़ अल्लाह की ऐन है न कि ग़ैर।

(4) (हदीस पाक, क़सम है मैं अपने बन्दे के ख्याल के क़रीब हूँ) यानी जब बन्दा ग़ैरियत व दुई के परदे को फाड़ डालता है और उसके तमामी तऐयुनात व हिजाबात दूर हो जाते हैं तो उसके आईनए ख्याल में मैं होता हूँ।

शेर- दम बदम आती है मुझको पास से खुशबूए यार।
हम हैं खुद अपने गले के यार खुशबूदार हार।।

हज़रत मौलाना रूम-

46 **शेर-** ऐ बिरादर तू हमीं अन्देशई।
मा बक़ी तू उस्तखानोरेशई।।

ऐ भाई तू वही ख्याल है और बाक़ी सब गोश्त, खाल और हड्डी है।

مَنْ رَاٰنِىْ فَقَدْ رَاءَ الْحَقَّ

(5) हदीस पाक, जिसने मुझे देखा उसने हक़ को देखा हुजूर चूँकि सरापा नूर इलाही है इस लिए उनका देखना अल्लाह का देखना है। क्योंकि वह अपनी जात से फ़ानी और अल्लाह की ज़ात से बाक़ी हैं।

हज़रत शाह न्याज़ अहमद-

शेर- दुरे दरयाए तज्रीदी गुले बुस्तान तफ़रीदी।
बशक्लो सूरते इन्साँ नुमायाँ ज़ात अल्लाहे।।

अर्थ- दरयाये तजरीद (यके, तन्हा) के मोती और यगँगत के बाग़ीचा के फूल शक्लो सूरत में इन्सान मगर अल्लाह की जात नुमायाँ (जाहिर)

مَنْ عَرَفَ نَفْسَهٗ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهٗ

(6) (हदीस जिसने अपने नफ़्स (ज़ात) को पहचाना उसने अल्लाह को पहचाना)

इसलिए की हक़ीक़त के एतिबार से वजूद एक है, इन्सान मानिन्द बरफ़ के और अल्लाह मिस्ल पानी के है। पस बरफ़ घुल जाये तो पानी ही होगा। इसी तरह इन्सान क़ैद जिस्मानी से आज़ादी के बाद अपने को फ़ानी और अल्लाह को बाक़ी पाएगा।

शेर- हुआ मैं जो फ़ानी तो है कौन यारब।
हिलाता है अब जो मिरे दस्तो पा को ।।

مَنْ رَانِی فَقَدْ رَاءَ الْحَقَّ

(7) (हदीस जिसने मुझे देखा उसने मुझी को देखा क्योंकि हर सूरत में मैं ही ज़ाहिर तर हूँ।) चूँकि रहमते आलम ही की ज़ात व बरकात तमाम काइनात की असल है इसलिए हर सूरत में वही जलवा फ़रमा है।

हज़रत पीरो मुर्शिद-

शेर- ज़े हस्तीहा कुनम चेह बरतू ईसार।
तुई जिस्मो तुई जानो शबीहम।।
न मन ज़ाहिर न मन बातिन तुई तू।
तआलल्लाह ज़हे शाने क़रीबम।।

अर्थ- अपने वजूद से आप पर क्या चीज़ कुर्बान करें आप ही तो जिस्मों जान और सूरत हैं, न मैं ज़ाहिर हूँ न बातिन में हूँ अल्लाह की शान बलन्द हो यह शान कुर्बत।

يُوْ زِيْنِی اِبْنُ نوِيَمَسُبُّ الدَّهْرَ لَنَا الدَّهَرَ

(8) (हदीस, औलाद आदम ज़माना को गाली देकर मुझको ईज़ा (दुःख) पहुँचाता है हालाँकि ज़माना मैं ही हूँ) पस इस हदीस से ज़मान व मकान की नफ़ी (तरदीद) साबित हुई। और दुई व ग़ैरियत की तरदीद।

मौलाना रूम-

शेर- नूर बाक़ी पहलूए दुन्याये दूँ।
शीर साफ़ी पहलूहाये जुए ख़ूँ।।

अर्थ- नापाक मक्कार दुनिया के पहलू बपहलू ख़ुदा का नूर और दूध के पहलू बपहलू ख़ून बह रहा है।

لِاَنَّ حُرْمَةَ الْمُسْلِمِ الْوَاحِدِ اَرْجَحِ مِنْ حُرْمَةِ الْكَعْبَةِ

(9) (हदीस, यक़ीनन एक मुसलमान की हुरमत काबा की हुरमत से कहीं ज्यादा है।) जब रहमत आलम नमाज़ पढ़ा चुकते तो नमाज़ियों की तरफ़ चेहरा अनवर फ़रमा लेते और काबा की तरफ़ पुश्त (पीठ) सबब मालूम करने पर इरशाद

फ़रमाया कि ऐ मुसलमानों तुम्हारा मर्तबा काबा से कहीं ज़्यादा है। क्योंकि वह तो महज मकान ही मकान है लेकिन तुम्हारे वजूद के अन्दर खुद मकान वाला मौजूद है (यानी अल्लाह) तुम्हारा दिल (क़ल्ब) अल्लाह का अर्श है।

शेर- सारे आलम की तो गुन्जाइश हमारे दिल में है।
देख तू मजनूँ न बन लैला इसी महमिल में है।।
कर ग़ौर ज़रा दिल में कुछ जलवा गरी है गी।
यह शीशा नहीं खाली देख इसमें परी है गी।।

हज़रत मग़रबी-

शेर- तू बमानी जान जुम्ला आलमे।
हर दो आलम खुद तुई बिन्गर दमे।।

अर्थ- असल में तमाम आलम की जान तू ही है, दोनों आलम खुद तूही है ज़रा देख तो।

(10) हदीस, अल्लाह के साथ एक वक़्त मऐयत (नजदीकी) का ऐसा होता है कि उस हालत में किसी मुक़र्रब फ़रिश्ता या रसूल की गुन्जाइश नहीं रहती।) एक मर्तबा हज़रत आइशा ने इसी कैफ़ियत में हुजूर को आवाज दी। आपने पूछा कौन? जवाब मिला आपकी बीबी। फिर पूछा कौन ज़ौजा (बीबी)? कहा आइशा। फिर पूछा कौन आइशा? कहा, अबूबकर की बेटी। फ़रमाया कौन अबूबकर? हज़रत आइशा ने जब यह कैफ़ियत देखी तो घबरा कर लौट आयीं। बाद में जब मुलाक़ात हुई तो हुजूर ने फ़रमाया कि वह वक़्त खास कुर्बियत का होता है कि बशरियत खत्म होकर जिहत उलूहियत ग़ालिब हो जाती है।

48

शेर- बिरो ऐ अक़्ल ना मरहम की इमशब बा ख्याले ऊ।
चुनां खुश ख़िलवते दारम कि मन हम नीस्तम महरम।।

◆◆◆

ग़ैरत अज़ चश्म बरम रूए तू दीदन न दिहम।
गोश रा नीज़ हदीस तू शुनीदन न दिहम।।

अर्थ- ऐ अक़्ल ना महरम दूर हो जा कि आज रात मैं उसके ख्याल में हूँ और ऐसी अच्छी खिलवत (तनहाई) रखता हूँ कि जहाँ मैं खुद ही ना महरम हूँ।
आँख और कान से ग़ैरियत जाती रही कि तेरा चेहरा देखूँ और तेरी गुफ़्तूगू सुनूँ।

शेर- खुले जाते हैं असरारे निहानी।
गया दौरे हदीसे लन तरानी।।

(11) हदीस, अल्लाह का (ग़ैर बातिल है) रहमत आलम ने फ़रमाया कि मा सिवल्लाह को बातिल कहते हैं। और अल्लाह ने फ़रमाया (अल्लाह ने खल्क को बातिल नहीं बनाया) मालूम हुआ कि ग़ैरियत और दुई महज़ वहम है। हर शै उसी के नूर से है।

❖ ❖ ❖

अध्याय-7

तौहीद का सुबूत औलिया अल्लाह की किताबों से

(1) क़ौल हज़रत अली! जब आप पर ग़ल्बए तौहीद (बेखुदी) ग़ालिब होता तो आप फ़रमाते ''मैं हर चीज़ को मूहीत (घेरे) हूँ।'' अर्श व कुर्सी, लौह, (तख्ती) क़लम, आस्मान और ज़मीन सब मैं हूँ। फिर फ़रमाया।

دَآءُكَ فِيْكَ وَمَا تَشْعُرُ دَوَآءُكَ فِيْكَ وَمَا تُبْصِرُ وَتَزْعُمُ اَنَّكَ جِرْمٌ
صَغِيْرٌ۔ وَفِيْكَ انْطَوٰى الْعَالَمُ الْاَكْبَرُ وَاَنْتَ الْكِتَابُ الْمُبِيْنُ
الَّذِىْ بِاَحْرُفِهٖ يَظْهَرُ الْمُضْمَرُ فَلَا حَاجَةَ لَكَ مِنْ خَارِجٍ
وَفِكْرُكَ فِيْكَ وَمَا تَفَكَّرُ

अर्थ- तेरा दर्द तुझमें है और तू नहीं जान्ता। दवा तेरी तुझसे है और तू नहीं देखता। और तु गुमान करता है कि तू छोटा सा जिस्म है, हालाँकि तेरे बीच एक बड़ा जहान सिम्टा हुआ है। और तू वह रोशन (खुली) किताब है कि जिसके हरफ़ों के साथ छुपी चीज़ ज़ाहिर होती है। पस तेरे ख़ारिज (बाहर) से कोई ज़रूरत नहीं और तेरी फ़िक्र तेरे बीच है, हालाँकि तू फ़िक्र नहीं करता।

50 (2) क़ौल इमाम हुसैन! मिरातुल आरिफ़ीन में लिखते हैं।

وَمَا فِى الْعِلْمِ الْحَقِّ ظَاهِرٌ عَلَى الْوَجْهِ الْجُزْئِىِّ وَالتَّفْصِيْلِىِّ فَهُوَ
فِىْ عِلْمِ الْاِنْسَانِ الْكَامِلِ ظَاهِرٌ عَلَى الْوَجْهِ الْجُزْئِىِّ وَالتَّفْصِيْلِىِّ
بَلْ عِلْمُهٗ عِلْمُهٗ وَذَاتُهٗ بِلَا اِتِّحَادٍ مَّعَهٗ وَلَا حُلُوْلٌ فِيْهِ وَلَا صَيْرُوْرَةٌ

هُوَلِاَنَّهَا مُحَالٌ لِاَنَّ الْاِتِّحَادَ يَحْصُلُ مِنَ الْوُجُوْدِيْنَ وَكَذَالْحُلُوْلُ وَالصَّيْرُوْرَةُ مَاثَمَّ اِلَّا وُجُوْدٌ وَاحِدٌ

अर्थ- और जो बीच इल्म हक़ के ज़ाहिर है ऊपर वजह जुज़ु व कुल के पस वह बीच इन्सान कामिल के ज़ाहिर है। ऊपर वजह ज़ुज़ व तफ़सील के बल्कि इल्म इन्सान कामिल इल्म हक़ है। और ज़ात उसकी ज़ात हक़ है व सबब न होने इत्तिहाद (मेल) के साथ इन्सान के और हक़ के ओर न होने हुलूल (घुसना) के दरमियान उन दोनों के और न होने तक़ल्लुब के (उसी सूरत का हो जाना) (इस वास्ते कि यह सब मुहाल है। क्योंकि यक़ीनन इत्तिहाद, हुलूल और तक़ल्लुब दो वजूदों में हासिल होता है और नहीं है जाते हक मगर वजूद वाहिद (अकेला) कुरआन।

اَمَّا تَسْمَعُ كَيْفَ يَقُوْلُ الْحَقُّ عَزَّ وَجَلَّ (اِقْرَا كِتَابَكَ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا) فَمَنْ قَرَءَ هٰذَا الْكِتَابَ فَقَدْعَلِمَا مَاكَانَ وَمَاهُوَكَائِنٌ وَّمَا هُوَيَكُوْنُ

51 **अर्थ-** ऐ बेटा ज़ैनुल आबिदीन क्या तुमने नहीं सुना, कि अल्लाह फ़रमाता है, पढ़ तू अपनी किताब काफ़ी होगा तेरा ही नफ़्स (ज़ात) आज के दिन ऊपर तेरे हिसाब लेना वाला)

पस पढ़ ली जिसने अपनी किताब को मालूम किया उसने उस चीज़ को जो हो चुकी और जो होने वाली है और होगी। फिर फ़रमाया ऐ बेटा कुरआन में हैं।

(وَلَارَطْبَ وَلَايَابِسٍ اِلَّافِىْ كِتَابٍ مُّبِيْنٌ)

(नहीं है कोई खुश्को तर जो न हो किताब (मुबीन) खुली में (और वह तू है।)

शेर-
तू खुद हज़रत मुसम्माई व अज़ अस्मा चेह मी जोई।
तू कुल्लुलकुल खुद बाशी व अज़ अज़्ज़ा चेह मी जोई।।
तलब रा दूर कुन अज़ दिल तू खुद मतलूबी ऐ तालिब।
अजब सिर्रे अयाँ गुफ्तम दिगर अफ़्शा चेह मी जोई।।
ब्या ऐ क़ादिरी कुनफ़िक्रे महव बे खुदी बुगुज़ीं।
दरीं इम्ला चेह मी जोई वज़ीं इन्शा चेह मी जोई।।

अर्थ- तू खुद मुसम्मा (ज़ात) है नामों में क्या तलाश करता है। तू खुद कुल का कुल है अज्ज़ा में क्या ढूँढता है। तलब को दिल से निकाल दे तू खुद अपना मतलूब है अजब खुला हुआ भेद खोलता हूँ इससे ज्यादा क्या तलाश करता है। क़ादिरी आ अपनी खुदी से गुज़र जा (बेखुद हो जा) इस तहरीर और उस इन्शा (विषय) में क्या ढूँढता है।

(3) कौल इमाम ज़ैनुल आबिदीन! अगर जौहरे इल्म को ज़ाहिर कर दूँ तो वे मुझको बुतपरस्त कहें और मेरे कत्ल को जायज़ क़रार दे दें। वह हक़ीक़ी तौहीद है कि अल्लाह का सिवा मौजूद नहीं और हर शै उसकी ऐन है न कि ग़ैर।

(4) तुहफ़ए सुबहानी में ग़ौस पाक फ़रमाते हैं। ऐ क़ौम अल्लाह के सिवा ग़ैर शै मौजूद नहीं है। अपने दिलों से ग़ैर अल्लाह को इस तरह निकाल दो जैसे गूँधे हुए आटे से बाल निकाल दिया जाता है। फिर अपने को और अब्दुल क़ादिर को पहचानो कि कौन है? फिर फ़रमाया बेटा शिर्क की जुन्नार को तोड़ यानी अपने आपे से निकल, अपने रब के दरमियान तू ही परदा बना हुआ है अपने से जुदा हो और अल्लाह को देख।

(5) क़ौल अबू सईद अबुलखैर (गौस पाक के पीर) तुहफ़ए मुर्सला में फ़रमाते हैं। उस वजूद के लिए न कोई हद है न कोई शकल, न तऐयुन, न अहाता, बा वजूद इसके हद, शकल और अहाता में ज़ाहिर हुआ और जलवा फरमाया और उसकी बेहदी, बेशकली में कोई फ़र्क न आया, जैसा का तैसा है। ग़ैरियत और दुई महज़ वहम है जो बातिल है। पहले इस वहम को दूर करो फिर हक़ को अपने बातिन में साबित करो। लाइलाहा इल्लल्लाह का यही मतलब है।

(6) **क़ौल मुज़द्दक अलफ़ सानी-**

لا آدم فِى الملك وَلَاابليس لا ملك سليمان وَلَا بلقيس
فلكل عبارةٌ انت المعنى يامن هوا لِلْقُلُوب مقنا طيس

अर्थ- दुन्या में न आदम है न इबलीस। न सुलैमान न बिलक़ीस, पर जो कुछ इस सफ़हे हस्ती में है वह कुल तेरे कलिमात की इबारतें हैं। जिसके माना, ऐ अल्लाह तूही है ऐ दिलों के जज़्ब (खींचने वाले) करने वाले मक्नातीस।

(7) **क़ौल सिद्दीक़ अकबर-**

مَا اَرَيْتُ شَيْءً اِلَّا رَاَيْتُ اللّٰهَ قَبْلَهٗ

अर्थ- हर शै को देखने से पहले अल्लाह को देख लेता हूँ यानी हर चीज़ में अल्लाह ही को देखा।

(8) क़ौल मुही उद्दीन इब्न अरबी (फुसूसुल हकम)

فَاِنْ قُلْتَ بِالتَّنزِيهِ كُنتُ مُقَيَّدا ۔ وَاِنْ قُلْتَ بِالتَّشْبِيهِ كُنتَ مُحَدَّدا

وَاِنْ قُلْتَ بِالْاَمْرَيْنِ كُنتَ مُسَدَّداً ۔ وَكُنتَ اِمَاماً فِي الْمَعَارِفِ سَيِّداً

فَمَنْ قَالَ بِالْاَشْفَاعِ كَانَ مُشْرِكاً ۔ وَمَنْ قَالَ بِالْاَ فْرَادِ كَانَ مُوَحِّداً

فَمَا اَنْتَ هُوَ بَلْ اَنْتَ هُوَ وَتَرَاهُ فِي ۔ عَيْنَ الدُّهُورِ سَوَحاً وَّمُقَيَّداً

अर्थ- अगर तू बेरंग (तंजीह) कहता है तो तू ने जात को मुक़ैयद (क़ैद) कर दिया और अगर तू तश्बीह (सूरत) कहता है तो तू ने महदूद (हर के अन्दर) कर दिया अगर तू सूरत व बे सूरत दोनों कहता है तो तू सच्चा है और तू मुअरिफ़ का इमाम व सरदार है जो हक़ व ख़ल्क़ को दो कहता है मुशरिक है और जो दोनों को एक कहता है वही मवहहिद (मोमिन) है। तू मिन हैसुल इत्लाक़ वह नहीं है बल्कि बएतिवार ऐनियत व हूवियत के तू वही है और तू उसको अस्मा (नामों) के ऐन में मुतलक़ व मुक़ैयद देखता है।

1. पस तू हक़ के तरफ़इन मौजूदात से - खारिज में मत देख और लिबास ख़ल्क़ से हक़ को बरहना कर।

وَلَا تَنظُرُ اِلَى الْخَلْقِ وَ
تَكْسُوهُ سِوَى الْخَلْقِ

2. और तू मख़लूक़ को हक़ तआला से बाहर मत देख और तू ख़ल्क़ को सिवा हक़ के और कोई लिबास न पहना।

فَلَا تَنظُرُ اِلَى الْحَقِّ
فَتَعْرِيهِ عَنِ الْحَقِّ

(9) क़ौल हजरत मुईन उद्दीन चिश्ती।

कभी मुमकिन ही नहीं कि एक वक़्त एक जगह अल्लाह और ग़ैर अल्लाह दोनों जमा हो सकें। अल्लाह का ग़ैर न था, न है, न होगा। अगर तुझको अल्लाह ही पर अल्लाह का एतिबार है तो तू खुदा के साथ है वर्ना उससे दूर।

शेर चेह जाये बादा व जाम व कुदाम साक़ी हस्त।
ख़मोश बाश मुईन दम मज़न हमा ओस्त।।

◆◆◆

बिगीर दर दारे बक़ा हब्ल अनल हक़ दर दस्त।
चन्द दर दैरे फ़ना दारो रसन मी तलबी।।

◆◆◆

अगर बचश्म हक़ीक़त वजूदे ख़ुद बीनी।
क़्याम जुम्लए अश्या ब बूद खुद बीनी।।

◆◆◆

दमे ज़े हस्तिये ख़ेश बुगुज़री बेह अज सद साल।
कि रोज़ रोज़ा बिदारी व शब नमाज़ कुनी।।

◆◆◆

गुफ़्त मुन बे परदा अम गर परदा बीनी आँ तुई।
चूं तू बाशी दर हज़ाराँ परदा पिन्हानी ज़ेमन।।

◆◆◆

शुहूद हक़ तलबी अज़ वजूद खुद वुगुज़ार।
कि जुज़ वजूदे तू ऊरा हिजाब दीगर नीस्त।।

◆◆◆

तन मियाने ख़ल्क़ व जाँ निज़्दे ख़दावन्दे जहाँ।
तन गिरफ़तारे ज़मीं रूह दर हफ़्त आस्माँ।

◆◆◆

अर्थ-कहाँ शराब, प्याला कहाँ साक़ी, मुईन दम न मारो खामोश रहो कि सब वही है। बक़ा के मुक़ाम में अनल हक़ की रस्सी को मजबूत पकड़ ले कब तक फ़ानी दुन्या में फाँसी और रस्सी तलाश करेगा। अगर हक़ीक़त की नज़र से अपने वजूद को देखे तो मालूम करे कि तमाम आलम तेरे वजूद से है। अगर एक साँस के लिए अपनी हस्ती से गुज़र जाये तो सौ साल से बेहतर है कि दिन को रोज़ा रखे और
55 रात को नमाज़ पढ़े। कहा मैं बे परदा हूँ अगर परदा देखता है तो वह खुद तू है जब तक तू है मुझ पर हजारों परदे पड़े हैं। अगर हक़ को देखना है तो अपनी खुदी से गुज़र जा कि तेरे वजूद के अलावा उसके लिए कोई परदा नहीं है। तू तन के एतिबार से खल्क़ (आलम, मख्लूक़) में है और जान तेरी हक़ के पास है। तन के इतिबार से तू ज़मीन पर है और रूह के एतिबार से तू सातवें आस्मान में है यानी ला हद है।

वजूद आदम में ग़ैर खुदा मौजूद न था किस वास्ते कि एक वजूद में दो वजूद मौजूद नहीं होते हैं। एक ही वजूद होता है पस वह वजूद खुदा का है। जैसा रसूल अल्लाह ने फ़रमाया (हदीस का अर्थ, नहीं है बीच जुब्बा (लिबास) मेरी के सिवा

अल्लाह के और नहीं है बीच दोनों जहान के सिवा अल्लाह के।

शेर- शकले कि गिरफ्तेम अज़ाँ हेच न गश्तेम।
आँ चेह रोज़ अज़ल बूदेम हुमानेम।।
न रूहेम न जिस्मेम नूरेम न अल्लाह।
म हस्तिए सिर्फ़ एम न ईनेम न आँ नेम।।

अर्थ- मैं ने जो सूरत अख्तियार कर ली है उससे कुछ हो नहीं गया जो रोज़ अव्वल था वही हूँ। न रूह, न जिस्म, न नूर, न अल्लाह मैं सिर्फ़ हूँ न यह हूँ न वह।

मौलाना रूम-

शेर- खुद कूज़ा व खुद कूज़ा गर ब खुद गिले कूज़ा,
ख़ुद रिन्द सुबू कश'
खुद वर सरे आँ कूज़ा खरीदार बर आमद,
बिशिकस्तो खाँ शुद'

अर्थ- खुद प्याला, खुद प्याला बनाने वाला, खुद प्याले की मिट्टी ख़ुद पीने वाला खुद
56 प्याले का खरीदार हुआ फिर तोड़ा और चला गया।

(10) **क़ौल क़ाज़ी हमीद उद्दीन नागौरी-**

खुदाई और बन्दगी, दुई और जुदाई महज देखने और माने, कहने और सुने के लिये है, तू खुद ही बेखुद था। जब अपने आपे में आया तो अपनी सिफ़त से अपने आपको ख्यालों और वहमी आलम की सूरत में ज़ाहिर किया और क़िस्म क़िस्म के जलवों में ज़ाहिर हुआ।

शेर- अजब बे रंग है कि इस क़दर रंग उस बेरंगी के हैं।
अज़ब बे निशाँ है कि इस क़दर निशाँ उस बे निशाँ के हैं।।

माज़ी (गुज़रा हुआ ज़माना) और मुस्तक़बिल (आने वाला ज़माना) सब ख्याल है जहाँ जात का आईना है उसकी तमाम सिफतें उसमें ज़ाहिर हुईं।

وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمَاكِرِيْنَ ع

(पारा, 3, रुकू, 13, और उन्होंने मक्र किया और अल्लाह ने भी मक्र किया, और अल्लाह बेहतर मक्र करने वाला है) दीन, दुन्या, नेकी व बदी, काफ़िर, मुस्लिम ज़िन्दगी मौत कब्र और सवाल कब्र पुल सिरात और हिसाब, जन्नत,. दोज़ख और सवाब, अज़ाब यह सब मक्र है।

जिसको ख़ुदा चाहता है वही इस मक्र के धोका से छुटकारा पा सकता है। और नजात हासिल नहीं होगी मगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैरवी से। और

उनकी पैरवी हासिल नहीं हो सकती मगर पीर के फ़रमान में, कोई खुद बखुद कामिल और मुकम्मल नहीं हो सकता, जब तक पीर की नज़र की परवरिश न पावे और अपने आपको उसके हवाले न कर दे। इसलिए कि जो काम पीर की एक नज़र करती है वह सौ चिल्लों से भी हासिल नहीं हो सकती।

57 खुदी बाखुदा तौहीद और ईमान है। खुदी बाखुद कुफ्र और शिर्क है।

मौलाना फ़रीद उद्दीन अत्तार-

शेर- अगर तू बा ख़ैशतन खुदा गोई।
मुशरिके बाशी व ख़ुदा आज़ार।।

अर्थ- अगर तू अपनी ख़ुदी के साथ ख़ुदा कहता है तो तू मुशरिक और ख़ुदा आज़ार है।

(11) क़ौल हज़रत अबूबकर शिब्ली। एक रोज़ जुमा में आपने मिम्बर (खुतबा पढ़ने की जगह) पर फ़रमाया। कि चाहे कहीं एक मौजूद हो या दस, या सौ, या हज़ार, लेकिन वह सब एक अल्लाह है। चुनान्चे मैं भी अल्लाह हूँ, मेरा कलाम भी अल्लाह ही है और दोनों जहानों में मेरे सिवा और कोई मौजूद नहीं!

हज़रत अब्दुल कुद्दूस गंगोही-

शेर- ख़ेशतन रा जलवा करदी अन्दरीं आईना हा।
आईना इस्में निहादी खुदा बइज़्हार आमदी।।
शोर मंसूर अज़ कुजाओ दारे मंसूर अज़ कुजा।
ख़ुदज़दी बाँगे अनल हक़ खुद सरेदार आमदी।।
गुफ्त कुद्दूसी फ़क़ीरे दर फ़नाओ दर बक़ा।
खुद बखुद आज़ाद बूदी खुद गिरफ्तार आमदी।।

अर्थ- इन आईनों (सूरतों) के अन्दर खुद ही ज़ाहिर हुआ, आईनों का नाम रखा और खुद ज़ाहिर में तशरीफ़ लाया। मंसूर का नारा (अनल हंक़) कहाँ और कहाँ फाँसी का फन्दा, खुद ही अनल हक़ कहा और खुद ही सूली पर चढ़ गया। कुद्दूस फ़क़ीर कहता है कि फ़ना व बक़ा में वही है, खुद ही आज़ाद था खुद ही गिरफतार होकर आया।

58 (12) **क़ौल अब्दुल करीम इब्न जीली।** इन्सान कामिल में लिखते है। हदीस में आया है कि जो दूसरी आस्मानी किताबों में है वह कुरआन में है, और जो कुरआन में है वह सूरए फतिहा में है, और जो सूरए फतिहा में है वह

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाह में है और जो कुछ बिस्मिल्लाह में है वह (बे) में है और जो (बे) में है वह उस नुक़्ता (.) में है जो (बे) के नीचे है। फ़िर फ़रमाया कि जिस तरह नुक़्ता (.) जो

ज़ात वाहिद है उससे तमाम हुरूफ़ ज़ाहिर हुए हैं और हर हरफ़ में वही नुक़्ता मुहीत (मौजूद) है।

इसी तरह बहरे अमाए ज़ात (ज़ात इलाही) एक नुक़्ता की तरह है और तमामी हदें, निशानियाँ, शानें हरफ़ की तरह हैं और वही ज़ात सब में मुहीत है। हरफ़ को चाहिए कि हरफ़ होकर नुक़्ता को न याद करे, बल्कि नुक़्ता ही कर नुक़्ता को याद करे। इसलिए कि हरफ़ का नुक़्ता से बाहर में कोई वजूद ही नहीं है। बल्कि अल्लाह ही अल्लाह को याद करे। वर्ना शिर्क हो जायेगा क्योंकि दोनों के दरमियान दूई नहीं है।

मौलाना रूम-

शेर- अल्लाह अल्लाह गुफ्त अल्लाह मी शबद।
ईं सुखन हक्क़स्त बिल्लाह मी शबद।।

अर्थ- अल्लाह ने खुद अल्लाह कहा तो अल्लाह होगा,यह बात बिलकुल सच है क़सम अल्लाह की हो जायेगा।

फिर फ़रमाया कि अल्लाह मिस्ल पानी के है और तमाम आलम मिस्ल बरफ़ के। बरफ़ का नाम अरियतन (एतिवारी) और पानी का नाम हक़ीक़तन। यूँ ही हक़ और खल्क़ का हाल है इसलिए कि बातिन यानी तंज़ीह (बेरंग) खुद जाहिर यानी तश्बीह (सूरत रंग) बना हुआ है। अल्लाह ज़ाहिर और तमाम आलम मज़्हर।

59 (13) **क़ौल शेख़सानी शाह मुहिब उल्लाह इलाहाबादी**

जो कुछ इन्सान में है वह सब आलम में है अगर अपनी हकीक़त को मालूम करते तो जान्ते कि हम कुल हैं और आलम हमारा ज़ुज़ है। जिब्राईल, मीकाईल, इस्राफ़ील, इज़्राईल (खन्नास) ज़मीन व आसमान, हवा और आग वग़ैरा सब हम में है। बैतुलमुक़द्दस, मक्का, मदीना वग़ैरा सब हम में है।

शेर- दर कुल वजूद हरकि ज़ुज़ हक़ बीनद।
बाशद ज़े हक़ीक़तल हक़ायक़ ग़ाफ़िल।।

अर्थ- जो तमामी वजूद में अल्लाह का ग़ैर देखता है वह असलियत से ग़ाफिल है।

जैसे इन्सान ज़ात के एतिबार से वाहिद है और नामों और सिफ़तों के एतिबार से कसीर है। इसी तरह अल्लाह ज़ात के एतिबार से वाहिद और नामों व सिफ़तों के एतिबार से कसीर है। हर मौजूद अल्लाह के किसी न किसी नाम का मज़्हर है और मज़्हर ऐन ज़ाहिर है और हर मौज़ूद ऐन हक़ है जिसको बातिल समझ रखा है वह ऐन हक़ है, क्योंकि वही अव्वल, आख़िर, ज़ाहिर, बातिन है। वहदत को कसरत में देखो और कसरत को वहदत में देखों। उन्स (मुहब्बत) अल्लाह वालों को अपनी जानों से होता है न कि अल्लाह से क्योंकि वह जानते हैं कि दोनों में ऐनियत है न कि ग़ैरियत,

जब जमा करे तो अल्लाह और जब तफ़रीक़ करे तो आलम नज़र आएगा। इल्म, आलिम, और मालूम एक है जो तहक़ीक़ इसके खिलाफ़ हो वह हिजाब अकबर है। बल्कि जुदाई का सबब और हुसूल मारफ़त में रुकावट। अगर किसी पीर कामिल से इल्म बातिन नहीं मिला तो इल्म ज़ाहिरी हक़ीकत का हिजाब हो जाता है। हक़ीक़त
60 इल्म है और इल्म हक़ीक़त है।

(14) क़ौल मारूफ़ करख़ी। किसी के वजूद में अल्लाह का ग़ैर नहीं इस लिए कि सब की हक़ीक़त अल्लाह ही है। जैसे ज़र ज़ेवर की हक़ीक़त है।

शेर- खुद शिनासी कार बाशद ए फलाँ।
कार दीगर हेचो पोचो हेच दाँ।।

अर्थ- ऐ शख़्स खुद को पहचानना ही काम है, दूसरे काम हेचो पोच हैं (बेकार)।

(15) **क़ौल हज़रत शर्फ़उद्दीन बिहारी-**

तुम्हारी हस्ती (वजूद) में एक कैफ़ियत का नाम रसूल अल्लाह है जो इस वक्त तक खुदी के लिबास में थी और इन्तिहाई शिर्क में तुमको मुब्तिला किए हुए थी। लिहाज़ा लाइलाहा इल्लल्लाह के इशारे से तमामी महसूसात के लिबास को हटा दो तो क़ाबिल हम्द (तारीफ़) और लगाओ अल्लाह ठहरेगा और इसीलिए वह मुहम्मद है और जब लिबास रसूल से आरास्ता होकर वह कैफ़ियत ज़ाहिर होगी तो तुम मुक़ाम रिसालत पर होगे। यानी रसूल में फ़ानी होंगे। एक रोज़ फ़रमाया कि तुम्हारा वजूद वजूद इलाही का एक नुक्ता है। यही नुक्ता नुक्तए इलाही को हल करता है। उसको लाइलाहा इल्लल्लाह से ग़ुस्ल दे दो और लिबास रसूल से आरास्ता कर दो किस क़दर आसान बात को मुशकिल बना रखा है।

ग़लबए तौहीद

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी-

سُبْحَانِی مَا اَعْظَمُ شَانِی
لَیْسَ فِی جُبَّتِی سِوَی اللّٰه

61 (1) मैं पाक हूँ मेरी शान अज़ीम है।
(2) मेरे वजूद में अल्लाह का ग़ैर नहीं।

हज़रत मंसूर हल्लाज-

अनल हक़ (मैं हक़ हूँ) का नारा लगाते, सूली पर चढ़े, जलाए गए ख़ाक दरया में डाली गई मगर अनल हक़ की सदा बन्द न हुई।

मौलाना रूम-

शेर- मन आम्दम मस्ते खुदा मैं खुंर्दम अज़ दस्ते खुदा।
हस्तिए मन हस्ते खुदा हाजा जुनूनुल आशिकी।।
आँ शम्स वुगज़श्त अज़ जहाँ ईं शम्स आमद नागहाँ।
आँ ऐने ईं, ईं ऐने आँ हाज़ा जुनूनुल आशिक़ी।।

अर्थ- मैं मस्त खुदा हूँ, ख़ुदा के हाथों शराब पी है, मेरी हस्ती खुदा की हस्ती है यह इश्क़ की दीवानगी है। वह शम्स (मेरा पीर) जहाँ से गुज़र गया मैं खुद वही शम्स हो गया, वह यह और यह वह इश्क़ के ग़लबा की बदौलत है।

हज़रत मगरबी-

शेर- ईं जहाँ पुर नूर शुद अज नूरे मा।
नूरे खुर्शीदो क़मर अज़ाँ समाँ।।
हर शै रा नीस्त दर खारिज वजूद।
आँ चे बीनी हमा अज़ मन नमूद।।

अर्थ- ये जहाँ मेरे नूर से रोशन है, सूरज, चाँद, जमीन और आस्मान। किसी चीज़ का मुझसे बाहर में वजूद नहीं है जो कुछ देखता है वह मुझी से ज़ाहिर है।

हज़रत खाजा मुईन उद्दीन-

शेर- मन नमी गोयम अनल हक़ यारमी गोयद बुगो।
चूँ न गोयम चूँ मरा दिलदार भी गोयद बुगो।।

अर्थ- मैं अनल हक़ नहीं कहता मेरा महबूब कहता है कह, मैं क्यों न कहूँ जब मेरा दिलदार कहता है कि कह।

हज़रत हाज़ी इम्दाद उल्लाह महाजिर मक्की-

शेर- अगरचे बे खुदम मस्तम वले हुश्यात मी गर्दम।
बबातिन शाह कौनेनम वज़ाहिर ख़ार मी गर्दम।।

अर्थ- अगरचे बेखुद और मस्त हूँ मगर हुश्यार हूँ, बातिन में कौनैन का बादशाह हूँ, और ज़ाहिर में ज़लीलो खार हूँ।

हज़रत शाह न्याज अहमद बरेलवी-

शेर- मन आँ नूरम कि अन्दर ला मकाँ मौजूद बूदस्तम।
ब इशराक़ ख़ुदम खुद शाहिदो मश्हूद बूदस्तम।।
गाहे न्याज़ ईमान मन गह बे न्याज़ी शाने मन।
ईं हर दो ज़ेबद बमन हम बन्दा हम मौलास्तम।।

अर्थ- मैं लामकानी नूर हूँ, अपनी ही चमक से खुद शाहिद और मश्हूद हूँ। कभी

न्याज़मन्द हूँ कभी नाज़ वाला, यह दोनों मेरे लायक़ है कि मैं ही बन्दा मै ही मौला।

हज़रत मौलाना मुहम्मद हुसैन इलाहाबादी-

शेर- अज़ बादए इश्क़ खेश मस्ती करदम।
गुलगश्त बाग़े बहारे हस्ती करदम।।
रफ़्तम व तवाफ़े काबए दिल काँज़ा।
दीदम खुद रा व खुद परस्ती करदम।।

अर्थ- अपने इश्क़ की शराब से मस्त हुआ हूँ ओर अपनी हस्ती के बाग की सैर की है, और अपने दिल के काबे का तवाफ़ (फेरा) किया तो वहाँ अपने आप को देखा और खुद अपनी इबादत आप की।

हज़रत शाह तालिब हुसैन-

शेर- न मोमिन न काफ़िर न मौला न बन्दा।
मैं जैसा था वैसा ही हूँ और क्या है।।

हज़रत सूफ़ी शाह मुहम्मद इफ़तिखारूल हक़-

शेर- हुआ जब मुझे शैके इर्फ़ान पैदा।
तो अपनी खुदी से जुदा हो गया मैं।।
हुआ अपने इर्फ़ान का तकमिला जब।
तौ जैसा था वैसा ही फिर हो गया मैं।।
खुदाई भुलाई तो सूरत को पाया।
जो सूरत भुलाई खुदा हो गया मैं।।
63 ख़ुदी अपनी खोई हुई पा गया मैं।
ग़लत है ख़ुदा पा गया खो गया मैं।

हज़रत शाह अज़ीज़ उल्लाह सफ़्वी-

शेर- हो गये हैं देख कर वह हुस्न मस्त।
पारसाओ मुफ़तिओ मुल्ला खराब।।

शेर- शुदम बर ज़ात ख़ुद शैदा सिफ़ातम खुद ज़े मन पैदा।
बहर शाने नमूदारम ब गिरदे खेश मी गर्दम।।
परसतिश मीकुनम खुदरा चे परवा गर कुनी रुस्वा।
न बाशद बा कसे कारम बगिरदे खेश मी गर्दम।।

अर्थ- मैं अपने आप पर शैदा हूँ और मेरी सिफ़तें मुझी से पैदा हुईं। हर शान में मैं ही जाहिर और अपना तवाफ़ करता हूँ। अपनी इबादत आप करता हूँ अगर तू रुस्वा करे तो परवाह नहीं, किसी से सरोकार नहीं।

हज़रत सूफी शाह मुहम्मद खलीक़ उल्लाह-

शेर- यार का मैं ख्याल हूँ हिज्र है नै विसाल है।
ज़ात जो मेरी थी वह है उसको कहाँ ज़वाल है।।
नुक्ता हूँ बहरे ज़ात का मब्दा हूँ कायेनात का।
मेरा सिवा न था न है जो कुछ भी है ख्याल है।।

हज़रत शाह आरिफ़ सफ़ी इलाहाबादी-

शेर- दरहकीक़त मन खुदाएम मन खुदाएम मन खुदा।
रू नुमाएम मन बशक्ले मुस्तफ़ता।।

अर्थ- दरअसल मैं खुदा हूँ मैं खुदा, शक्ले मुस्तफा में मेरी रू नुमाई है।

शेर- बिल्लाह हक़ बुगोयम सुलताने दो जहानम।
वल्लाह बेन्याज़म मन ज़ात जल्ले शानम।।
दरयाये बे चुगूना अन्वारे बहरे चूनम।
दर शान हर शुयूनम बेएँ ज़े हर गुमानम।।

अर्थ- क़सम अल्लाह की सच कहता हूँ मैं दो जहान का सुल्तान हूँ। मेरी ज़ात बेन्याज़ है और बड़ी शान वाली है। दरयाये बेचूँ और अनवार बेचुगूँ हूँ। हर शान में मेरी शान है और वहमो गुमान से बाहर हूँ।

अध्याय-8

रसूल करीम की तारीफ़ कुरआन में

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ بَعَدَ وِكُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّكَ

(पारा, 22, रुकू, 4, तहक़ीक़ अल्लाह और उसके फ़रिश्ते दरूद भेजते हैं। नबी पर, ऐ मुसलमानों तुम भी हमेशा दरूद और सलाम भेजो अपने नबी पर जैसा कि हक़ है) इस आयते पाक से आपकी शान का पता चलता है और इस अज़्मत और बुलन्दी में आपका कोई ग़ैरे नबी तो क्या कोई नबी व रसूल शरीक नहीं है। दूसरे यह कि अल्लाह और उसके फ़रिश्ते खुद दरूद भेजते हैं। तीसरे यह कि लफ्ज़ (युसल्लूना) बताता है कि हमेशा हमेशा दरूद भेजते रहे हैं, भेजते हैं ओर भेजते रहेंगे। चौथे यह कि तमाम इबादतें बड़ी से बड़ी या छोटी से छोटी फ़राइज़ हों या सुन्नतें मुस्तहिब हों या नफ़िलें, अज़कारो औराद, आमाल हों या वज़ाइफ़, ये तमाम इबादतें सिर्फ़ मख्लूक़ के लिए हैं, ख़ालिक़े कायनात के लिए नहीं। वह इन सब बातों से बेपरवा है। पाँचवें यह कि चूँकि नमाजें और दूसरी तस्बीहें (औराद अज्कार) फ़रिश्तों की नक़ल है।

65 इसीलिए कि फ़रमाया नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वस्ल्लम ने (अर्थ हदीस) जिस क़ौम के तौर तरीक़े (मुशाबिहत) अपनाओगे उसी क़ौम के साथ हश्र होगा) हमारा हश्र मलाइका फ़रिश्तों के साथ होगा। लेकिन इस नुक़्ता की रोशनी में अगर देखें तो दरूद का पढ़ना एक ऐसी इबादत है जो मौला और बन्दे के दरमियान मुश्तरक (मिली) है। और कोई दूसरी इबादत इसके हम पल्ला नहीं हो सकती। लिहाजा यह बात साबित हुई कि दरूद का पढ़ना तमाम इबादतों से अफ़जल है और इस इबादत को (दरूद पढ़ना) अल्लाह तआला खुद भी करता है तो हमारा हश्र भी सूरज की रोश्नी की तरह रोशन है यानी हमको खुद अपने परवरदिगार की पैरवी नसीब हुई। खुश नसीब है वह बन्दा कि अपने रब के फ़ेल (काम) में शरीक

हो। छठे यह कि और इबादतों में तो वक्त, जगह और पाकी की पाबन्दी लगा दी गई है। मगर यह इबादत ऐसी है कि जिस तरह अल्लाह तआला की ज़ात वक़्त और जगह की क़ैद से आज़ाद है, उसी तरह दरूद खानी (पढ़ना) भी इन पाबन्दियों से आज़ाद है। और बेइन्तिहा सवाब उज्र (बदला) का सबब है। यही वजह है कि परवरदिगार आलम ज़ोर दे रहा है कि ऐ ईमान वालो तुम भी दरूद और सलाम भेजो। तरकीब भी इर्शाद फ़रमा रहा है कि जिस शानोअज़मत का हमारा महबूब है उसी शान और अज़मत के साथ बाअदब दरूदोसलाम भेजा करना ग़ायब जानकर नहीं बल्कि हाज़िर व नाज़िर (मौजूद देखने वाला) क्योंकि तुम्हारे नबी तुम्हारी जानों से ज्यादा तुम्हारे क़रीब हैं।

(पारा, 21, रुकू 17, यक़ीनन नबी ईमान वालों की जानों से ज़्यादा क़रीब हैं) वह तुम्हारी फ़र्याद सुन रहे है, तुम से बाहर नहीं, तुम्हारा सलाम सुनते और तुमको
66 उसका जवाब भी देते हैं। पस मालूम हुआ कि दरूद का पढ़ना अल्लाह की रहमत और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत का सबब है। जब वाल्दैन साइल को अपने बच्चे के सदक़े में कुछ न कुछ दे दिया करते हैं तो परवरदिगार आलम जो अपने महबूब का आशिक़ है, उस शान महबूबी के सदक़े और तुफ़ैल में हमको कैसे महरूम फ़रमाएगा जबकि उसके हबीब हमारी शफ़ाअत भी फ़रमाएँगे आपकी हक़ीक़ी शफ़ाअत हमारे हक़ में यही है कि खुदी और शैतन्यत दूर होकर जमाले मुहम्मदी के आईना हो जायें। क्यों सूरत और उसका अक्स (साया) दो नहीं बल्कि एक ही है।

शेर- वही सूरत है वही आईना यह ख़्याल दिल से जो जाये ना।
तो वह रूबरू है हर आईना यही शान शाने कमाल है।।

हज़रात सहाबा कराम ने हुज़ूर पाक से सवाल किया कि अल्लाह तआला का दरूद भेजना क्या है? आपने फ़रमाया (हदीस का अर्थ) अल्लाह का मुझ पर दरूद भेजना फ़रिश्तों के दरमियान हमारी सना (तारीफ़ ब्यान करना है) पस हम लोग आपके मरातिब को क्या जानें। इसलिये अपनी लाइल्मी का इज़्हार करते हैं और अर्ज़ करते हैं, ऐ परवरदिगार तू ही अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीफ़ ब्यान फ़रमा जैसा कि हक़ है। जैसा कि नबी करीम ने ख़ुद इर्शाद फ़रमाया (ऐ अबूबकर मेरी हक़ीक़त को अल्लाह का गैर नहीं जानता) जिस तरह जिस्म के एतिबार से हर आदमी औलाद आदम है, उसी तरह नूरानी या रूहानी एतिवार से हम आले (औलाद) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं, क्योंकि उन्हीं का नूर हमारी जान है। पस दरूद शरीफ के भेजने का मक़्सद यह हुआ कि ऐ अल्लाहताला रहमते कामिला नाज़िल फ़रमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर और उनकी आल पर यानी हम पर भी, यही वजह है कि दरूद पढ़ने के लिए अल्लाह और उसका हबीब
67

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दोनों ज़ोर दे रहे हैं ताकि हम पर बेशुमार रहमतों का नुजूल हो।

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْ اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ
وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا

(पारा 5, रुकू, 6,) अगर लोग अपनी जानों पर जुल्म (गुनाह) कर बैठें तो वह आप (रसूल) पास हाज़िर हों और अल्लाह से माफ़ी चाहें और आप उनकी सिफ़ारिश फ़रमा दें तो अल्लाह को तौबा कुबूल करने वाला और रहीम (मिहरबान पाएँगे) मालूम हुआ कि आपकी सिफ़ारिश (शफ़ाअत) के बग़ैर तौबा ही कुबूल नहीं होती, माफ़ी तो दूर रही। चुनान्चे ज़िन्दगी मुबारक में भी और बाद ज़ाहिरी ज़िन्दगी के आज भी जो लोग मज़ार पाक पर हाज़िरी देते हैं इसी आयत के तहत शफ़ाअत के तलबगार होते हैं। क्योंकि आप हयातुन नबी (जिन्दा नबी) हैं। अगर कोई शख्स अगर खुद अपने ही वजूद में आपको हाज़िर व नाज़िर जान कर माफ़ी का तलबगार हो तो बहुत अच्छी बात है, क्योंकि अल्लाह तआला के फ़रमान के बमोजिब आप हमारे ही अन्दर मौजूद हैं-

وَاعْلَمُوْا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ

कुरआन का अर्थ, जान लो कि अल्लाह का रसूल तुममें है।

शेर आलम का हर जर्रा शीशा नज़र आता है।
हर शै में मुहम्मद का जल्वा नज़र आता है।।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا وَّ دَاعِيًا اِلَى
اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَ سِرَاجًا مُّنِيْرًا

(पारा 22, रुकू 3) ऐ नबी हमने आपको भेजा बना कर गवाह और खुशखबरी देने वाला और डराने वाला और दावत देने वाला तरफ़ अल्लाह के मेरे हुक्म से और आप हैं रोशन चिराग़) ऊपर लिखी आयत पर ग़ौर करने से कुछ अहम (जरूरी) बातें मालूम होती हैं और वह यह हैं। नबी के मानी ग़ैब की खबर देने वाला। शाहिद के मानी गवाह और गवाही देखने वाले की मानी जाती है न कि बे देखे की। इससे मालूम हुआ कि जो कुछ हुआ, हो रहा है और आगे होने वाला है सब कुछ अल्लाह तआला की अता से आपकी जानकारी में है। कोई चीज़ अव्वल, आखिर, ज़ाहिर और बातिन से

छुपी नहीं है जैसा कि अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता है।

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحَابِ الْفِيْلِ

अर्थ- क्या आपने न देखा कि आपके रब ने हाथी वालों से क्या मामिला किया। इस तरह आपको मुखातिब (पुकारने) से साफ जाहिर होता है कि अगरचे वाक्या फ़ील (हाथी) सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाइश से पहले का है मगर आप अपनी आँखों से उसको देख रहे थे। क्योंकि कोई शै इनकी ग़ैर नहीं है बल्कि उन्हीं के नूर से बनी है। यह कि आप (दाई) बुलाने वाले हैं अल्लाह की उसी के हुक्म से यानी अल्लाह को पहचानने वाले हैं। आप रोशन चिराग़ हैं यानी आपको कुल्ली तौर पर मारफत इलाही हासिल है। पस बुझे हुए चिराग़ रोशन चिराग़ ही से जलाए जाते हैं। यानी वह लोग जो ग़ैर आरिफ़ हैं (खुदा को न पहचानने वाले) हुजूर पाक से बैत (मुरीदी) के जरिया ही मारफ़त इलाही हासिल कर सकते हैं और फ़ना फ़िर रसूल होने ही से फ़ना फ़िल-लाह की मंजिल हाथ आ सकती है। यह आयत एक समन्दर है उसकी तशरीह एक क़तरे की तरह है और रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीफ जब खुदा खुद फरमाता है तो भला बन्दा क्या तारीफ कर सकता है।

69 **हज़रत मौलाना मुहम्मद हुसैन इलाहाबादी-**

शेर सुल्ताने रुसुल मब्दए कुल अहमदे मुरसल।
नूरेस्त हमा गरचे ब सूरत बशर आमद।।

अर्थ- रसूलों के सुल्तान कुल जहान के मब्दा (शुरू फ़रमाने वाले) अहमद भेजे गये सरतापा नूर आगरचे सूरते इन्सान में तशरीफ लाए।

पस जिसने मारफ़त इलाही हासिल कर ली वह हयातुन नबी (जिन्दा नबी) का राज़ हो गया।

हज़रत शाह अजीज उल्लाह सफ़वी-

शेर ऐ जमाले पाक तू ईमान मन।
जलवए हुस्ने तू नूरे जाने मन।।
या मुहम्मद या नबी या मुस्तफ़ा।
जुज़ तू न बुबद सूरते इरफ़ान मन।।

अर्थ- ए कि आपका जमाल पाक मेरा ईमान है और आपका जलवए हुस्न मेरी जान का नूर है। या मुहम्मद या नबी या मुस्तफ़ा जुज़ आपके मेरे लिए पहचान की कोई कोई सूरत नहीं है।

قُلْ يَاعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

(पारा, 24, रुकू, 3) (कह दीजिए ऐ मुहम्मद) ऐ मेरे बन्दो अगर तुम गुनाह कर बैठो तो अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद न हो तहक़ीक़ अल्लाह गुनाहों का माफ़ करने वाला है यकीनी वही है गुनाहों का माफ़ करने वाला और (मिहरबान) अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि ऐ नबी आप लोगों को अपना बन्दा कह कर पुकारें, इसलिए कि आप तो फ़ना हैं आपका इरशाद तो मेरा इरशाद है।

हज़रत मौलाना रूम-

शेर बन्दए खुद खाँद अहमद दर शाद।
जुम्ला आलम रा वखाँ कुल या इबाद।।

अर्थ- अहमद ने तमाम आलम को अल्लाह के हुक्म से अपना बन्दा फ़रमाया कि ऐ मेरे बन्दो)

फ़ाज़िल बरैलवी मौलाना अहमद रज़ा खान साहब-

70 *शेर* या इबादी कह के मुझको शाह ने।
अपना बन्दा कर लिया फिर तुझको क्या।।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ

(पारा 1, रुकू 13) ऐ ईमान वालो मत कहो राइना और कहो उनज़ुरना और सुनो काफ़िरों के लिए सख्त अज़ाब है) अल्लाह तआला को कतई मंजूर नहीं कि उसके महबूब की शान में अदना सी भी बे अदबी की जाये पस यह आयत बतौर तंबीह उतारी। राइना (रियायत कीजिए) को यहूदी खींच कर पढ़ते राईना (हमारे चरवाहे) और आपका मज़ाक उड़ाते थे। पस अल्लाह तआला ने मोमिनों को (राइना) कहने से मना कर दिया और सिखाया (उनज़ुरना) नज़र फ़रमाइए हम पर ताकि रसूल की शान में बे अदबी न हो। यह आयत उन लोगों के लिए बहुत बड़ी नसीहत है जो इससे बढ़ कर गुस्ताखियाँ करते रहते हैं। और रसूल अल्लाह की बराबरी या उनसे बढ़ जाने का दावा करते हैं।

मौलाना रूम-

शेर हमसरी बा अंबिया बरदाश्तन्द।
औलया रा हम्चू खुद पिन्दाश्तन्द।।

ईं जमीने पाक आँ शोरस्त व बद।
ईं फ़रिश्ता पाक व आँ देवस्त व दद।।

अर्थ- अंबिया से बराबरी करने पर तुले हैं और औलिया को अपने जैसा जानते हैं। यह जमीन पाक है और वह शोर और बदतर यह पाक फ़रिश्ता सिफ़त और वह शैतान और दरिन्दे।

يَآ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْ الَا تَرفَعُوْا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِ وَلَا تَجْهَرُوْالَهٗ بِا لْقَوْلِ كَجَهْرِبَعْضبكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَاتَشْعُرُوْنَ

(पारा, 26, रुकू, 13) ऐ ईमान वालो अपनी आवाज को नबी की आवाज पर ऊँची न करो और जिस तरह आपस में एक दूसरे से जोर-जोर से बातें करते हो वैसा न करो वर्ना तुम्हारे आमाल बरबाद हो जायेंगे और तुमको इसका एहसास भी न होगा, इस आयत के नुजूल (उतरने) क सबब यह है कि हजरत कैस रज़ी अल्लाह अन्हु सहाबी ऊँचा सुनते थे और हुजूर अकरम तल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने ज़ोर से बोलते थे पस अल्लाह तआला ने तंबीह फ़रमाई। यह आयत भी बे अदबों, गुस्ताखों के लिए इब्रत है।

मौलाना रूम-

शेर अज़खुदा जोयम तौफ़ीके अदब।
बे अदब महरू माँद अज़ फ़ज्ले रब।।

अर्थ- अल्लाह तआला से अदब की तौफ़ीक माँगता हूँ कि बे अदब अल्लाह तआला की मिहरबानी से महरूम रह जाता है।

لَا تَجْعَلُوْا دُعَاءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا

(पारा, 18, रुकू, 15, ऐ लोगों रसूल का बुलाना ऐसा मत समझो जैसा कि तुममें का बाज़ बाज़ को पुकारता है,) यानी यह कि रसूल अल्लाह को अपने जैसा मत समझो। तुममें और उनमें जमीन आसमान जैसा फर्क है। (चिहनिस्बत. खाक रा बआलमे पाक) मिट्टी को आलमे पाक से क्या निस्बत।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَزِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ

(पारा, 9, रुकू, 18, अल्लाह हरगिज ऐसा न करेगा कि आपके उनके अन्दर होते हुए उन पर अज़ाब करे) इसलिए कि आप अल्लाह तआला की सिफ़त रहीमी के मज़हर हैं।

हज़रत अहमद जाम जिन्दापील

शेर पुश्तो पनाहे मा तुई इक्वालो जाहे मा तुई।
चूँ उज़्र खाहे मा तुई दरबार आख़िर कार हा।।

अर्थ- हमारे पुश्तोपनाह आप ही हैं और हमारा इक़्बाल व मर्तबा भी आप ही हैं और आप ही हमारे हर काम में उज़्र ख़ाह हैं।

يَاأَيُّهَاالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ إِذَادَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ
وَعْلَمُوْ اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗ إِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝

(पारा 9, रुकू 17, ऐ ईमान वालो जब बुलाएँ तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल तो हाजिर हो जाया करो कि जिन्दा करे तुमको और जान लो कि तहक़ीक़ अल्लाह फिर रहा तुम्हारी सूरत और दिल के दरमियान और तुम्हारा हश्र अल्लाह ही साथ होगा) इस आयत के नाज़िल होने की वजह यह है कि अबू सईद इब्न मुअल्ला सहाबी नमाज़ पढ़ रहे थे कि रहमत आलम ने आवाज दी और वह कुछ देर से आए। पस यह आयत उतरी कि तुम किसी भी हालत में हो जब बुलाएँ अल्लाह के रसूल तो हाज़िर हो जाया करो इसलिए कि वह तुमको हयात अबदी हमेशा की जिन्दगी बख़्शेंगे।

मौलाना रूम-

शेर कुल तआलौ, कुल तआलौ ! गुफ़्त हई।
ऐ सतूराने सतीज़ह रगो पै।।

قُلْ تَعَالَوْ اقُلْ تَعَالَوْا اكَفْتَ حَيْ

अर्थ- नबी की ज़बान से तुम्हें (हई) (जिन्दा रहने वाला यानी खुदा) पुकार रहा है मगर ऐ इन्सान नुमा बैलो तुम्हारी रग और पट्ठे सुस्त पड़ चुके हैं।

اِنَّا اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ
وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝

(पारा 26, रुकू 9) हमने आपको शाहिद (गवाह) मुबश्शिर (ख़ुशखबरी सुनाने वाला) और नज़ीर (डराने वाला) बना कर भेजा ताकि लोग ईमान ले आएँ अल्लाह पर

और उसके रसूल पर और आपकी ताज़ीम और तौक़ीर करें और सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बयान करें, पस ताज़ीम के लिए रसूल अल्लाह के मरतबों का जानना अज़बस जरूरी है वरना रसूल पाक के क़ौल के मुताबिक काफ़िर हो जायेगा।

مَنْ اَهَا نَنِیْ فَقَدْ اَهَانَ اللّٰهَ وَمَنْ اَهَانُ اللّٰهَ فَقَدْ كَفَرُ

अर्थ- हदीस, मेरी तौहीन अल्लाह की तौहीन है और अल्लाह की तौहीन कुफ्र है) पस इस आयत का हासिल अदब और ताज़ीम व मुहब्बत रसूल है। और इश्क रसूल ही मारफ़त इलाही का जीना है, क्योंकि वह खुद से फ़ानी और अल्ला की ज़ात से बाकी थे।

हज़रत शेख़ सादी-

शेर या साहबल जमाल व या सैयदल बशर।
मिवं वजहकल मुनीर लक़द नैवरल क़मर।।
लायुमकिनुस-सनाआ कमा काना हक़क़हु।
बाद अज़ खुदा बुज़ुर्ग तुई क़िस्सा मुख्तसर।।

अर्थ- ऐ हुस्नो जमाल वाले और ऐ इन्सानों के सरदार, आपका चिहरा मुबारक मिस्ल चाँद के रोशन है। मुमकिन नहीं कि जो हक़ है उसके एतिबार से आपकी तारीफ़ हो सके, अल्लाह तआला के बाद आप ही का मरतबा है यह मुख्तसर सी तारीफ है।

لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِیْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ

(पारा 14, रुकू 5 आपकी जान की क़सम यह लोग अपनी खुदी के नशे में बहक रहे हैं) यानी यह लोग आपको पहचानते नहीं इसलिए गुस्ताख़ी करते हैं। ऐसे गुमराहों की बातों का असर न लीजिए। अल्लाह तआला को किस क़दर अपने महबूब की ख़ातिर मंजूर है। बद बातिनों के इबरत का मुक़ाम है।

मौलाना रूम-

शेर गूश बाज़े ज़ीं तअलौहा कर्रस्त।
हर सुतूरे रा अस्तबले दीगरस्त।।

अर्थ- बाज़ों के कान आपकी आवाज़ सुनने से बहरे हैं क्योंकि हर बैल के रहने की जगह अलग होती है।

وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗ اِنَّا اِلَى اللّٰهِ رَاغِبُوْنَ ۝

74 (पारा 10, रुकू 13, और क्या अच्छा हो कि वह राज़ी होते उस चीज़ से कि दी है उनको अल्लाह ने और उसके रसूल ने और कहते कि काफ़ी हमको अल्लाह जल्दी देगा अल्लाह हमको अपने फज़्ल से और उसका रसूल तहक़ीक़ हम अल्लाह ही की तरफ़ रगबत करने वाले हैं) आयत के नाज़िल होने का सबब यह है कि एक मौक़े पर जब आप माल ग़नीमत (दुश्मन का लूटा माल) बाँटने जा रहे थे हरक़ूस बिन जहीर ने हुजूर पाक से कहा कि इन्साफ़ से बाँटियेगा। रहमत आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यह बात गराँ हुई। और हज़रत उमर ने तलवार मियान से निकाल कर हरक़ूस की गरदन पर रख दी और कहा या रसूल अल्लाह आप हुक्म फ़रमाएँ तो मैं इस मुनाफ़िक और बेदीन को कत्ल कर दूँ। लेकिन अल्लाह के रसूल ने नूर नबूवत से देख लिया और फ़रमाया कि आइन्दा इसकी नस्ल से एक ऐसी जमाअत पैदा होगी जो जाहिरी परहेजगारी के लिहाज से बढ़ी होगी मगर ईमान यानी इश्क और अदब रसूल उनके दिलों में न होगा। ईमान उनके दिलों से कमान से तीर की तरह निकल जायेगा। पस इस आयत से मालूम हुआ कि अल्लाह के रसूल अताए इलाही से मुख्तार कुल हैं जिसको चाहें दें या न दें जैसा कि हदीस पाक में है।

اَللّٰهُ مُعْطِیٌ وَاَنَا قَاسِمٌ

अर्थ- अल्लाह अता करता है और मैं बाँटता हूँ।

हाजी इम्दाद उल्लाह महाजिर मक्की-

शेर जहाज़ उम्मत का हक़ ने कर दिया है आपके हाथों।
अब चाहे तुम डुबाओ या तराओ या रसूल अल्लाह।।

وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ

(पारा 4, रुकू 1) कैसे इन्कार करोगे तुम हालाँकि पढ़ी जाती है तुम पर
75 अल्लाह की आयतें और तुममें अल्लाह का रसूल मौजूद है) पस मालूम हुआ कि अपनी खुदी के साथ कुरआन का पढ़ना बे सूद है उसका असली मतलब कुछ समझ में न आएगा, और अगर हुजूर को अपने अन्दर मौजूद यक़ीन करके पढ़ा जायेगा तो फ़ाएदा होगा क्योंकि हम उन्हीं के नूर से हैं।

हजरत अहमद जाम-

शेर नूरे दिले आदम तुई कामे हमा आलम तुई।
हर खस्ता रा मरहम तुई ऐ दर्द दिलहा रा दवा।।

अर्थ- आदम के दिल का नूर और तमाम आलम के काम बनाने वाले आप ही हैं ऐ दिलों के दर्द की दवा और जख्मों के लिए मरहम आप ही हैं।

हज़रत खाजा अजमेरी-

शेर दर जाँ चु कर्द मन्जिल जानाने मा मुहम्मद।
सद दर कुशाद दर दिल अज़ जान मा मुहम्मद।।

अर्थ- मेरे महबूब ने जब से मेरी जान में जलवागरी की है तो तमामी परदे दूर हो गये हैं।

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَا اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۝

(पारा 5, रुकू 8 और जिसने रसूल की इताअत की तहक़ीक़ की उसने अल्लाह की इताअत की और जो इस बात से फिरा पस नहीं भेजा आपको उसका निगहबान) रसूल अल्लाह ने फ़रमाया। कि मोमिन की आँख, कान, हाथ, पैर वगैराह खुदा को पहचान्ने के बाद अल्लाह का हो जाता है यानी खुद से फ़ानी और अल्लाह की जात से बाकी हो जाता है। तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो सरापा नूर है और जात इलाही में बाकी तो फिर उनकी इताअत अल्लाह की इताअत कैसे न हो।

हज़रत आरिफ़ सफ़ी इलाहाबादी-

शेर अहद और अहमद में बताओ फ़र्क़ क्या देखा।
फ़क़त एक मीम का परदा उठाने पर सफ़ाई है।।

وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ

(पारा 9 रुकू 16 और नहीं फेंका था जिस वक़्त फेंका था तूने व लेकिन अल्लाह
76 ने फेंका था) जो कंकरियाँ आपने कुफ्फार मक्का पर फेंकी थीं अल्लाह तआला फरमाता है कि वह कंकरयाँ मैंने फेंकी है। पस साबित हुआ कि हुजूर पाक खुद से फ़ानी और अल्लाह से बाक़ी है। उनका सुनना, देखना, बोलना वगैरह अल्लाह ही का है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ

(पारा 26, रुकू 9 जो लोग आपके हाथ पर बैत (इक़रार) करते हैं वह दरअसल मुझसे बैत करते हैं अल्लाह का हाथ उनके हाथों पर है) इसलिये कि आप सरापा नूर हैं यह अल्लाह का तिलस्म है कि आपको सूरते इन्सानी में भेजा। आपकी परछाई तक जमीन पर न पड़ती थी।

हज़रत शाह न्याज़ अहमद बरैलवी-

शेर हक़ अन्दर शाने तश्बीही मुहम्मद नाम खुद खाँदा।
मुहम्मद ग़ैरे हक़ न बुवद बहुक्मे जौके़ इरफ़ानी।।

अर्थ- अल्लाह सूरत के एतिबार (शान तस्बीह में) से अपना नाम मुहम्मद रखा, और मारफ़त के एतिबार से मुहम्मद ग़ैर हक़ नहीं है।

وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنَافِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ

(पारा 28, रुकू 13 इज़्ज़त अल्लाह के लिए है और उसके रसूल के लिये, और मोमिन के लिए है, व लेकिन मुनाफ़िक नहीं जानते) रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी जात से फ़ानी और अल्लाह की ज़ात से बाकी हैं, और मोमिनीन बैत (मुरीदी) के ज़रिया रसूल में फ़ानी होकर अल्लाह की जात में बाक़ी है। पस जिस तरह लकड़ी आग में जल जाने के बाद उसमें और आग में कोई फर्क बाकी नहीं रहता। इसी तरह अल्लाह में रसूल और मोमिन फानी है। और जो उनके मरतबे को नहीं जानता उनको अल्लाह मुनाफ़िक़ (नकली मुसलमान) फ़रमाता है। इसीलिए कि जब वह रसूल और मोमिन ही को आरिफ़ बिल्लाह (अल्लाह वाले) न जानेंगे तो वह खुद कैसे आरिफ़ हो सकते हैं। क्योंकि पैदाइश का असली मक्सद मारफ़त इलाही है। और यह ही हासिल न हुआ तो दीन का तकमिला (पूरा होना) और नेमतों का खात्मा कैसे होगा। कुरआन में है।

77

اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ

अर्थ- मैंने आप पर (ऐ, मुहम्मद) दीन का तकमिला और नेमतों का खात्मा कर दिया।

हज़रत मख्दूम अलाउद्दीन अहमद साबिर कल्यरी-

शेर इमरोज़ शाहे शाहाँ मिहमाँ शुदस्त मारा।
जिब्रील बा मलाइक दरबाँ शुदस्त मारा।।
अहमद बहिश्तो दोज़ख बर आशिकाँ हरामस्त।
हर दम रज़ाए जानाँ रिज़्वाँ शुदस्त मारा।।

अर्थ- आज बादशाहों के बादशाह हमारे मेहमान हुए हैं और जिब्रील फ़रिश्तों के साथ हमारे दरबान हुए हैं। ऐ अहमद आशिकों पर जन्नत और दोज़ख हराम है और जानाँ (महबूब) की मरज़ी हमारी हर दम रिज़्वान (खादिम) है।

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

(पारा 3, रुकू 12 जो लोग अल्लाह की मुहब्बत के दावेदार हैं आप (ऐ मुहम्मद) उनसे कह दीजिए कि वह आपकी पैरवी करें, अल्लाह उनसे मुहब्बत करने लगेगा, और वह तुमको तुम्हारे गुनाह बख्श देगा वह बड़ा ही माफ़ करने वाला मेहरबान है। पस
78 मालूम हुआ कि अल्लाह रज़ा (राज़ी होना) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रज़ा में छुपी है और उनका इश्क और पैरवी हमारे लिए मग़फ़िरत (गुनाहों की माफ़ी) का सबब है। पस सच्ची मुहब्बत का तक़ाज़ा है कि जिस तरह लैला की तलब पर सच्चे मजनूँ ने अपने गोश्त के टुकड़े काट कर दे दिए और झूठे मजनूं कानों पर हाथ रख कर भागने लगे। अगर रसूल से इश्क है तो उनकी शरीअत और अहकाम की पैरवी करनी चाहिए और जब सच्चा इश्क़ होगा तो हदीस पाक के मुताबिक इश्क़ वह आग है जो माशूक़ के सिवा सबको जला देती है।

اَلْعِشْقُ نَارٌ یَّحْرِقُ مَاسِوَی الْمَحْبُوْبُ

बन्दा रसूल में फ़ानी होकर अल्लाह की ज़ात में बाक़ी हो जाता है और मंज़िल को पा लेता है।

शेर खुदा खुद आप आता है खरीदारों की सूरत में।
मिरे यूसुफ़ का जब सौदा सरे बाज़ार होता है।

जब शमए मुहम्मदी रोशन हो जाती है तो खुदा खुद जो उस शमा का आशिक़ है मौजूद हो जाता है।

हज़रत खाजा मुईन उद्दीन अजमेरी-

शेर मुईं जे़ नामो निशाँ दरगुज़र कि दर रहे इश्क़।
गुलामिए सगे कूयश तुरा बस अस्त लक़ब।।

अर्थ- ऐ मुईन मानो निशान की मंजिल से गुज़र जा कि इश्क़ के रास्ते में माशूक़ की गली के कुत्ते का लक़ब काफ़ी है।

हजरत जामी-

शेर बसिदको सफ़ा गश्त बेचारा जामी।
गुलामे गुलामाने आले मुहम्मद।।

अर्थ- जामी सच्चाई और दिल की सफ़ाई के साथ आले मुहम्मद के गुलामों का गुलाम बन गया।

عَالِمُ الْغَیْبِ فَلَا یُظْهِرُ عَلٰی غَیْبِهٖ اَحَداً اِلَّا مَنِ ارْتَضٰی مِنْ رَّسُوْلٍ

(पारा, 29, रुकू, 12, गैब का जानने वाला अल्लाह है, पस किसी को अपने गैब

79 की ख़बर नहीं देता मगर उस पैग़म्बर को जिसको क़बूल कर लेता है) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इल्म ग़ैब साबित है कि आप अल्लाह के महबूब हैं। यकीनन अल्लाह ने आपको इल्म ग़ैब दिया है जो लोग इन्कार करते हैं वह यकीनन क़ुरआन का इन्कार करते हैं।

मौलाना रूम-

शेर दस्त पीर अज़ ग़ायबाँ कोताह नीस्त।
दस्त अ ज़ुज़ कब्जाए अल्लाह नीस्त।।

अर्थ- पीर का हाथ ग़ायबों से कोताह नहीं है उसका हाथ अल्लाह का हाथ है।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۰

(पारा 4, रुकू 9 और नहीं है कि अल्लाह तुमको अपने ग़ैब से आगाह करे लेकिन अपने मक़बूल पैग़म्बरों में से जिसको चाहे) इस आयत से साफ़ ज़ाहिर है कि अल्लाह तआला ने अपने महबूब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इल्म ग़ैब अता फ़रमाया है इसलिए कि आपसे ज्यादा कौन महबूब व मक़बूल है। जब कि अल्लाह तआला का फ़ज़्ल जमादात व हैवानात को खबीर (खबर वाला) और दाना बना देता है।

मौलाना रूम-

शेर हर जमादी रा कुनद फ़ज़लश खबीर।
आक़िलाँ रा करदा क़हरे अ ज़रीर।।

अर्थ- उसका फ़ज़्ल जमादात को ख़बीर बनाता और उसका क़हर अक़लमन्दों को अन्धा कर देता है।

وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَالَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ۰ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيماً

पारा 5, रुकू 14 और उतारी अल्लाह ने आप पर किताब और हिकमत और सिखाया आपको जो आप न जानते थे और अल्लाह का आप पर बड़ा फ़ज़्ल है) इस
80 आयत में अल्लाह तआला ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हर किस्म की ग़ैब की बातें जाहिर फ़रमाने की तस्दीक़ कर दी। लिहाजा आप आलिमुल ग़ैब साबित हुए।

हज़रत शाह अज़ीज उल्लाह-

शेर अहमदे पाक तुई साहबे लौलाक तुई।
आसियाँ रा ब करम मायाए नाज़ आमदी।।

अर्थ- आप ही अहमद पाक और खल्क़ की पैदाइश का सबब हम गुनहगारों के लिये अपने करम से मायए नाज़ हैं (क़ाबिज नाज़)-

शेर खिलवते लाहूत रा शाहिद तू बूदी मरहबा।
ता शुदी अज़ खुद तिही व पुर अज़ असरार आमदी।।

अर्थ- मरहबा लाहूत की मंज़िल में आप ही शहिद (मौजूद) थे खुद से फ़ानी और भेदों से भरे हुए तशरीफ़ लाए।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا مُّبِينًا ۝

पारा 6, रुकू 4 ऐ लोगों तुम्हारे पास आई दलील तुम्हारे रब के पास से और उतारा तुम पर नूर रोशन) मालूम हुआ कि अल्लाह के अस्बात (सुबूत) के लिए आप हुज्जत बन कर आए और सरापा नूर है।

शाह अज़ीज़ उल्लाह-

शेर दर अजल मौजूद बूदी हमचू अनवार आमदी।
वज़ अदब मक़्सूद हस्ती ता ब इज़्हार आमदी।।

अर्थ- अज़ल (रोज़ अव्वल) में आप मौजूद थे मिस्ल नूर के तश्रीफ़ लाए अबद तक आप ही की हस्ती मक़्सूद थी जाहिर हुई।

शेर रोशन अज़ नूर तू शुद चूँ रोज़ नूरानी दो कौन।
बा जमाले शमा आशा दर शबे तार आमदी।।

अर्थ- आपके नूर से दोनों जहान रोशन है, मिस्ल चिराग़ के आपका जमाल अंधेरी रात में आया।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الرَّسُولُ بِالْحَقِّ مِن رَّبِّكُمْ فَآمِنُوا خَيْرًا لَّكُمْ

(पारा 6, रुकू 3) ऐ लोगो तहक़ीक़ आया तुम्हारे पास रसूल साथ हक़ के पस ईमान लाओ तुम्हारे लिये बेहतर होगा) जानना चाहिए कि अल्लाह के नामों से एक नाम हक़ भी है।

81 **शेर** चू यार आमद जे खिलवत खाना बेरूँ।
बहमूँ नक़्श दरूँ बेरूँ बर आमद।।

अर्थ- जब यार ग़ैब से ज़ाहिर हुआ तो वही नक्श जो अन्दर था बाहर आ गया।

हज़रत शाह अज़ीज़ उल्लाह सफ़्वी-

शेर ऐ कि बा नूरे खुदा ग़ाजा तराज़ आमदई।
खाजए आलमी व बन्दा नवाज़ आमदई।।
कुल हुवल्लाहु अहद हक़ ब ज़बानत गुफ़्तई।
अल्लाह अल्लाह ब अजब राज़ो न्याज़ आमदई।।

अर्थ- ऐ कि आप नूर ख़ुदा का ग़ाज़ा मलकर आए, आलम के मालिक और बन्दा नवाज़ बन कर आए। आपकी ज़बान से खुद हक़ ने कहा कुल हुवल्लाहु अहद, अल्लाह अल्लाह अजब राज़ो न्याज़ के साथ तशरीफ़ लाए।

قَدْ جَآءَكُمْ مِنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتَابٌ مُّبِيْنٌ

(पारा 6, रुकू 7) बित-तहक़ीक़ आया तुम्हारे पास नूर अल्लाह की तरफ़ से और रोशन किताब) मासूम हुआ नूर मुस्लक़ पर हिजाब बशरी डाल कर हमारी हिदायत को भेजा। आफ़्ताब (सूरज) नूर मुहम्मदी की एक अदना झलक है मगर उसमें आँख मिलाना दुश्वार है, मगर जब उस पर एक हल्का-सा बादल आ जाता है तो नज़र ठहर जाती है। इसी तरह आप नूरी शक्ल में तशरीफ़ लाते तो आप से फ़ैज़ पाना नामुमकिन हो जाता। इसीलिए शक्ले नूरी पर एक लतीफ़ सा हिजाब बशरी डाल कर भेजा कि लोग फ़ैज़ पा सकें।

हज़रत इराक़ी-

शेर ख़ुशा चश्में कि रुख्सारे तू बीनद।
खुशा जाने कि जानानरा तू बाशी।।
हमा खूबीए वहदत बाशद ऐ दोस्त।
दराँ खाना कि मेहमानश तू बाशी।।

अर्थ- वह आँख कितनी मुबारक है कि जो आपके जमाल को देखती है, कितनी मुबारक वह जान है कि जिसकी जान आप ही हैं। जिस घर में आप मेहमान हों तमामी यगाँगत की खूबियाँ ऐ दोस्त वहाँ मौजूद है।

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ

82 (पारा 16, रुकू 3) आप कह दीजिए कि मैं बशर हूँ मिस्ल तुम्हारे मेरी तरफ़ वही (अल्लाह का पैग़ाम) की जाती है तुम्हारा माबूद तो एक वाहिद माबूद है) वाज़िह हो कि अल्लाह ने खुद नहीं फ़रमाया कि आप बशर हैं बल्कि हुज़ूर को हुक्म हुआ कि

आप फ़रमा दें कि मिस्ल तुम्हारे बशर हूँ न कि असल। मिस्ल कभी असल नहीं होता है जैसा कि अल्लाह तआला खुद फ़रमाता है।

اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ

(पारा 18, रुकू 11) अल्लाह नूर है ज़मीन और आस्मान का, उसके नूर की मिसाल ऐसी है जैसे कि ताक कि उसमें चिराग़ है) इस मिसाल से जाहिर है कि ताक़ के चिराग़ को अल्लाह के नूर से कोई निस्बत नहीं हो सकती है ख़ाक (मिट्टी, ज़मीन) को आलमे पाक से क्या निस्बत, यह महज़ मिसाल है न कि हक़ीक़त इसी तरह अल्लाह ने निस्बत मिस्ल बशर फ़रमाया वरना आप नूर हैं। तश्बीह (रंग) तन्ज़ीह (बेरंग) नुमा है (दिखाने वाली है)।

हज़रत मौलाना मुहम्मद हुसैन इलाहाबादी-

शेर सुलताने रुसुल मब्दए कुल अहमदे मुर्सल।
नूरेस्त हमा गर चे बसूरत बशर आमद।।

अर्थ- रसूलों के सुलतान कुल की बुनियाद मुहम्मद सरापा नूर हैं बज़ाहिर इंसानों की शक्ल में तश्रीफ़ लाए।

तो मालूम हुआ कि कोई वजह थी कि अल्लाह पाक ने आपकी निस्बत बशर फ़रमाने को आपसे कहा। वजह यह थी कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मोजिज़ात ज़ाहिर होते थे मसलन उंगलियों के इशारे से चाँद के दो टुकड़े करना, डूबा सूरज पलटना वग़ैराह-वग़ैराह, लिहाजा इस ख्याल ने कि कहीं लोगों को आपके ऊपर अल्लाह होने का गुमान न होने लगे जैसे दूसरी उम्मतें अपने नबियों के
83 बारे में करने लगी थीं। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने नमरूद बादशाह से कहा था कि अगर तुम खुदा हो तो बजाये पूरब के सूरज को पश्चिम से निकाल दो। यह बात मशहूर चली आ रही थी। जब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह मोजज़ा हज़रत अली की नमाज कज़ा होने की सूरत में ज़ाहिर हुआ तो लोगों को आपकी तरफ यकीन उलूहियत (अल्लाह) पक्का होने का अन्देशा था, लिहाजा खुदा को यह मंजूर न था कि लोग अल्लाह के महबूब को ख़ुदा मान कर बुतपरस्ती शुरू कर दें, इसलिए ज़रूरत थी कि उसकी तरदीद (इन्कार) की जाये। लिहाजा हुज़ूर ने फ़रमाया कि अल्लाह तो लाहद और ला शक्ल है और मैं तो हद और शक्ल में हूँ और हद व शक्ल को ख़ुदा नहीं कह सकते और न तो उसे सज्दा ही किया जा सकता है। जैसे कि लहर हर चन्द कि दरया से जुदा नहीं है लेकिन उसको दरिया नहीं कह सकते। लिहाज़ा उलूहियत और वाहिदियत (एक होना) कुल पर है न कि उसके जाहिर और

निशनियों पर। आँहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चूँकि खुद फ़ानी और अल्लाह की ज़ात से बाकी है। लिहाज़ा उनको फ़ना फ़िल्लाह तो कह सकते हैं लेकिन अल्लाह नहीं कह सकते। लेकिन अफ़सोस कि आपके मरातिब से नावाक़िफ़ आपको अपने जैसा बशर, मज़बूर महज़, ग़ैब से बेख़बर समझ बैठे और आपके इस फ़रमान की ज़द में आ गए।

مَنْ اَهَا نَنِیْ فَقَوْ اَهَانَ اللّٰہَ وَمَنْ اَهَانَ اللّٰہَ فَقَدْ کَفَرَ

अर्थ- जिसने मेरी तौहीन की उसने अल्लाह की तौहीन की और जिसने अल्लाह की तौहीन की वह काफ़िर हो गया।

हज़रत मौलाना रूम-

शेर हमसरी बा अम्बिया बरदाश्तन्द।
औलिया रा हम चु खुद पिन्दाश्तन्द।।
गु.फ्ताईनक माबशर ईशाँ बशर।
मावईशाँ बस्तए खाबेमो खर।।
ईं न दानिस्तन्द ईशाँ अज़ अमा।
हस्त फ़रक़े दरमियाने मुन्तहा।।
ईं खुरद गरदद पलीदी ज़ू जुदा।
वाँ खुरद गरदद हमा नूरे खुदा।।
ईं ज़मीने पाक व आँ शारस्तोबद।
ईं फ़रिश्ता पाक व आँ देवस्तोदद।।

अर्थ- नबियों से बराबरी की, वलियों को खुद जैसा जाना। कहा हम भी और वह भी बशर हैं, यकसाँ खाते और सोते हैं। अपने अन्धेपन की वजह से यह न समझा कि दोनों के बीच बहुत फ़रक है। ये खाये तो गन्दगी निकले और वह खाते हैं तो सब नूरे खुदा हो जाता है। यह पाक ज़मीन है और वह बन्ज़र और बुरी, यह पाक फ़रिश्ता और वह शैतान दरिन्दा है। पस हुज़ूर पाक में वह कुदरत थी कि ज़ान्दार तो ज़ान्दार बेजान चीज़ों ने भी कलिमए शहादत पढ़ा। इसलिए कि नबी के अन्दर रूहानी ताक़त और ग़ैब का जानना जरूरी है। अबूजिहल भी यह जानता था कि नबी रूहानियत का मालिक होता है।

मौलाना रूम-

शेर संगहा अन्दर कफ़े बूजिहल बूद।
गुफ़्त कि ऐ अहमद बुगोईं चीस्त ज़ूद।।

गर रसूली चीस्तदर दस्तम निहाँ।
चूँ खबरदारी ज़े राज़े आस्माँ।।

अर्थ- अबूजिहल की मुट्ठी में कंकरियाँ थीं। कहा ऐ अहमद जल्दी बताओ यह क्या है? अगर रसूल हो तो बताओ मेरी मुट्ठी में क्या है जबकि तुम आसमानों के भेद जानते हो।

आपने फ़रमाया मैं बताऊँ कि तेरी मुट्ठी में क्या है? या वह चीज खुद बताए कि मैं कौन हूँ ? चुनांचे कंकरियाँ कलिमए शहादत पढ़ती हुई मुट्ठी से बाहर निकलीं।

85 अफ़सोस कि बाज़ मुसलमानों को अबूजिहल के बराबर भी अक़ीदत और अक्ल नहीं है। नबी के मानी हैं ग़ैब की खबर देने वाला। नबी तो क्या वली में यह कुदरत पैदा हो जाती है।

मौलाना रूम-

शेर- औलिया रा हस्त कुदरत अज़ इलाह।
तीर जस्ता बाज़ मी आरन्द ज़े राह।।

अर्थ- औलिया अल्लाह को अल्लाह की तरफ़ से यह कुदरत हासिल है कि फेंका हुआ तीर वापस लाते हैं। औलिया की कुरआन फ़रमाता है।

سَخَّرَ لَكُمْ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ

अर्थ- हमने उनके लिये ज़मीन आस्मान और सब कुछ मुसख्खर (कब्जे) कर दिया है। वली खुद से फ़ानी और अल्लाह की ज़ात से बाकी होता है। और अल्लाह का आईना हो जाता है।

शेर आईना ज़ात हक़ ने रखा सामने।
फिर उसी शक्ल का दूसरा हो गया।।

अगर वली ग़जब में आता है तो अल्लाह भी ग़जब में आ जाता है, वह राज़ी होता है तो अल्लाह भी राज़ी हो जाता है।

शेर ज़िल में आकिस छुप गया मुफ़्त अक्स रुस्वा हो गया।
आप होकर मुबतिला बदनाम करवाया मुझे।।

وَمُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْ م بَعْدِ اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ

(पारा 28, रुकू 9) और खुशखबरी देने वाला उस रसूल का कि मेरे बाद जो आयेगा उसका नाम अहमद है। जानना चाहिए कि इस्लाम मारफ़ा (Proper Noun)

को क़िस्मों में से एक ऐसा होता है कि उस नाम के होने की दूसरी वजह नहीं होती जैसे ज़ैद, बकर वग़ैराह। दूसरा वह कि उस नाम के रखने की वजह होती है जैसे जुमा से जुमेराती, शुबरात से शुबराती, रमजान से रमजानी वग़ैरा।

अल्लाह तआला ने अपना नाम हमीद[1] और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम अहमद यानी हम्द (तारीफ़) के क़ाबिल आपके ज़ाहिर होने से पहले ही नबियों के ज़रिये लोगों को जता दिया था। लिहाजा हमीद और अहमद हक़ीक़ी और मुसल्लम (माने हुए) नाम हैं। और फ़ाइल (सबजेक्ट) फ़ईल मुतलक़ और फ़ाइल अफ़अल मुक़ैयद व तफ़्सील में सिर्फ़ फजीलत ही का फ़र्क होता है। और आलिमुल गैब व शहादत (छुपे और जाहिर का जानना) हम्द[2] हमीद है। लिहाजा जो बएतिबार हम्द ब मरतबए हमीद मुतलक़ आलिमुल गैब व शहादत होगा बएतिबार हम्द ब मरतबए अहमद आलिमुल ग़ैब व शहादत बक़ाइदए इल्मी जरूर होगा। न कि उसका उल्टा जाहिलुलगैब व शहादत मालूम हुआ कि ज़ात क़दीम मौसूफ़[3] बिलकुवा[4] ही बमरतबए अव्वल मुसम्मा[5] ब हाहूत में जली[6] मुतलक[7] मौसूम[8] ब हमीद व मौसूफ़ बउम्महात[9] सिफ़ात, इल्म, इरादा, कलाम, कुदरत, समाअत[10] बसारत[11] और हयात से अलीम[12], मुरीद[13], कलीम[14], कदीर[15], समी[16], बसीर[17] व हई (जिन्दा) महज और वही ब मरतबए सानी (दूसरी) मुसम्मा ब लाहूत में अपने सिफ़ात को फेल (काम) अजल्ला (साफ रोशन) कर हमीद से अहमद, अलीम से आलम[18] बहुत ज्यादा जानने वाला मुरीद अरीद[19], कलीम से अकलम[20], क़दीर से अक़दर[21], समी से असमा[22], बसीर से अब्सर[23], हई से अहैया[24], फेलन है। जैसे कि आफ़ताब (सूरज) कि दर मरतबए अव्वल अज़ रुए हरारत व हुरक़त (जलाना) व नूर जिली महज़ होता है। और वही ब मरतबए सानी शीशए आतशी में मुतजल्ला हो अजल्ला व अहरक़ व अनवर हो जाता है। इसी तरह आफ़ताबे उलूहियत ही ब मरतबए लाहूत व अहद अजल्ला हमीद से अहमद अलीम से आलिमुलगैब व शहादत फेलन है। बात यह है कि जात ही ब मनजिलए लाहूत जिसको हक़ीकात मुहम्मदिया भी कहते हैं मुतलसम बशक्ल बशरी हो अरब शरीफ़ में बशान रसूल जहूर फ़रमाया।

صَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمُ عَلَيْكَ يَامُحَمَّدٍ مَّعْدَنِ الْجُودِ وَالْكَرَم

1.हमीद (जिसकी तारीफ़ की जाय) 2. हम्द (तारीफ़) 3. मौसूफ़ (जिसकी तारीफ़ की जाये) 4. बिलकुवा (कुदरत के साथ) 5. मुसम्मा (जात नाम वाला) 6. जली (रोशन) 7. मुतलक़ (बेक़ैद, आज़ाद) 8. मौसूम (नाम से) 9. उम्महात (गाऐं, बुन्याद्र) 10. समाअत (सुना) 11. बसारत (देखने की कूवत) 12. अलीम (जानने वाला) 13. मुरीद (इरादा करने वाला) 14. कलीम (बात करने वाला) 15. क़दीर (कुदरत वाला) 16. समी (सुनने वाला) 17. बसीर (देखने वाला) 18. आलम (बहुत ज्यादा जानने वला) ये सब अल्लाह तआला के नाम और सिफ़तें हैं। 19. अरीद, 20. अकलम, 21. अक्दर, 22. असमा, 23. अब्सर, 24. अहैया। ये सब इस्म तफ़जील यानी ऐडजेकटिव नाउन है।

अल्लाह तआला ने बहुत से मुक़ाम पर आपको नूर फ़रमाया है।

मौलाना रूम फ़रमाते हैं -

शेर चूँ मुहम्मद पाक बूद अज़ नारो दूद।
87 हर कुजाए कर्द वज्हुल्लाह बूद।।
शाह दीं रा म मिगर नादाँ ब तीं।
कीं नज़र कर्दस्त इब्लीसे लईं।।

शेर- यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आग, मिट्टी, माददियात से पाक हैं जिधर चेहरा किया अल्लाह का चेहरा था। ए बेवक़ूफ़ दीन के बादशाह को अपनी नादानी से माद्दा मत देख कि इस नज़र से इब्लीस मलऊन ने देखा। लिहाजा जिसने भी आपको बजाए नूर के माद्दा देखा वह मरदूद शैतान है।

शेर वही नूरे अज़ली जो गंजेनिहाँ था।
अयाँ अब मुतलसम ब शकले बशर है।।
जमाले इलाही का है नाम अहमद।
बशर ही के परदे में रब्बुल बशर है।।

मनजिले लाहूत एक गुँचा (कली) की तरह और मनजिले लाहुत यानी हकीकते मुहम्मदिया एक फूल की तरह है।

إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِن وَّرَآءِ الْحُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ

(पारा 26, रुकू 13) तहकीक कि जो लोग आपको घर के बाहर से पुकारते हैं अकसर उनमें से बे अक़्ल हैं)

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّىٰ تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ الرَّحِيمٌ ۝

(पारा 26, रुकू 13) और अगर वह सब्र करें यहाँ तक निकलें आप उनकी तरफ़
88 तो यह उनके लिए बेहतर होता, और अल्लाह बख़्शने वाला मिहरबान है) अल्लाह तआला को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात से किस क़दर प्यार है कि ज़रा सी बे अदबी गवारा नहीं, फ़रमाता और बे अदबों को तंबीह करता है।

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ ۝ مَآ أَنتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُونٍ ۝
وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مَمْنُونٍ ۝ وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ

(पारा 29, रुकू 3) क़सम है नून की क़लम की और जो तहरीर में आई अल्लाह के फज़्ल से आप मजनून नहीं हैं और आपके लिए बेहद सवाब है, और बेशक आप बड़े अख्लाक़ वाले हैं) शाने नुज़ूल! एक दिन वलीद मुँग़ैरा के बेटे ने आपको मजनून कह दिया तो आपको बहुत दुःख हुआ अल्लाह तआला ने आपकी तसल्ली के लिए यह आयत उतारी और क़सम खाकर आपको तस्कीन दी। नून से मतलब (जाते इलाही) कलम से मतलब हक़ीक़ते मुहम्मदिया है। इसलिए तमाम आलम का जहूर उसी से हुआ और यस्तुरुन (छुपा हुआ) से मतलब तमामी ज़हूर और मुमकिनात। हासिल यह कि अल्लाह तआला ने खुद अपनी और आपकी और तमाम आलम की क़सम खाई। और जलाल में आकर वलीद के दस ऐब खोल दिये।

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ بِنَمِيْمٍ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ
مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ

(पारा 29, रुकू 3) और उसकी बात न सुनो जो झूटी कसमें खाने वाला, जलील, खार, ताना मारने वाला, बड़ा चुग़लखोर, भलाई से रोकने वाला, हद से
89 बढ़ने वाला, सख्त गुनाहगार, सख्त दिल और उस पर ये कि हरामी है) और तो खराबी उसके अन्दर थी ही जिसे वह खुद भी जानता था मगर हरामी के बार में अपनी माँ से पूछा तो उसने घबरा कर मारे डर के सब कुछ बता दिया कि उसका बाप नामर्द था और बड़ा मालदार, उस माल को बचाने के लिए मैंने एक चरवाहे से नुतफ़ा लिया था। जानना चाहिए कि अल्लाह तआला को अपने महबूब की कितनी पासदारी मंजूर है।

शेर ईमान है जिसका नाम व हुब्बे रसूल है।
गर यह नहीं तो सारी इबादत फ़ुजूल है।।

❖ ❖ ❖

अध्याय-9

रसूल करीम की तारीफ़ औलिया अल्लाह की नज़र में

(1) हज़रत मुही उद्दीन इब्न अरबी अपनी किताब फुसूसुल हकम में लिखते हैं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सूरए अलहम्दु की पहली आयतों और सूरए बक़रह की आखिरी आयतों से मैं ही खास किया गया हूँ। और सूरए फ़ातहा (अलहम्दु) की पहली आयत यह है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ۝

अर्थ- (सब खूबियाँ अल्लाह को जो मालिक सारे जहान वालों का) पस इस आयत से रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम आलमे अरवाह (जानों) और अज्साम (जिस्मों) के जामे (जमा करने वाले) हुए। इसको रबूबियत (रब होना, मालिक) कहते हैं। ऊपर की आयत में इसी तरफ़ इशारा है। एक दूसरी आयत में आपके कंकरियों को फेंकने की निस्बत अल्लाह की तरफ़ की गई है।

وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى

अर्थ- (और नहीं फेंकी आपने (कंकरियाँ) व लेकिन अल्लाह ने) और यह रबूबियत उस वक़्त ख्याल में आ सकती है जब हर मुसतहिक़ (हकदार) को उसका हक़ अदा किया जाये और आलम के कुल जरूरत की चीजों का फ़ैजान (फैलाव) उसी से पाया जाये।
90 और यह बात पूरी कुदरत और सिफ़्त इलाहिया के बग़ैर मुमकिन नहीं है। इसी वास्ते उनको तमाम असमा (नामों पर हुकूमत हासिल है और उससे वह आलम में तसर्रुफ (दखल) करते हैं। हक़ीक़ते मुहम्मदिया को भी मारना, जिलाना, लुत्फ़, क़हर, रज़ा और तंगी और फ़राखी तमामी सिफ़ात हासिल हैं। ताकि वह आलम में और अपनी ज़ात में और बशरियत में भी तसर्रुफ कर सकें और उनका रोना औद दिलशिकस्ता होना और तंग दिल होना रबूबियत के खिलाफ नहीं क्योंकि वह आँहज़रत की जात का तक़ाज़ा था। और सिफ़ते बशरियत का जहूर था और आपके मरतबा के लिहाज से आसमान और जमीन में एक राई (सरसों) के दाना के बराबर भी कोई चीज़ आपके इल्म से छुपी नहीं है। हासिल कलाम यह कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रबूबियत आलम में सिफ़त

इलाही से थी। पस आपका इस आलम में तशरीफ़ लाना भी कमाल है। जैसे मेराज की रात में उरूज करना (बलन्द होना) आपका कमाल है।

(2) इमाम अहमद इब्न हज़र मक्की अपनी किताब जवाहरुल मुअज़्ज़म में तहरीर फ़रमाते हैं। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला के बड़े ख़लीफा हैं और रब के करम के खजाने हैं और सारी नेमतें हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथों में है जिसे चाहें दे दें।

(3) इमाम फख्रूद्दीन राज़ी तफसरी कबीर तीसरी जिल्द (किताब) में तहरीर फ़रमाते हैं। नबियों को खुदा ने इस क़दर इल्म मारफ़त दिया है कि हज़रत मख्लूक की अन्दुरनी हालत और उनकी जानों पर हुकूमत करते हैं और उनको ऐसी कुदरत दी है कि जाहिर पर बादशाहत करते हैं।

(4) हज़रत शेख अब्दुल हक़ मुहद्दिस दिहलवी अश्अतुल-लमआत में लिखते हैं। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हुकूमत इससे भी ज़्यादा है, मलक, मलकूत, जिन और इन्सान और सारे आलम रब की अता से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ब्जाए कुदरत में हैं और वह मुतवल्ली उमूर (मामिलात) ममलुकते इलाहिया और गुमाश्ताए (सुपुर्द किए गए) दरगाह इलाही हैं और तमाम कौन व मकान उनके सुपुर्द हैं।

(5) अल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल शवाहिदुल हक़ में लिखते हैं। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम देते भी हैं और मना भी करते हैं। साइलों (माँगने वालों) की हाजत ख़्वाइश (जरूरतें पूरी करना) फ़रमाते हैं और मुसीबतज़दों की मुसीबत दूर फ़रमाते हैं। और शफ़ाअत फ़रमाकर जिसको चाहेंगे जन्नत में दाखिल करायेंगे।

(6) इमाम अहमद बिन मुहम्मद खतीब क़स्तुलानी मबाहिब लदुन्या में लिखते हैं। मेरे माँ बाप उस शहिनशाह हक़ीक़ी पर कुर्बान जो उस वक़्त से बादशाह हैं जबकि आदम मिट्टी और पानी में थे। जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुछ चाह लें तो उसके खिलाफ मुमकिन नहीं और न कोई उसको रोक सकता है। हुजूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की कुन्नियत[1] अबुल कासिम हैं क्यों जन्नतियों को जन्नत बाँटते हैं।

(7) इमाम आज़म अबू हुनैफ़ा क़सीदए नोमान में लिखते हैं। या रसूल अल्लाह मैं आपकी देन और अता का उम्मीदवार हूँ और खिलक़त में आपके सिवा मेरा कोई नहीं है।

(8) हजरत शाह वली उल्लाह मुहद्दिस दिहलवी क़सीदा में लिखते हैं -

وَصَلّٰى عَلَيْكَ اللّٰهُ خَيْرَ خَلْقِهٖ   وَيَا خَيْرَ مَامُوْلٍ وَّيَا خَيْرَ وَاهِبِ

وَيَا خَيْرَ مَنْ يُّرْجٰى لِكَشْفِ رَزِيَّةٍ   وَمَنْ جُوْدُهٗ فَاقَ جُوْدَ السَّحَائِبِ

وَاَنْتَ مُجِيْرٌ مِنْ هُجُوْمٍ مُلِمَّةٍ   اِذَا انْشَبَّ فِي الْقَلْبِ شَرُّ الْمَخَالِبُ

1. कुन्नियत (Family Name)

अर्थ- तुम पर किबरिया का दरूद ऐ बेहतरीन कायनात। ऐ बेहतरीन उम्मीदगाह। ऐ बेहतरीन साहबे अता। और ऐ बेहतर उनसे जिन सबसे है मुसीबत के दूर होने की उम्मीद फ़ौकियत रखती है जूद (सखावत) बादल से सरकार की जूदो खा। सख्ती के हमलों से तुम्हीं दोगे पनाह ऐ शाह दीं जब दिल में पंजे डाल दे बदतर मुसीबत की बला।

(9) हाजी इम्दाद उल्लाह महाजिर मक्की-हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हाजिर, नाज़िर और मुख्तार कुल तसलीम करते हैं और हाजत रवाई के लिए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हर्फ़ निदा (या) के साथ मुखातिब करते हैं।

शेर जहाज़ उम्मत का हक़ ने कर दिया है आपके हाथों।
अब चाहे तुम डुबाओ या ताराओ या रसूल अल्लाह।।
हो आस्ताना आपका और इम्दाद की जबीं।
और इससे ज्यादा कुछ नहीं दरकार या रसूल अल्लाह।।

(10) अल्लामा अबू सेरी क़सीदा बुरदा में लिखते हैं। या रसूल अल्लाह दुनिया और आख़िरत आपकी सख़ावत से है और लौह व क़लम का इल्म आपके इल्म का एक हिस्सा है।

(11) मौलाना अबुल क़ासिम नानौत्वीं बानी मदरसा देवबन्द भी अपने दादा पीर (हाजी इमदाद उल्लाह) की पैरवी में सरकार दो आलम को निदा से पुकारने के साथ मदद के भी तालिब हैं।

शेर जो अम्बिया हैं आगे तिरी नबूवत के।
करे हैं उम्मती होने का या नबी इक़रार।।
तुफ़ैल आपके हैं कायनात की हस्ती।
बजा है कहिए अगर तुमको मबदउल आसार।।
करोरों जुर्म के आगे यह नाम का इस्लाम।
करेगा या नबी अल्लाह क्या यह मेरी पुकार।।
मदद कर ऐ करमे अहमदी कि तेरे सिवा।
नहीं है क़ासिमे बेकस कोई हामीकार।।

(12) मौलाना अशरफ़ अली थानवी (शमीमुत-तीब) (पृष्ठ 145)

शेर दस्तगीरी कीजिए मेरे नबी।
कशमकश में तुम ही हो मेरे वली।।
जुज़ तुम्हारे हैं कहाँ मेरी पनाह।
फौज़ कुलफ़त आ मुझपे ग़ालिब हुई।।
इब्न अब्दुल्लाह जमाना है खिलाफ़।
ऐ मेरे मौला खबर लीजे मेरी।।

(13) हज़रत मुल्ला जामी लिखते हैं-

शेर जहाँ रोशन अस्त अज़ जमाले मुहम्मद।
दिलम ज़िन्दा शुद अज़ विसाले मुहम्मद।।

खुशा चश्म कू बिनगर्द मुस्तफ़ा रा।
खुशा दिल कि दारद ख्याले मुहम्मद।।
बसिदक़ो सफ़ा गश्त बेचारा जामी।
गुलामें गुलामाने आले मुहम्मद।।

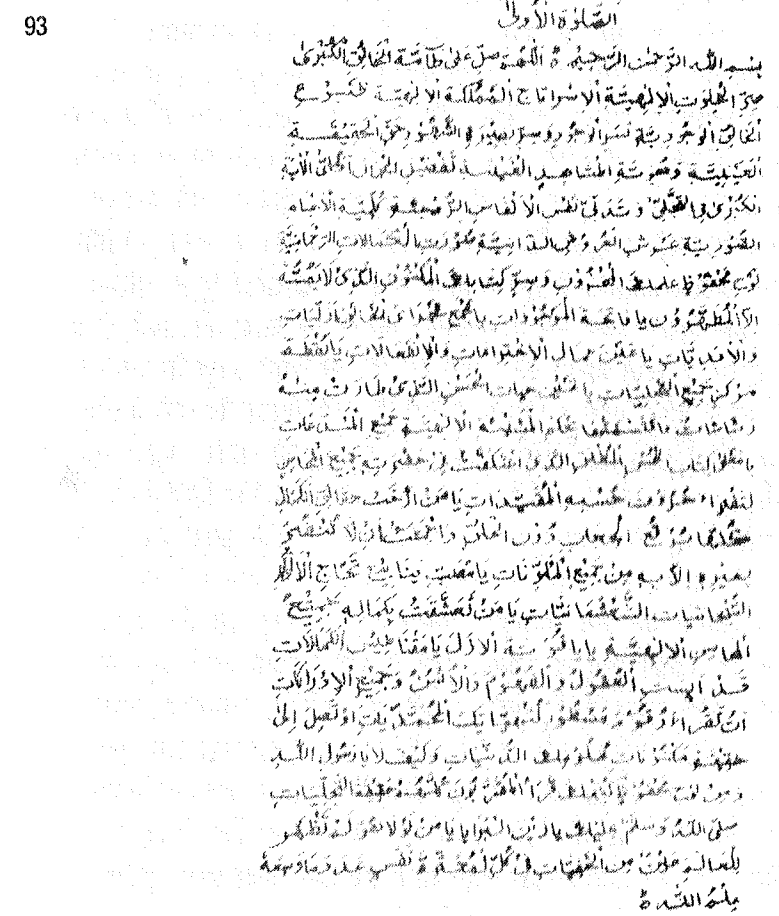

अर्थ- जमाले मुहम्मद से आलम रोशन है और मेरा दिल विसाले मुहम्मद से ज़िन्दा हो गया। मुबारक है वह आँख जो मुस्तफ़ा के जमाल को देखती है और मुबारक है वह दिल जिसमें मुहम्मद का ख्याल है। सच्चे दिल और सफ़ाई के साथ बेचारा जामी आले मुहम्मद के गुलामों का गुलाम बन गया।

नीचे लिखे दरूद शरीफ हज़रत सैयद अहमद इब्न इदरीस कुतुबुल-अफ़ताब शाज़ली रहमत उल्लाह अलैह की किताब अल-औरादुल-जलीलिया इदरीसिया से लिए गए हैं इनकी तादाद पन्द्रह है।

93

الصلوة الأولى
بسم الله الرحمن الرحيم

(1) पहली दरूद शरीफ़ का अर्थ! ऐ मेरे अल्लाह रहमते कामिल नाज़िल फ़रमा उस ज़ात नफ़ीसा (उम्दा, पसन्दीदा) पर जो बड़ी से बड़ी और जबरदस्त से जबरदस्त कुबरा (अज़ीम) हक़ीक़तों की वह ताम (कामिल) और सैर कराई जाने वाली रात की इलाहिया लिखवत (तन्हाई) की वह भेद भी, और ममलुकते इलाहिया की वह ताज भी हो, और वजूदिया हक़ीक़तों की चम्बू यानी बड़ा चशमा (सोता), और वजूद की बसर (बीनाई) भी हो, और शुहूद मुतलक़ के बाद (बीनाई) का वह भेद भी हो, और हक़ीकते ऐनया की हक़ीक़तों का वह हक़ भी हो, और ग़ैबिया मुशाहिदे की जगहों की वह हुयत भी हो, और अजमाल कुल्ली की वह तफ़सील भी हो, और हर एक तजल्ली में वह एक रोशन निशान भी हो, और तदल्ली में वह एक भारी पता भी हो, रूहिया साँसों का वह साँस भी हो, और सूरत वाले अजसाम की वह कुल्लियत भी, जाति या अरूश का अर्श भी हो, और रहमानिया कमालात की वह सूरत भी, तेरे पोशीदा इल्म मख़ज़ूँ की वह लौह महफ़ूज भी हो। और तेरी वह किताब भी कि जिसको कभी छुआ ही न हो मगर मुन्तहाई मरतबा के पाक हज़रात ने। ऐ फ़ातहे मौजूदात और ऐ अज़लियात व अबदियात की हक़ीक़तों के दोज़ख़्ख़ार बहर के मजमूए। ऐ इख़तराआती व इनफ़िआलाती मख्लूक के जमाल की ऐन, और ऐ जामी तजल्लियात व तऐयुनात के नक़ूश व खुतूत के नुक़्ते, और ऐसे हुस्न की ऐन ज़िन्दगी कि जिसमें से बेहिन्तेहा फुवार हुस्न की अड़ाड़, और मशियत इलाहिया के हुक्म से अपनी जमी कसरत में मुनतशिर हुईं और फैल गईं। ऐ हुस्न दिलकश मुतलक़ की किताब के माना, मोतकिफ़ हो गए तुझमें मिन कुल्लिलवजूह जमी हुसना ताकि कोई न पढ़ सके। हुस्न मुक़ैयद के हरफ़ों को, ऐ वह कि जिसने ढीली कर दी हकीक़तें कमाल की सारी की सारी हिजाब के रुखों पर से बुरक़ों के फाड़ डालने और नेस्त कर देने से अपने जहूर के सबब से। और ऐसा इस वजह से हुआ ताकि तू किसी को देखे ही नहीं अपना ग़ैर होने के बाइस से मगर उसी को कि जिसमें या जिसके पास तुझे खुद तू भी नज़र आए। तमामी मकौवनात इलाहिया से अपनी हस्ती के वह जबरदस्त पहाड़ कि जिसमें से तेरी बेशुमार तजल्लियों के छूहे और चश्में टपक और बह रहे हैं और जारी हैं। अनवार जमाल अल्लाह के ऐसे मुनौवर जैसे आफताब। ऐ वह जात नफीसा कि जिसके कमालात सूरी व मानवी पर जमी महासिन इलाहिया लोट पोट रहे हैं। ऐ अज़ली वस्फ़ इश्क़ जाती के अज़ली याकूती जौहर, और ऐ उसी अज़ली ज़ात के कमालात कुल्ली को अपनी तरफ़ जज़्ब करने वाले अज़ली मक़नातीसी, तहक़ीक़ मायूस व मजबूर हो गई हैं, अक्लें, फहमें और जबानें और तमामी मुदरिकात चिह जिन व इन्सानी व चिह मलकी उससे कि जिस लौह कुनही पर तेरी सनाए हक़ीकी लिखी हुई है। उसे पढ़ सकें और फिर पढ़ कर उसे समझ भी सकें या यह कि रिसाई भी कर सकें। तेरी हक़ीकत की भी हक़ीकत के लदुन्नियात तक और कैसे ऐसा मुमकिन हो

सकता है। ऐ रसूल अल्लाह क्योंकि तेरी कुन्ह हक़ीकत जिस लौह पर लिखी हुई है उसको सिवाये अखस्से खवास अमबिया व औलिया अलैहिमुस- सलात-वस्सलाम-वररहमत-वररिज़्वान ने उसे कोई पढ़ ही पाया है और न समझ ही। रहमते कामिला और सलामती ताम्मानाज़िल हो जियो तुझपे ऐ जैन बराया, ऐ आरास्तगी व ज़ीनत मख्लूक़ात हक़ सही व असल तो यही है कि अगर तू कन्ज मख़्फी में होता ही नहीं बहैसियत वजूद अपने के तो कोई चीज़ भी न शान अदम व खफ़ी छोड़ती और न ज़हूर व जलाल के आलम में एतेयुन व हद्दे मुकर्रर के साथ मुशहिदे में मशहूद हो
97. पाती। हर लम्हा और साँस भर के ज़माने में उतनी दफ़ा कि जितने आदाद का इल्म तुझे हो। वल्लाहु व रसूलुहु आलमु बिस्सवाब।

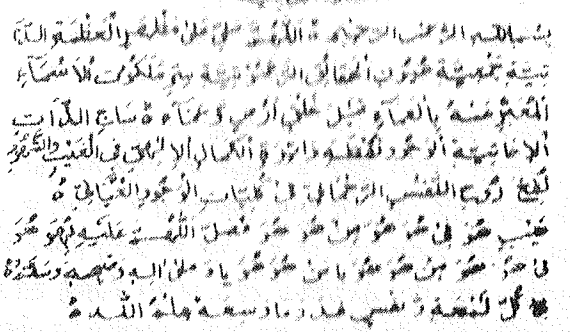

(2) दूसरी दरूद शरीफ़ का अर्थ। ऐ मेरे अल्लाह रहमते कामिला नाज़िल फ़रमा उस ज़ात नफ़ीसा पर कि जो तेरी जातिया अज़मत की मज़हर भी, और तेरी रहमूतिया हक़ीक़तों के उयून की जमैयत, भी, और तेरे अस्माए मलकूतिया अमा नामिया का भेद भी, और ज़ात साज़ज़ फ़र्द व तन्हा व यक्ता कि जो कब्ल तख्लीक़ जमीन व आसमान था मौजूद भी, उसके वजूद की अहातियत के दाएरए कमाल इलाहिया ग़ैबी व शुहूदी नामी की वह नुक़्ता भी, और कुल्लियात वजूद अयामी में नफ़ख़ रहमानी का वह नफ़ख़ रूही भी और ज़मीर हुवा के ग़ैब में खुद व ऐन हुआ भी, बल्कि वह खुद वह भी और वह उससे भी। पस रहमते कामिला नाजिल फरमा मेरे अल्लाह ऐसी रहमते कामिला कि जो उसके अन्दर खुद उसी से खुद उसी पर हो। और ऐ वह कि खुद वह और उसके आल व अस्हाब पे भी उसी शान की रहमत कामिला और सलाम ताम नीज़ हर लम्हा व साँस भर के ज़माने में उतनी दफ़ा कि जितने अददों का इल्म तुझको हो।

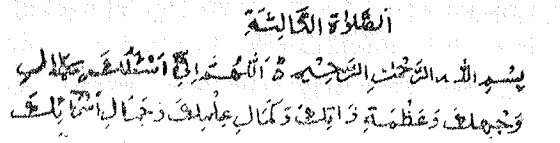

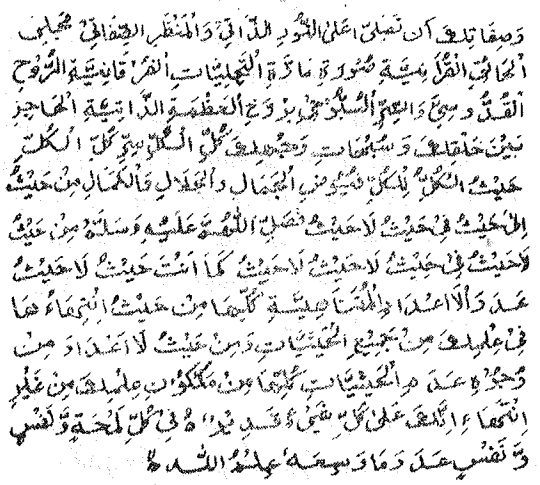

(3) तीसरी दरूद शरीफ़ का अर्थ। ऐ मेरे अल्लाह मैं तुझसे तहक़ीक़ सवाल करता हूँ तेरे बेमिस्ल और मुन्तहाई मुनौवर चेहरे के जलाल और नीज़ तेरी ज़ात की अज़मत और नीज़ तेरे इल्म के कमाल और नीज़ तेरे वस्फ़ों और नामों के जमाल के तुफ़ैल में यह कि तू रहमते कामिला नाज़िल फ़रमा अपने नूरे ऐन ज़ात पर अपने तमामी सिफ़ात के मन्ज़र यानी मशहूद कुल्ली नासूत पर, क़ुरअनिया यानी जमी हक़ीक़तों की तजल्लीगाह पर, फ़ुरकानिया यानी इन्तिशारी और फ़र्की, जुदा जुदा, अलाहिदा अलाहिदा, अलग अलग का वस्फ़ रखने वाली माद्दा की मजमूई सूरत के अफ़राद पर कि जिसमें कि हर सूरत एक रूह वस्फ़ क़ुद्दूसिया और सिर्रे वस्फ़ सुब्बूहिया है, क्योंकि वही नूरे मुसल्ला अलैह कि जिस पर यह दरूद पढ़ी जा रही है वह बर्जखे अज़ीम और हाजिज़ है यानी हायल व परदा है। अनवारे जलालिल्लाह यानी सुब्हात का, लिहाजा ऐसे वस्फ़ वाले नूर ज़ात पर कि वही तू है। कुल का भी कुल और कुल के भी कुल का भेद हैसियत कुल की रखने वाला, कुल के लिए जलालो जमाल व कमाल इलाहिया का वही तो फ़ैज़ी फ़ैजान भी है। ऐ अल्ला मेरे ऐसी हैसियत से रहमते कामिला नाज़िल फ़रमा कि जो हैसियत के अन्दर हैसियत से हैसियत की तरफ ला हैसियत हो, पस रहमते कामिला नाज़िल फ़रमा ऐ मेरे अल्लाह और सलाम्ती ताम्मा भी उसी हैसियत की जो हैसियत के अन्दर हैसियत से हैसियत की तरफ ला हैसियत हो, जैसी कि तू शाने हैसियत भी रखता है और शाने ला हैसियत भी कुल आदाद के अदद की तनाही हैसियत जिस क़दर इल्म भी आदाद का तेरे इल्म में हो उस हैसियत से भी, जमी हैसियत के ऐतिबार से भी ओर बआँ हैसियत से भी, जमी हैसियत से मुतलक़न आदाद ही नदारद है तेरे इल्म की इन्तिहाई जिद्दत व वजह से तहक़ीक़ तू हर हैसियत शै के तऐयुन व हद के नमूदार करने पर क़ादिर व क़दीर मुतलक़ है। और अल्लाह और उसका रसूल अलैहिस्सलाम बेहतर जानते हैं। असल हक़ीकत यानी सवाब को।

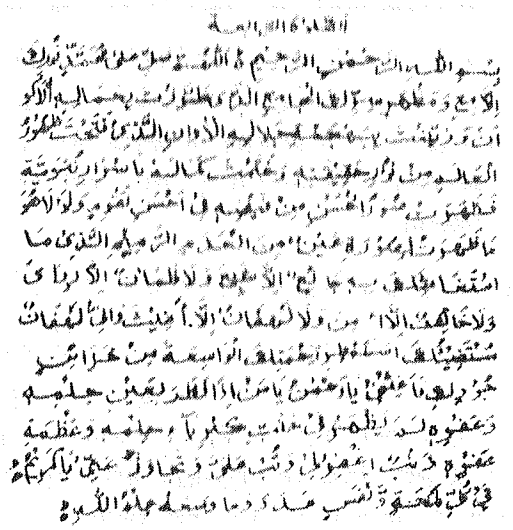

100 (4) चौथी दरूद शरीफ़ का अर्थ। ऐ मेरे अल्लाह रहमते कामिला नाजिल फरमा हर लम्हा व नफ़्स में उतनी मर्तबा जितने अदद का तुझको इल्म हो हमारे आक़ा मुहम्मद नामी पर कि जो तेरा मुन्तहाई रोशन और चमकता हुआ नूरे ऐन ज़ात भी है। और नीज़ तेरे रोशन और चमकते हुए ऐन नूरे जात का ऐसा मजहर भी है, वह मुनक़्क़श क्या है तूने उसके जमाल से आलमे अक्वान की सारी तजल्लियात को और मुजैयन व जेबा व मुरस्सा किया है। तुने उनके जलाल से आलमे आबान की हर आनी तजल्ली को उसकी हक़ीकत के नूर से तुझे अपने कन्ज़ मख्फी से फ़तूह में पाया, तूने आलमे नासूत का ज़हूर उसी नूरी जाती के वास्ते से और आलमे इन्सानी के कमालात को खत्म किया है, तूने उसी की नबूवत के वास्ता से, जिसका नतीजा यह बरआमद हुआ कि जाहिर हो गईं आलमे नासूत तमाम इन्सानी हसीना और जमीला सूरतें अहसन तक़्वीमी शान को लिए हुए उसी नूर के फ़ैज़ान से और अगर न होता वह तो अदम रमीम के आलम यानी अमा व बहत से कोई तजल्ली सूरतिया भी नहीं जहूर में आती।

101 और बे हिस्सी और बे इदराकी के ग़ैब के ग़ैब आलम में यकायक व नागाह तुझे इसी मंशा पर पहुँचने की भूख की मुशाबह हरकत बे हरकती हुई हालाँकि इश्क़ की गिजाए हुस्नी से तू अज़ल ही से सैर था कि जिससे तेरी तजल्ली अज़लिया दर अज़लिया जाए बिल कुवा से जाए बिल-फेल हो गई। हालाँकि अज़ल दर अज़ल में सैर दर सैर था तू, हक़ीकत दर हक़ीक़त तो यह है कि तेरी सना बजा लाने के लिए ज़बान की गोयाई है ही नहीं।

पस जो बोला वह ग़लत जो समझा वह गलत, औला दर औला खमोशी ही है। मगर तरजुमए इबारत ने लाचार कर दिया न तो जाये था न ज़म्आन यानी न भूखा

था न प्यासा, न बिलकुवा न बिलफ़ेल, मगर बात किए बग़ैर अमीक़ नुक़ात समझ में नहीं आ सकते। ग़ैबुल ग़ैब तेरी अमा व बहत का आलम तो वह था कि वहाँ के लिए न तो तुझे बिलकुवा कहते हुए बनता न बिलफेल, न ख़ाइफ़ कहते हुए बनता न अमीन, न था तू खौफजदा बिलकुवत तू कि अमन में आ गया नातिक़ और ग़ैर नातिक़ दोनों के लिए ब हैसियत मख्लूक़।

لَالِسَانَ لِمَخْلُوقٍ يَبْلُغُ الثَّنَاءَ عَلَيْكَ

मख्लूक़ के लिए ज़बान है ही नहीं कि कमा हक़क़हा सना बजा ला सके। ऐ मेरे अल्लाह तहक़ीक़ मेरी शान है यह कि मैं अफ़सोस कुनिन्दा भी हूँ और मैं ही तुझसे इस्तिगासा तलब करता हूँ यानी फ़रयाद रसी, न तू अफ़सोस कुनिन्दा है और न मुग्गीस, अपने ऊपर मैं तेरी रहमत की मूसलाधार बारिश बरसना तलब करता हूँ तेरी जूद व बख्शिश के ख़ज़ानों से, पस मेरी फ़रयाद को पहुँच ऐ मुन्तहाई

فَاَغِثْنِیْ یَارَحْمٰنُ

102 मिहरबानी करने वाले यानी वह जात व हस्ती, ऐ मेरे अल्लाह मेरी फ़रयाद को पहुँच कर मेरी तौबा कुबूल फरमाकर मेरी खताओं और

یَامَنْ اِذَا نَظَرَ بِعَیْنِ حِلْمِهٖ وَعَفْوِهٖ لَمْ یَظْهَرْ فِیْ جَنْبِ کِبْرِ
یَآءِ حِلْمِهٖ وَعَظْمَةِ عَفْوِهٖ زَنْبٌ اِغْفِرْلِیْ وَتُبْ عَلَیَّ وَتَجَاوَزْ
عَنِّیْ یَا کَرِیْمُ

ना फ़रमानियों और मेरी मक्कारियों और ऐयारियों को दर गुज़र फ़रमा हर साँस और लम्हा भर के ज़माने उतनी दफ़ा जितने अददों को कि तेरा इल्म जानता हो। आमीन बिरहमतिका या अरहमर्राहिमीन

وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَمُ بِالصَّوَابِ لَا الْمُجَدِّرُ وَالْمُفَسِّرُ اِلَّا اَنْتَ وَرَسُوْلُهٗ

और अल्लाह और उसका रसूल ही बेहतर जानते हैं असल हक़ीक़त यानी सवाब को।

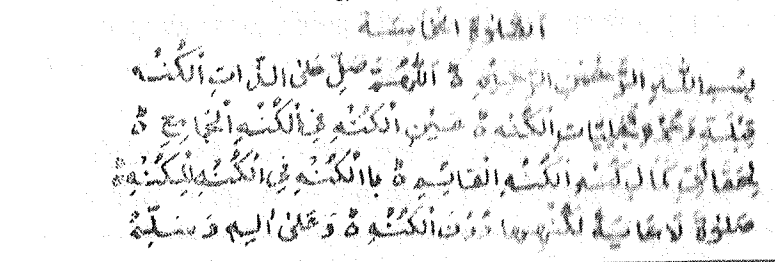

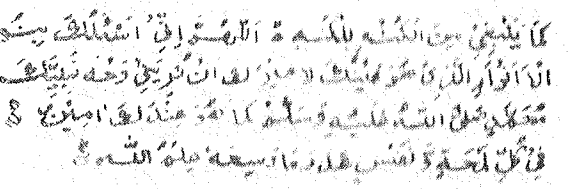

كما ينبغي من الكنه للكنه اللهم اني اسئلك بنور
الانوار الذي هو عينك لا غير لك ان تريني وجه نبيك
محمد صلى الله عليه وسلم كما هو عندك امين
في كل لمحة ونفس عدد ما وسعه علم الله

(5) पाँचवीं दरूद शरीफ़ का अर्थ, ऐ मेरे अल्लाह रहमते कामिला नाज़िल फ़रमा
103 अपनी कुन्ह की ऐसी ज़ात पर कि जो कुन्ह की तजल्लियात कुन्हिया कुलिया की क़िब्ला की वजूह है। और वह ज़ात जो कि कुन्ह में ऐन कुन्ह जामे है। क़ायम कुन्ह की कुन्ह के कमाल की हक़ीक़तों के लिए कुन्ह के साथ कुन्ह में कुन्ह के लिए ऐसी रहमते कामिला नाज़िल फ़रमा कि जिसके लिए निहायत हो न कि हैसियत कर भी मगर यह कि कुन्ह ही हैसियत की निहायत उसके लिए निहायत हो न कि ग़ैर कुन्ह की और उसकी आल पर भी वैसी ही रहमते कामिला और सलामती ताम्मा भी खाह रहमते कामिला हो या सलामती ताम्मा उस पर और उसकी आल पर वैसी ही नाज़िल फरमा जिसका कि वह खुद और उसकी आल लायक है। और काबिल कुन्ह से कुन्ह के लिए हर लम्हा और हर साँस भर के जमाने में उतनी दफ़ा जितने अददों का इल्म तुझको हो। ऐ मेरे अल्लाह तहक़ीक़ मैं तुझसे सवाल करता हूँ तुफ़ैल में उस नूर पाक के कि जो तेरे तमामी अक्साम के नूरे इलाहिया का नूर है। और वह नूर तेरा ऐन मुतलक है न कि गैर तेरा इस बात का कि तू मुझे दिखा अपने नबी मुकर्रम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस चेहरए मुबारक को कि जो तेरी मन्शाए हक़ीक़ी के नज़दीक चेहरए मुबारक तेरे नबी मुकर्रम मुहम्मद सल्लाहु अलैहि वसल्लम का है तेरे नज़दीक। आमीन। यानी ऐ अल्लाह ज़हूरन वैसा ही जो जैसी मैंने दुआ की।

الصلوة السادسة

بسم الله الرحمن الرحيم اللهم صل على اكمل كمالات كنه الله
عين الوجود المطلق الجامع لسائر التعينات صورة ما سوى الفاني و
معاني لا صوت الحق الغيب الذات والشهادة الاسماء والصفات
الظاهر بالكل في الكل من الكل للكليات والجزئيات و لا تر سلسبيل
منهل حوض مشارب جميع الكائنات الكثر بصورة نفسه و في حقيقة
فردوس ذاته و بنظره به سلسلة اليه و بحر قاموس الجمع المطلقة
وكان ردآء الكبريا والعظمة و رداء الولاء و دون الدون بلا
دون الذي لا احد يساويه و لا شبيه يدانيه و كرسي الصفات
والاسماء و حبل هو تجليات المطلق ذات الوجود و جميع حقائق

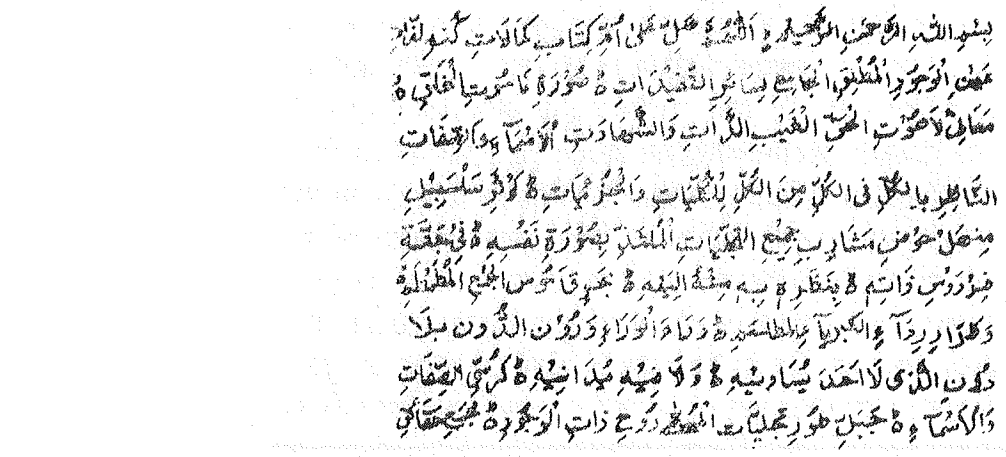

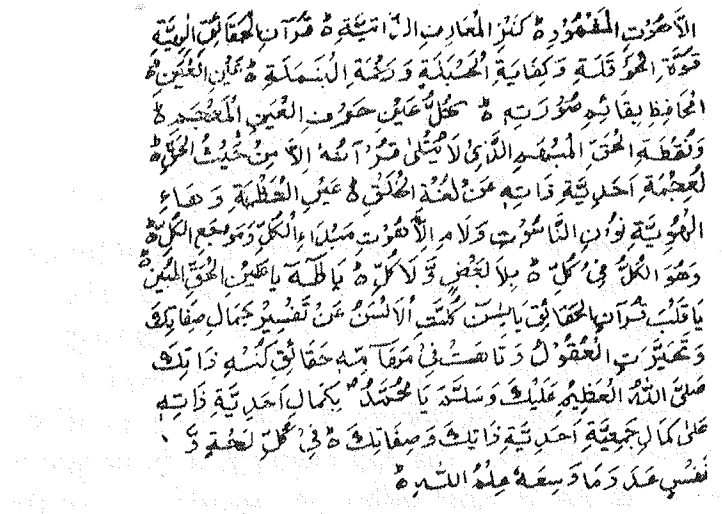

104 (6) छठी दरूद शरीफ़ का अर्थ। ऐ मेरे अल्लाह रहमते कामिला नाज़िल फ़रमा जान के कमालात की उम्मुल किताब पर जो जामे है तमामी कुयूदात वजूदिया मुतलक़ा की नासूत खल्क़ की वह सूरत और लाहूत हक़ के वह मआनी ज़ात की वह ग़ैब और अस्मा और सिफ़ात की वह शहादत कुल से कुल में कुल का वह बिलकुल देखने वाला
105 कुल्लियात व जुज़ईयात को ओर वह अपनी जात की जन्नते फिरदौस में अपने नफ़्स की सूरत मज्मूई तजल्लियात के कौसर के हौज या रूहानी व नूरानी शराब के सलसबील या मन्हल नामी चश्मे के पीने की जगहों में अपनी नज़र से अपने ही में आप, अपने ही को आप अपने ही तरफ़ से नज़र डालने वाला हज़रत किबरिया की तिलस्मी चादर, जमैयत का अमीक़ व ना पैदा किनार व मुतमतम बहर व दरिया परे के भी परे बग़ैर परे के ग़ैर का भी ग़ैर बिला ग़ैर के कोई उसका कोई हमसर व हम पल्ला व बराबर न उनके अन्दर उसका कोई ग़ैर जैसे ठोस चीज के अन्दर ठोस ही सिफात व असमा की कुर्सी तजल्लियात का कोहतूर वजूद जात की नामी रूह लाहूत मशहूद के हक़ायक़ का मज्मा मआरिफ़ जातिया का खजानए हकायक इलाहिया का कुरआन, ला हौला वला कूवता इल्ला बिल्लाहिल अलीइल अजीम की कूवत, हसबियल्लाहु व नेमल वकील, नेमल मौला व नेमन-नसीर की किफ़ायत, बिसमिल्लाहिर्रहमान अर्रहीम की रहमते ऐन का भी ऐन, अपनी क़ायम की हुई सूरत का हाफ़िज व निगहबान हर हरफ़े ऐन का हरफ़ ऐन मोजम और उसके ऊपर हक़ मुक़्हम का नुक्ता कि जिस पर उसका क़ुरआन तिलावत नहीं किया गया मगर हक़ की हैसियत से अपनी अहदियत जात की उज्मत के खलक़ की लुगत से वह हरफ़ ऐन है वस्फ़ अज़मत इलाहिया का और वह हरफ़ हा है हुयत जात का और वह हरफ़ नून है आलमे नासूत का और वह हरफ़ लाम है आलमे लाहूत का, वह कुल का
106 मब्दा यानी जाये शुरू है। वह मरजा कुल का है। यानी हर तजल्ली के पलटने की जगह

और वह अपनी हक़ीक़त के एतिबार से कुल ही अन्दर कुल ही है, ऐ वह हस्ती कि मुलक्कब की गई और पुकारी गई और बोल गई बलक़ब ताहा भी, और नीज़ वह हस्ती मुलक्क़ब की गई और पुकारी गई बलक़ब ऐन हक़ मुबीन भी और नीज वह हस्ती मुलक्कब की गई और पुकारी गई है बलकब कलब कुरआन हकायक यासीन भी और वह अपनी हक़ीकत की भी हकीकत के एतिबार से तू वह है कि गूँगी कर दी गई हैं ज़बाने उसके जमाल का वस्फ़ कुल्ली बयान करने से और चक्कर में डाल दी गई है। अक्लें और नीज़ सरगरदाँ कर दी गई है कि तेरी जात की कुन्ह के हकायत तक अक्ले रिसाई न कर सकें। निहायत अज़मत वाले अल्लाह की रहमते कामिला तुझ पर और सलाम नाज़िल हो जियो ऐ मुहम्मद अल्लाह के सिफात और अल्लाह की अहदियत के कमाल के एतिबार से तेरे सिफ़ात व ज़ात की अहदियत की जमैयत के कमाल की हैसियत पर हर लम्हे और हर साँस भर के ज़माने में उतनी दफ़ा जितनी आदाद का इल्म तुझको हो।

الصلوٰة السابعة

بسم الله الرحمن الرحيم ۝ اللهم صل على عين بحر حقائق الوجودية المطلقة
اللاهوتية ومنبع الرقائق اللطيفة المقيدة الناسوتية صورة الجمال مطلع
الجلال مجلى الالوهية وسر الاطلاق الاحدية عرش استواء الذات وجه
حاجب الصفات مزيل برقع حجاب ظلمات النفس بطلعة شمس حقائق كنه ذاته
الانفس من تجليات الكمال الالهي الاقدس من كتاب مسطور جمع احدية
الذات الحق في رق منشور تجليات الشئون الالهية التي كثرت
صورها النفس يا نبي الله لا اله الا انا في حضرة القدس يا كامل الذات
يا جميل الصفات يا منتهى الغايات يا نور الحق يا سراج العوالم يا محمد يا احمد
يا ابا القاسم جل كما انه ان يعبر عنه لسان وعز كما انه ان يكون مدركا
لانسان [illegible] جناب الحق سبحانه وتعالى
عليك وسلم يا رسول الله يا مجلى الكمالات الالهية الاعظم في كل
لمحة ونفس عدد ما وسعه علم الله ۝

107 (7) सातवीं दरूद शरीफ़ का अर्थ। ऐ मेरे अल्लाह रहमते कामिला नाज़िल फ़रमा लाहूतियए मुतलक़ा के वजूद की हक़ीक़तों के बहरे ज़ख़्ख़ार के ऐन पर निहायत बारीक व जवाबी क़ैद किये गये लतीफ़ए नासूतिया के निकासी की जाय पर, जमाल की सूरत जलाल के सूरज के तुलू होने की जगह, अलूहियत की तजल्ली गाह, अहदियत बोले जाने वाले भेद, उस्तवाए ज़ात के अर्श, ज़ात के हुस्नों की जगहों के चेहरे, लिबासी हिजाब वाले, बुर्कों के ज़ायल करने वाले, अपनी निहायत नफ़ीसा ज़ात के कुन्हीं आफ़ताब के तुलू कराने के सबब, और अपनी कमाल वाली निहायत पाक तजल्लियों के बाअस अहदियते ज़ाते हक़ की जमैयत की लिखी गई किताबें

मस्तूर, बारीक से भी बारीकतर, बिल्कुल जवाबी इलाहिया शुयूनात नाम की गई, खलक़ की सूरतों की कसरत, रूहिया हक़ीक़तों के तूर की सम्त रास्त, जो कलाम की गई अपने से आप अपने नफ़्स के मूसा (लाइलाहाइल्ला-अना) नहीं कोई इलाह मगर मैं के जुम्ले से निहायत क़ुद्स के हज़रत में, ऐ अपनी हस्ती के हक़ीक़ी कामिल
108 और जमील, और ऐ मुन्तहा तमाम ग़ायतों की, ऐ हक़ के नूर, ऐ अवालिम कुल्लिया के चिराग, ऐ मुहम्मद व अहमद नामी ऐ ब एतिबार कुन्नियत अबुल क़ासिम नामी, जलील हुआ जमाल तेरा कि जिसकी ज़बान ताबीर नहीं कर सकती, और ग़ालिब हो गया ज़माल तेरा कि जिसके बाअस इदराके इन्सानी गुम हो गया, और निहायत अज़्मत वाला जलाल हो गया तेरा कि जिसके सबब क़ुलूब क़ासिर हो गए खतरात लाने से, रहमते कामिला नाज़िल हो जियो तुझे पर, और सलामती ताम्मा ऐ अल्लाह के रसूल, ऐ कमालात इलाहिया के आज़म तजल्लीगाह, हर लम्हा और हर साँस लेने भर के जमाने में उतनी दफ़ा जितने अदाद का भी तुझको इल्म हो।

(8) आठवीं दरूद शरीफ़ का अर्थ, ऐ मेरे अल्लाह रहमते कामिला नाज़िल फ़रमा हमारे आक़ा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर, जो उलू हियतके आस्मान के उफ़क़ यानी, किनारे के सूरज, रहमानी उस्तवा के भेद, खुदाये तआला की उलूहित के खज़ानों के मादन, अस्माए इलाहिया के जाये नज़र, और हफ्त शानी अस्माए नफ़ीसा इलाहिया यानी अस्माए उम्महात सिफ़ाते जाते इलाहिया नामी का मज़्हर यानी जाये ज़हूर हक़ का भी हक़ और खलक के इसतिम्दादी दायरे का नुक्ता, हू के मस्दर व मम्बा यानी पहाड़ से हू ही में हू ही के वास्ते बहैसियत चश्मा यानी यमबू उसी बदौलत कलिमए तैयबा (लाइलाहा इल्लल्लाहु) के सारे भेद हैं। वह जो कुल्लिया हकीकतों के

कुरआन का क़ल्ब है, उस हस्ती के दरबाद में कि जो अज़ल से बिला गैरिही अकेली व तन्हा मौजूद थी, और वह एक खुली हुई ऐसी किताबें मुबीन नामी है, जिसमें अल्लाह तआला ने अपनी जाती हक़ीक़ियात के सिवा दूसरी चीज़ को बढ़ाया नहीं है। वह अल्लाह तआला के कलिमात ताम्मा और कामिला की बोलने वाली ज़बान, और वह उसके इश्क के भेदों का महज़ हमारे लिये ही नहीं बल्कि निहायत को भी उसकी तजल्लियात के लिये तरजुमान यानी मतरज्जिम है। ऐ अल्लाह ऐसी रहमते कामिला उस पर नाज़िल फ़रमा जो हक़ की ज़बान से हक़ ही के वास्ते हक़ ही से होए, बल्कि वह ऐसी रहमते कामिला व ताम्मा जिस तरफ़ राह याबी अक़्लोफ़हम व इदराक व इल्म मजाज को न हो सके। और न इदराक न होशे खलक उस तक रसा हो सकें, हर लम्हा व रफ़्तार नफ़्स भर के ज़माने में उतनी दफ़ा जितने आदाद को तेरा इल्म रसा और मख़्लूक का इल्म क़ासिर हुआ है।

الصلوة التاسعة

بسم الله الرحمن الرحيم ۝ اللهم صل على الذات الحقيقة القدسية
والمعاني الكمالية الجلالية الجمالية ۝ قرآن حقائق الذات وفرقان
تجليات الصفات ۝ عين الحياة الازلية معنى التفصيلات الابدية ۝
روح المعاني الالهية وسر صور المباني الخلقية دهر الدهور و
كتاب الحق المسطور بمعنى المكالمة الالهية الطورية في حضرة الوادي
القدسية الموساوية نور سبحات الوجه في حجبات تجليات الكنه ۝
صورة الحق ومعنى سر صور ساحل مجمع بحور الحقائق لسان ترجمان
الدقائق حقيقة الحقائق الكليات والجزئيات عرش رحمانية الذات
صلاة جامعة لكل التجليات محيطة بجميع المعاني والصوريات
وعلى اله وصحبه وسلم ۝ في كل لمحة ونفس عدد ما وسعه
علم الله ۝

(9) नवीं दरूद शरीफ़ का अर्थ। ऐ मेरे अल्लाह रहमते कामिला नाज़िल फ़रमा पाक हक़ीक़त की जात कमालियत, जलालियत जमालियत के माना, ज़ात की हक़ीक़तों के जमा यानी कुरआन सारी सिफ़ाती तजल्लियों के फ़र्क़ बैयन यानी फुरक़ान, अज़ली हयात के ऐन, अबदी तफ़सीलात के माना, रूहे इलाहिया के मफ़ावी, खलक़िया सूरतों के मज़ाहिर के भेद, दहर के भी दहर, और नशर किए गए हक़ की किताब पर तूर पहाड़ के वादी मुक़द्दस में इलाहिया हज़रत की मूसावी मक़ालिमंत के माने, सुबुहात ज़ात के नूर, किन्हीं तजल्लियात के कोह क़ाफ़ में हक़ की सूरत हरुफ़ ख़लक़िया के भेद माने, पूरी और सारी हक़ीक़तों के ज़ख्खार बहरों के मज्मूए, असरार के भी असरार, दक़ायक़ की ज़बान हक़ीकतों की भी हकीकत के
111 कुल्लियात व जुज़ईयात, रहमानियते जात के अर्श पर ऐसी रहमते कामिला फ़रमा

कि जो जामे हो सारी की सारी तजल्लियों को और मुहीत हो तमामी तजल्लियात के बुतूनों और जहूरों को और उनकी आल और अस्हाब पर भी और उसी शान की सालमतिए ताम्मा भी नाजिल हो जियो उन पर और उनकी आल पर और उनके अस्हाब पर, हर लम्हे और हर साँस लेने भर के ज़माने में उतनी बार जितने अददों का इल्म तुझको हो।

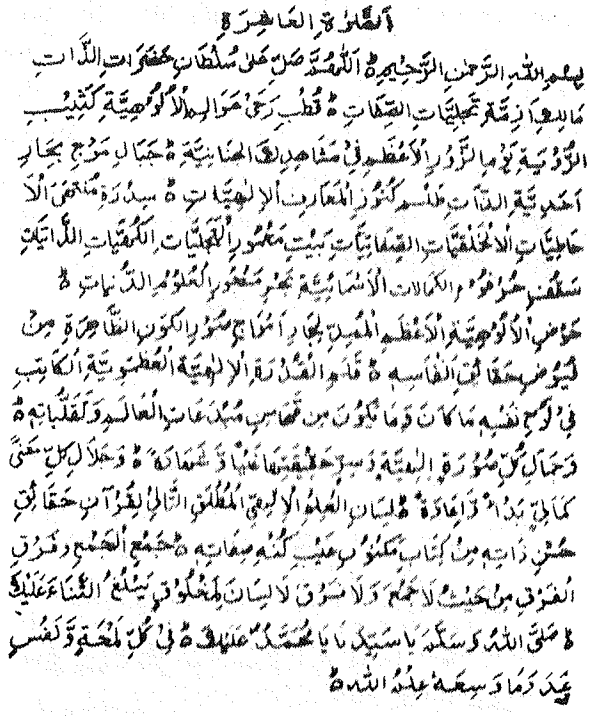

الصلوة العاشرة

بسم الله الرحمن الرحيم ○ اللهم صل على سلطان حضرات الذات
مالك ازمة تجليات الصفات ○ قطب رحى عوالم الالوهية كثيب
الرؤية يوم المزيد الاعظم في مشاهد الجنانية ○ جبال موج بحار
الاحدية الذات طلسم كنوز المعارف الالهيات ○ سدرة منتهى الا
حاطيات الخلقيات الصفاتيات بيت معمور التجليات الكونيات الذاتيات
سقف مرفوع الكمالات الاسمائية بحر مسجور العلوم اللدنيات ○
حوض الالوهية الاعظم المستمد بها امواج صور الكون الظاهرة من
فيوض حقائق انفاسه ○ قلم القدرة الالهية العظموتية الكاتب
في لوح نفسه ما كان وما يكون من حقائق مقدمات العالم وتقلباته ○
وجمال كل صورة البهية وسر حقيقتها معناها وصفاته ○ وجلال كل معنى
كمالي بدءا واعادة ○ لسان العلم الالهي المطلق التالي لقرآن حقائق
حسن ذاته من كتاب مكنون غيب كنه صفاته ○ جمع الجمع وفرق
الفرق من حيث لا جمع ولا فرق لا لسان لمخلوق يبلغ الثناء عليك
○ صلى الله وسلم يا سيدنا يا محمد عليك ○ في كل لمحة ونفس
عدد ما وسعه علم الله ○

(10) दसवीं दरूद शरीफ़ का अर्थ। ऐ मेरे अल्लाह रहमते कामिला नाज़िल फ़रमा ज़ात के हज़रात के सुलतान तजल्लियाते सिफ़ातिया के ऊँटों की महारों के मालिक उलूहियत के सारे आलमों की चक्की के पाटों के धुरे, जन्नतिया मुशाहिदे की शान व हदे मुऐयन व मुक़र्ररए यौमे क़ियामत पर जो ज़ात अहदियत की मौज के मजमूई पहाड़, इलाहियात के मआरिफ़ ख़ज़ानों के तिलस्म यानी अचमे सिफ़ातियात खलक़िया के एहातों के सिदरए मुन्तहा, सारी ज़ाती कुन्हियात की तजल्लियों के मामूर घर, अस्माईया कमालाती महल की छत, लदुन्नी इल्मों के अमीक़ और गहरे और लबालब समुन्दर उलूहियत की सबसे बड़ी तजल्ली के बढ़ते रहने वाले हौज़, कौने जाहिरी की सारी सूरतों की मौजों के बड़े भारी दरया, अपने साँसों की हक़ीक़तों के फ़ुयूज़ात के असरात के बाअस क़ुदरते इलाहिया के क़लम अव्वल, जिसने अपनी हस्ती की लौह यानी तख्ती पर जो कुछ कायनात में अज़ल से अब तक हो चुका है,

और जो कुछ अब हो रहा है। ज़मानए मौजूदा में और जो कुछ होगा जमानए आइन्दा में तब्लीक कायनात से पहले ही लिख डाला था, कि हुस्न मज़ाहिर में क्या-क्या, किस-किस वक़्त मुब्दआत यानी अदायें और तक़ल्लियात यानी चितवनें जहूर पज़ीर होंगी। और होती रहेंगी, तमामी इलाहिया सूरतों के जमाल यानी जोबन और उनकी हक़ीक़तों के भेद बहैसियत ग़ैब व शहादत होकर मिटने और फिर पलटने कर कमाल के कुल्ली छुपावे के जलाल, पै दर पै मुतवातिर और बतदरीज नाज़िल होने वाले
113 इल्म मुतलक़ की ज़बान अपनी ज़ात के हुस्न की हक़ीक़तों के कुरआन के वास्ते अम्र कुन से मकनून शुदा किताब के सिफ़ात की कुन्ह के ग़ैब से जमा की भी जमा यानी जमउल-जवामे या मुन्तहियुल जमू फ़र्क़ का भी फ़र्क़ बआँ हैसियत के फ़िल हक़ीक़त न जमा ही है न फर्क ही, जो मख्लूक है उसके लिए जबान नहीं है कि तारीफ़ व सना बजा ला सके, तेरी रहमते कामिला नाज़िल हो जिबो तुझ पर और सलामतीये ताम्मा ऐ हमारी जमाअत मुहम्मदिया के आला और औला सरदार और आक़ा मुहम्मद नामी तुझ पर, और अल्लाह और रसूल बेहतर जानता है सवाब को। हर लम्हा व हर साँस भर के ज़माने में उतनी बार जितने अददों को तेरा इल्म वाक़िफ़ है।

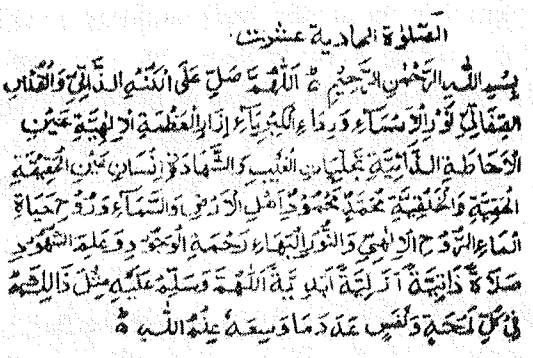

الصلوة الحادية عشرة

بسم الله الرحمن الرحيم ۝ اللهم صل على السر الذاتي والقدس
الصفاتي ونور الاسماء ورداء الكبرياء وازار العظمة الالوهية وعين
الاحاطة الذاتية بتجليات الغيب والشهادة وانسان عين الحقيقة
الحقية والخلقية محمد المحمود في اهل الارض والسماء وروح حياة
الاسماء الروح الالهي والنور البهاء رحمة الوجود وعلم الشهود
صلوة ذاتية ازلية ابدية اللهم وسلم عليه مثل ذالك
في كل لمحة ونفس عدد ما وسعه علم الله ۝

(11) ग्यारहवीं दरूद शरीफ़ का अर्थ। ऐ मेरे अल्लाह रहमते कामिला नाज़िल फ़रमा अपने जाती भेद पर, और अपने सिफ़ात कुल्ली की पाकी पर, और अपने अस्माए कुल्ली के नूर पर, और अपनी किबरियाई तजल्लियों की चादर पर और इलाहिया अज़्मत की इज़ार पर, ज़ातिया एहाता के ऐन पर ग़ैब कुल्ली की तजल्लियात कुल्लिया ऐसे इन्सान नामी पर कि जो हक़िया हक़ और हकिया खलक़ का ऐन मुहम्मद नामी आस्मान व जमीन व माफ़ीहा से तारीफ कराया गया है। हर किस्म के बाकी की जिन्दगी और रूहे इलाही और अनमोल नूर है वह; वजूद की रहमत और शुहूद का खुला हुआ निशान है वह, ऐ मेरे अल्लाह वह रहमते कामिला और सलामती ताम्मा नाज़िल फ़रमा उन पर और उनकी आल पर जो रहमत कामिला और सलामती ताम्मा जाती हो, अजली हो, अबदी
114 हो, तेरे इल्म की वुसअत के आदाद भर हर लम्हा व नफ़्स में।

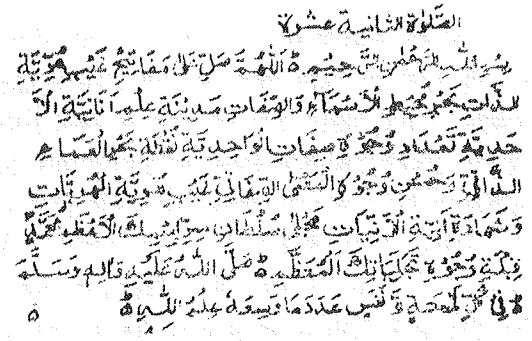

(12) बारहवीं दरूद शरीफ़ का अर्थ- ऐ मेरे अल्लाह रहमते कामिला नाजिल फरमा अपने जात की हुवियत यानी अपने ज़ात की कुल्लियत के कुफ्लों की सारी चाबियों पर, और ऐ मेरे अल्लाह रहमते कामिला नाज़िल फ़रमा अपने तमामी अस्मा और अपने तमामी सिफात के बहरे मुहीत पर अपने अहदियत की अनानियत के इल्म की बस्ती पर अपनी वाहिदियत के तमामी सिफ़ात के चेहरों की तादाद पर, अपने बहरे अमाए जात के नुक्ता पर, और अपने सिफ़ात के बातिन के चेहरों के हुस्न पर,
115 अपनी हुयत की हुवियात के ग़ैब पर और अपनी अनानियत के अनियात की शहादत पर, अपने इस्म आजम मुहम्मद के भेद के सुलतान की तजल्लीगाह पर तेरी तरफ़ से उन तजल्लियों की तजल्लीगाह पर कि जो तजल्ली क़िब्ला मानी गई है, तेरी अज़्मत वाली तजल्लियों की, ऐ अल्लाह मेरे रहमते कामिला नाज़िल फ़रमा अपनी उन पर और उनकी आल पर और सलामती ताम्मा तेरे इल्म की वुसअत के आदाद भर हर लम्हा व नफ़्स में।

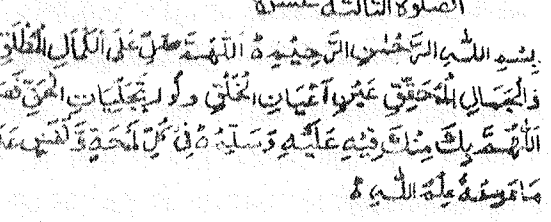

(13) तेरहवीं दरूद शरीफ़क का अर्थ- ऐ मेरे अल्लाह रहमते कामिला नाज़िल फ़रमा अपने कमाल मुतलक और जमाल मुहक्किक़ उस हस्ती पर कि जो ऐन है तेरी तमाम मख्लूकात के तऐयुनात की और तेरी तमामी तजल्लियात शुहूदिया व गैबया की, पस रहमत ताम्मा नाजिल फरमा ऐ मेरे अल्लाह तुझको तुझी से उसमें उसी पर और भरपूर सलामती भी तेरे इलम की वुसअत के आदाद भर हर लम्हा व नफ़्स में, और अल्लाह और उसका रसूल सवाब को बेहतर जानते हैं।

(14) **चौदहवीं दरूद शरीफ़ का अर्थ-** ऐ मेरे अल्लाह रहमते कामिला और सलामती ताम्मा नाजिल फरमा हमारे आका मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर और उनकी आल पर आबाद के कुल अददों भर ब आँ हैसियत आदाद भर जिस कदर आदादी हैसियत का बड़ा वस्फ़ इल्म खबरदार है, और ब आँ हैसियत कि एतिबार हक़ीकत के बाअस हैसियते आदाद मुतलकन मादूम है और तुझको अपनी कुल्लियात नफीसा का अतम व अकमल इल्म कतई व यकीनी है) तहकीक तू तऐयुनात शैयिया की कुल्लियत पर क़ादिर मुतलक है।

الصلوة الخامسة عشرة

بسم الله الرحمن الرحيم ۝ اللهم اني اسئلك بنور وجه
الله العظيم الذي ملأ اركان عرش الله العظيم ۝ و
قامت به عوالم الله العظيم ۝ ان تصلي على مولانا محمد
ذي القدر العظيم ۝ وعلى آل نبي الله العظيم بقدر عظمة
ذات الله العظيم ۝ في كل لمحة ونفس عدد ما في
علم الله العظيم ۝ صلوة دائمة بدوام الله العظيم ۝
تعظيما لحقك يا مولانا يا محمد يا ذا الخلق العظيم ۝ وسلم
عليه ۝ وعلى آله مثل ذلك ۝ واجمع بيني وبينه كما جمعت
بين الروح والنفس ۝ ظاهرا وباطنا ۝ يقظة ومناما ۝ واجعله
يا رب روحا لذاتي من جميع الوجوه في الدنيا قبل الآخرة ۝
يا عظيم ۝

(15) **पन्द्रहवीं दरूद शरीफ़ का अर्थ-** ऐ मेरे अल्लाह तहक़ीक में तुझसे सवाल करता हूँ तुफैल में तेरे वजहुल्लाह के नूर के जो ऐसा नूर है कि जो तेरे अर्श के चप्पा-चप्पा, रेशा-रेशा, और कोना-कोना में भरा हुआ है। जिस नूर के बदौलत ऐ अज़्मत वाले अल्लाह तेरे जितने भी आलमयान हैं वह कुल के कुल उसी के नूर से कायम हैं। यह सवाल करता हूँ कि तुझसे कि तू रहमते कामिला नाजिल फरमा हमारे आक़ा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अज़्मत वाली कदर के साहब पर और अपने अज्मत वाले नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आल पर अपनी ज़ात की अज़्मत भर हर छिन भर में यानी उस कलील से कलील भर जमाने में जिससे ज्यादा कलील जमाना तेरे नज़दीक न हो, यानी हर लम्हे भर के जमाने में और हर साँस लेने भर के जमाने में उतने आदाद के बराबर जिस कदर कि आदाद तेरे इल्म में हैं, ऐसी हमेशगी वाली रहमते कामिला जो तेरी दवामियत के बराबरी की मुद्दत के

हमपल्ला हो, ताजीम करने कर तेरे हक के लिए, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, ऐ आक़ा हमारे, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अज्मत वाली कदर के साहब और उसी कदर उन पर सलाम भी हो जियो, और उसी कदर सलातोसलाम हो जियो उनकी आल पर, ऐ अज्मत वाले अल्लाह और एक ही हैयज़ और एक ही मकान और एक ही जाये में ऐ अज्मत वाले अल्लाह मुझे और अपने ऐसे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वआलिहि वसल्लम को मेरे इदराक व होश के साथ इस तरह जमा कर दें कि जिस तरह तूने एक ही हैयज, एक मकान और एक ही जाये में हस्ती की, मेरे अन्दर मेरी रूह और मेरे नफ़्स को जमा किया है, यही हिस व इदराक मेरा आलमे जाहिर के लिये है, और यही हिस व इदराक मेरा आलमे बातिन के लिए हो। और यही हिस व इदराक मेरी बेदारी के लिए हो, और यही हिस व इदराक मेरा मेरी नींद के लिये हो, और ऐ अज्मत वाले अल्लाह तू गर्दान दे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वआलिही वसल्लम को मेरी जात के लिये रूप हर चेहरए जहान से, ख्वाह वह चेहरा चेहरए शहादती हो या गैर शहादती, आमी और कुल्ली चेहरों से आलमे दुनिया ही में और आलमे आखिरत आने के कब्ल ऐ अज्मत वाले अल्लाह।

❖ ❖ ❖

अध्याय-10

बैअत की ज़रूरत

जानना चाहिये कि नेक सुहबत बहुत बड़ी दौलत है।

शेर सुहबते स्वालिह तुरा स्वालिह कुनद।
सुहबते तालिह तुरा तालिह कुनद।।

अर्थ- नेकों की सुहबत नेक बनाती है और बदकारों की सुहबत बदकार बनाती है।

बुजुर्गों ने फ़रमाया है कि एक साअत औलिया अल्लाह के साथ रहना सैकड़ों साल की इबादत से बढ़ कर है। नीचे का शेर इसी बात को जाहिर करता है।

शेर यक ज़माना बा सुहबते औलिया।
बेहतर अज़ सद साला ताअत बे रिया।।

नेक सुहबत ही अल्लाह से मिलने का वसीला (ज़रिया) है अल्लाह तआला फ़रमाता है।

يَاَيُّهَاالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اتَّقُوْ اللّٰهَ وَابْتَغُوْا اِلَيْهِ اَلْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْافِى سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ

(कुरआन का अर्थ- ऐ ईमान वालो डरो अल्लाह से और ढूँढो तरफ उसके वसीला और मेहनत करो उसके राह में ताकि तुम हो जाओ नजात पाने वाले) पस लोगों नजात पाने के वास्ते वसीला का करना जरूरी है। और बगैर वसीला के मन्ज़िल मक़सूद पर पहुँचना दूर है। लाज़िम है कि मुर्शिदे कामिल तलाश करके रस्म बैअत (मुरीद होना) अदा करे और उसके हाथ को अल्लाह का हाथ समझे, जैसा कि फ़रमाया अल्लाह तआला ने।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَا يِعُوْنَ اللّٰهَ يَدُ للّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ

(कुरआन का अर्थ- (ऐ नबी) जो लोग आपसे बैअत करते हैं, वह दरअसल मुझसे बैअत करते हैं, और मेरा हाथ उनके हाथों पर है) जिस तरह औरत और मर्द के इकट्ठा

हुए बगैर लड़का पैदा नहीं होता, उसी तरह बगैर बैअत य इरादत के वासिल बहक नहीं हो सकता (खुदा को नहीं पा सकता) और नफ़्स व शैतान के धोका से बचना नामुमकिन है।

मौलाना रूम-

शेर पीर रा बुगुजी कि बे पीर ईं सफ़र।
हस्त बस पुर आफ़तो खौफ़ो खतर।।
हर कि ऊ बे मुर्शिदे दरराह शुद।
ऊ ज़े ग़ोलाँ गुमरा हो दर चार शुद।।
चूँ कुनी तू ज़ात मुर्शिद रा कुबूल।
हम खदा याबी वहम याबी रसूल।।

अर्थ- पीर को पकड़ कि बे पीर यह सफर बहुत ज्यादा पुरख़तर और आफतों से भरा है। जो शख्स बगैर पीर के इस राह में चला, वह गुमराह हुआ और कुँवाँ में गिर गया। जब तूने पीर की ज़ात को कुबूल कर लिया तो खुदा और रसूल दोनों को पा लिया।

मुरीद होने में जल्दी करनी चाहिए, क्योंकि जिन्दगी का कोई एतिबार नहीं साँसें गिनी हुई हैं बोला न बोला। आम लोगों के कहने के मुताबिक यह न समझना चाहिये कि अभी तो जवानी है, बुढ़ापे में मुरीद होंगे। जवान का काम भी जवान और बूढ़े का काम भी बूढ़ा है। इश्क़ और इबादत का मज़ा जवानी ही में है। और बुढ़ापा हवस और नादानी की निशानी है। बुजुर्गों का क़ौल है कि जिसने बख्शिश की उम्मीद पर गुनाह किया वह बख्शिश से महरूम रहा और जिसने जिन्दगी की उम्मीद पर तोबा न की वह जहान से गुनाहगार गया।

120 बैअत के बारे में अल्लाह पाक ने कुरआन में एक जगह फरमाया (ऐ मुहम्मद, इसी दरख्त के नीचे बैत का सिलसिला कायम कर दो) बैत की चार किस्में हैं। (1) बैअत खिलाफत (2) बैअत जिहाद (3) बैअत तोबा (4) बैअत अमानत। पहली तीन किस्में जाहिरी हैं और चौथी किस्म का तअल्लुक बातिन से है। इसे अच्छी तरह समझने की जरूरत है। बैअत के लफजी माने (अर्थ) बेचना और मोल लेना दोनों होते हैं यानी अपनी सूरत और नाम को बेच कर पीर की सूरत और नाम को मोल लेना। इस बैअत का मन्शा यह है कि हक तआला की अमानत का अमीन हो जाये। जो रोज़ अज़ल (पहला दिन) हजरते इन्सान ने बारे अमानत उठाने का इक़रार किया था जैसा कि पहले इस किताब में लिखा जा चुका है यानी अपनी खुदी बेच कर उसकी अमानत का अमीन हो जाये। तमामी औलयायेकराम इसी बैअत के ज़रिये मन्जिले मकसूद पर पहुँचे हैं यानी मारफ़ते इलाही जो पैदाइश का सबब है, हासिल करके खुद से

फानी और अल्लाह की ज़ात में बाकी हो गए हैं।

जरूरत है कि खूब सोच समझ कर पीर को चुनें जो पाबन्दे शरीयत और बे नफ़्स हो। पानी पिये छान कर पीर करे जान कर इसलिये कि यह दुनिया का नहीं बल्कि दीन का मामला है। जो बहुत ही अहम और जरूरी है। पीर की कषफ़ (दिलों का हाल जानना) व करामात देखने की तमन्ना न करे इसलिये यह उसका एक तरह से इम्तिहान लेना है, जो बहुत बड़ी गुमराही है कामिलीन कष्फो करामात के कूचे में कदम नहीं रखते, कि खतरा फकीर को उसके असली मुकाम से दूर कर देता है।

121 हदीस शरीफ में है (अर्थ, कष्फो करामत औरतों के हैज़ (माहवारी) की तरह है। जिस तरह औरत माहवारी के दिनों में अपने शौहर से दूर रहती है उसी तरह जो दुरवैश (पीर) कष्फो करामत के भंवर में फंस जाते हैं, वह अल्लाह से दूर हो जाते हैं। फकीरों (पीरों) की बातिनी (छुपी हुई) कूवत देखने से कोई कामयब नहीं होता बल्कि उनके दरूद (फरमान) व हिदायत पर अमल करने से, पस जिसने कुदरत का इम्तिहान चाहा वह मिस्ल अबूजिहल के है। और जो बिला ताम्मुल ईमान लाया वह अबूबकर सिद्दीक के मिस्ल है। अगर तमाशा देखना हो तो मदारियों (बाजीगरों) में जाये फकीर बाजीगर (मदारी) नहीं होता। और जो दुरवैश ऐसा करते हैं उनसे धोका न खाना और ऐसों को अपना रहबर न बनाना वरना दोनों जहान से हाथ धोना है।

मौलाना रूम फरमाते हैं-

शेर ऐ बसा इब्लीस आदम रूए हस्त।
पस पहर दस्ते न बायद दाद दस्त।।

अर्थ- ऐ कि बहुत से लोग आदमी की सूरत में शैतान हैं, इसलिए हर किसी के हाथ में हाथ न देना चाहिये।

जाहिर है कि वह कुछ करामत दिखाकर तुझसे कुछ उम्मीद रखता है, वह खुदा का मुकर्रिब (करीब) नहीं है, यह किसी इस्म (अल्लाह का नाम) या अमलयात का असर है या नजरबन्दी (शोब्दा) से है। औलयायेकराम की करामत वह है जो खिर्क आदात उनके बिला खाहिश नफ्स जाहिर होते है। क्योंकि फिर वह कुदरत व इरादा उनका नहीं बल्कि खुद अल्लाह का है। जो कामिली की सूरत खुद तसर्रुफ (दखल देना) कर रहा है।

मौलाना रूम फरमाते हैं-

शेर (1) गुफ्तए अ गुफ्तए अल्लाह बुवद।
गरचे अज़ हुलकूम अब्दुल्लाह बुवद।।

अर्थ- उसका कहा अल्लाह का कहा होता है, अगरचे बन्दे की जबान से निकलता है।

122 **शेर** (2) औलिया रा हस्त कुदरत अज इलाह।
तीर जस्ता बाज़ीमी आरन्द जेराह।।

अर्थ- औलिया को अल्लाह की तरफ़ से ऐसी कुदरत हासिल है कि फेंका हुआ तीर रास्ता से वापस लाते हैं।

पीर के कामों में ऐब व हुनर तलाश न करें इसलिए कि तालिब (मुरीद) खुद ना समझ है, उसको भले बुरे की पहचान नहीं है। उसके इरशादात (कौल) पर नुक्ताचीनी न करें और न अपनी अक़ल को दखल दे। यह बे अदबी व गुस्ताखी है।

मौलाना रूम-

शेर अज़ खुदा जोयेम तौफीके अदब।
बे अदब महरूम गश्त अज़ फ़ज्ले रब।।

अर्थ- अल्लाह से अदब की तौफीक माँगता हूँ कि बे अदब अल्लाह के फज्ल से महरूम होता है।

पीर का अदब वैसा ही करें जैसे कि अल्लाह और रसूल का करना चाहिये, इसलिए कि वह रसूल की जात में फना है। और अल्लाह की जात से बाकी होता है। और उसकी कोई खतरा दिल में न लाए।

मौलाना रूम-

शेर कारेपाकाँ रा क्यास अज खुद मगीर।
गरचे मानद दर नविश्तन शेरो शीर।।

अर्थ- पाक लोगों को अपनी ही तरह मत समझों अगरचे लिखने में शेर (जानवर) और शीर (दूध) यक्साँ हैं।

मुर्शिदे कामिल से पूरी अक़ीदत और सच्ची मुहब्बत रखे। इस कूचे में पक्का यकीन
123 ही असल चीज है। जैसा हज़रत हुसैन बख्श शाकिर रहमानी की वाक्या से पता चलता है। आप अल्लाह के सच्चे तालिब थे एक मुद्दत तक घर बार छोड़कर पीर कामिल की तलाश में जगह-जगह फिरते रहे। आखिर में आपको बशारत (खुशखबरी) हुई कि उनका हिल्ला हजरत सूफी मुहम्मद अब्दुर्रहमान के पास है। आप वहाँ तशरीफ़ ले गए और सूफी साहब से मुरीद हो गए। वहाँ का कायदा था कि किसी मुरीद को तीन दिन से ज्यादा ठहरने की इजाज़त न थी। तीसरे दिन आप बहुत परेशान हुए और खादिम को राजी करके खुद शब (रात) में मुर्शिदे बरहक़ की खिदमत में हाजिर हुए। रात में जब सूफी साहब नमाज तहज्जुद के लिए उठे तो पूछा कि तू कौन है? जवाब दिया हुजूर हुसैन बख्श है। फरमाया क्या चाहता है ? जवाब दिया कि दीन व दुनिया में से किसी चीज की जरूरत नहीं सिर्फ अल्लाह को चाहता हूँ। फ़रमाया इस तमन्ना को भी दिल से निकाल दे

इसलिये कि जब तक आग आग को तलाश करेगी आग को न पाएगी। और जब तक पानी पानी को तलाश करेगा पानी न मिलेगा। बाद में पूछा कि बात समझ में आ गई। जवाब दिया कि हाँ हुजूर समझ में आ गई। फरमाया यहाँ से चले जाओ और इसी यकीन व फहम में डूब जाओ। इस यकीन पर आपको इतना पक्का यकीन हो गया कि अनल हक़ का नारा बलन्द करने लगे और वली कामिल और आरिफ बिल्लाह हुए। पीर से अकीदत के बारे में मौलाना रूम फरमाते हैं-

शेर सद किताबो सद वरक़ दरनारकुन।
रूए खुद तू जानिबे दिलदार कुन।।
कीस्त काफिर गाफिल अज ईमान शेख।
कीस्त मुदी बेखबर अज़ जान शेख।।

अर्थ- सैकड़ों किताबें और सहीफे जला दे, और अपने चेहरे को माशूक (पीर) की तरफ कर दे। जिसका शेख पर ईमान नहीं वह काफिर है,और जो पीर की जान से बेखबर है वह मुर्दा है।

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अलावा किसी नबी को बैअत की इजाजत इसलिए नहीं मिली कि बेअत के बाद दूसरे नबी की जरूरत बाकी न रह जातीं, और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खातमुन-नबीयीन हैं इसी लिए आपको बैअत लेने की इजाजत दी गई, ताकि दूसरे नबी की जरूरत न रह जाये। इनकी मिसाल यूँ समझो कि कोई शख्स लखनऊ से आमों की कलम मंगवाए, लेकिन मालिक के पास कलम का स्टाक खतम हो जाये तो वह कलम लगाने की तरकीब इस तरह बता देगा, कि देसी आम के पौधे में कलमी आम की शाख तराश कर बाँध दी जाये तो कलम लग जाने पर वह तुख्मी (बीजू) पौधा कलमी हो जायेगा। और लखनऊ से कलम मँगाने की जरूरत न रह जायेगी। इसी तरह हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिस्ल कलमी आम के थे। उनमें अल्लाह का फल लगा हुआ था यानी वह अपनी जात से बे खबर और अल्लाह की जात से खबरदार थे। जैसा कि रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया-

مَنْ رَآنِیْ فَقَدْ رَاءَالْحَقَّ

(हदीस पाक का अर्थ, जिसने मुझे देखा तहकीक उसने हक को देखा)

(लैसा फ़ी हुब्बती सिवल्लाह)

(मेरे जुब्बे में अल्लाह के सिवा नहीं है) इसलिये कि तश्बीह तन्जी नुमा थे। चुनाँचे फरमान इलाही के बमोजिब (ऐ मुहम्मद इस दरख्त के नीचे बैअत का सिलसिला कायम कर दो) आपने कलम लगाना (बैअत करना) शुरू कर दिया। साहबाकराम मिस्ल तुख्मी

आम के थे और उनमें खुदी का फल लगा हुआ था। हुजूर से बैअत किया। सच्ची मुहब्बत और अक़ीदत के साथ हजरत अली रजि0 वगैराह ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कलम लगवाई तो फना फिर-रसूल होकर हयातुन नबी (जिन्दा नबी) का राज़ (भेद) हो गये। वही सिलसिला बैअत का अब तक चला आ रहा है।

हजरत पीरो मुर्शिद-

शेर है सिर्रे हयातुन-नबी शेखे कामिल।
वह फ़ानी है उसमें नबी जलवागर है।।
क़लम लगती आई नबी से वली की।
जो था नस्ल तुख्मी वह कलमी शजर है।।

125 जो है शौक़ हक़ हो मुहम्मद में फानी।
कि हक के वही जात पेशे नजर है।।
हुआ जो कोई अपने मुर्शिद में फानी।
नबी उसमें जाहिर खुदा मुस्ततर है।।

हज़रत मौलाना रूम फरमाते हैं-

शेर बमन आम्दम मरते खुदा मैं खुरदम अज़ दस्ते खुदा।
हस्तिये मन हस्ते खुदा हाज़ा जुनूनुल आशिकी।।
आँ शम्श बुगुजरदअज जहाँ ईं शम्श आमद नागहाँ।
आँ ऐनेईं, ईं ऐने आँ, हाजा जुनूनुल आशिकी।।

अर्थ- पीर के हाथों जो बाकी बिल्लाह था मैंने शराबे मारफत पी और खुदा हो गया। अपनी हस्ती को फानी और खुदा की हस्ती को बाकी पाया, यह इश्क का जुनून है। मेरा पीर शम्श तबरेज मेरे दिल से महो हो गया, इसलिये कि जब उससे कलम लग गई तो मैं खुद वही हो गया। अब उसमें और मुझमें कोई फर्क नहीं रहा, और यह इश्क के गलबा की बदौलत हुआ। फिर फरमाते हैं-

शेर पीरो हक़ राजे हौली हर कि दो दीद।
ऊ मरीद अस्त फ़िलहक़ीक़त नै मुरीद।।

अर्थ- पीर और खुदा को जिसने दो देखा, वह मुरीद के बजाये हक़ीक़त में मुरीद न रहा मरदूद हो गया।

न खुदी है न खुदाई फ़क़त एक जात वाहिद है। और तमाम उसी का मज़हर है। मुरीद होने के बाद लाज़िम है कि वह यक़ीन करे कि उसने जितने गुनाह सग़ीरा (छोटे) और कबीरा (बड़े) किये थे वह सब माफ़ हो गए और आइन्दा (आगे) हर क़िस्म के गुनाहों से बचे और शरीयत के अहकाम (हुक्मों) की पूरे तौर पर पाबन्दी करे। शेख सादी फ़रमाते हैं-

शेर खिलाफे प्यम्बर कसे रह गज़ीद।
कि हरगिज़ बमन्ज़िल न खाहद रसीद।।

अर्थ- जिसने शरीयत के खिलाफ रास्ता अपनाया, वह हरगिज मन्जिल तक नहीं पहुँच सकता।

पीर की तालीम पर अमल करे और सच्ची मुहब्बत व अक़ीदत कामिल रखे, यहाँ तक कि जान, माल और औलाद सबसे ज्यादा अज़ीज़ हो जाये ताकि इश्क कमाल को पहुँच जाये, यहाँ तक कि पीर में फ़ना हो जाये।

اَلْعِشْقُ نَارٌ يَّحْرِقُ مَاسِوَى الْمَحْبُوْبُ

(इश्क एक ऐसी आग है जो महबूब के सिवा (ग़ैर) को जला देती है।

शेर (1) अगर है तमन्नाए तक्मीले हस्ती।
तो खाके दरे पीर मैखाना बन जा।।

(2) जात मुर्शिद में हो के फानी जो आप अपने को मैंने देखा।
फिर आगे क्या है, अली को देखा, नबी को देखा खुदा को देखा।।

पस बैअत का मक्सद यानी मारफते इलाही जो हमारी पैदाइश का मन्शा है हासिल हो जायेगा। मुरीद खुद से फानी और अल्लाह की जात से बाकी हो जायेगा। नीचे लिखी बातों पर मुरीद को अमल करना चाहिये।

(1) पीर से कलिमए तौहीद को अच्छी तरह समझकर इलमुलयकीन को ऐनुलयकीन और फिर ऐनुलयकीन को हक्कुल-यकीन से बदल दे। जब यह बात मालूम हो गई कि अल्लाह के सिवा कुछ मौजूद नहीं, और हर शै अल्लाह की ऐन है गैर नहीं तो फिर हर रंग व हर शान में अल्लाह ही देखे।

हज़रत न्याज अहमद-

शेर आशिकों के मदरसा में जिनकी बिसमिल्लाह हो।
उसका पहला ही सबक यारो फना फिल्लाह हो।।

न खुदी है न खुदाई है फ़क़त एक जात वाहिद है और उसी का तमाम आलम मजहर है। शेख सादी-

शेर कि ब चश्माने दिल मबीं जुज़ दोस्त।
हर कि बीनी बिदाँ कि मजहरे ओस्त।।

अर्थ- दिल की आँख से दोस्त के सिवा कुछ मत देख, जो कुछ तू देखे जान कि उसी का मज़हर है।

127 और अल्लाह फरमाता है-

فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِى الْاَبْصَارِ

अर्थ- (कुरआन, एतिबार कर लो ऐ आँख वालो)- (अल्लाह ही अव्वल, आखिर, ज़ाहिर और बातिन है)

(2) **पास अन्फास** (साँस की हिफाजत)- जो साँस नाक के जरिया अन्दर जाती है उससे "अल्लाह" और जो बाहर निकल रही है उसमें "हू" निकाले, कोई भी साँस बेकार न खोए। अगर कुछ दिन के बाद इस शग़ल से गरमी और वहशत मालूम हो तो "सल्लल्लाहु अलैका या मुहम्मद" का ठन्डा शग़ल करना चाहिये। इसलिये कि "अल्लाह हू" का मशग़ला गरम है।

(3) **पीर का तसव्वर**- अकीदत और मुहब्बत के साथ पीर की जात को फना फिर-रसूल और बाकी बिल्लाह यकीन करके उसकी सूरत को हमेशा अपने आईनये ख्याल में देखा करे। और इस क़दर पक्का हो जाये कि अपनी सूरत भूल जाये और वही सूरत पीर की अपनी सूरत हो जाये।

(4) **तवक्कल**-अल्लाह तआला फ़रमाता है-

अर्थ- कुरआन, अल्लाह तवक्कल (अल्लाह पर ईतिमाद) करने वालों को दोस्त रखता है, और फ़रमाता है, अल्लाह पर तवक्कल करो अगर तुम मोमिन हो) मालूम हुआ कि तवक्कल शर्त ईमान है। पस तालिबे हक़ पर तवक्कल वाजिब है। बगैर तवक्कल के कोई हक़ पा नहीं सकता, और तवक्कल यह है कि अल्लाह ही को अपना वकील बनाये और कुल मामिलात दीनी और दुन्यावी उसी के सुपुर्द कर दे, और अपने दिल को दुनिया के रंजो राहत से अलग रखे, और सब कुछ अल्लाह के हवाले कर दे।

(5) **सब्र**-अल्लाह की मर्जी पर राजी रहना जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ

(पारा 2, रुकू 3) ऐ ईमान वालो मदद माँगो साथ सब्र और नमाज़ के, तहक़ीक़ अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है)

शेर- रज़ा के कूचे से हट न जाना बला की मन्जिल में घर बसाना।
कहे है साबिर जिसे जमाना वह सब्र तुमको सिखा चुके हैं।

सैयदना हज़रत इमाम हुसैन के वाक़ियात से हमको सबक सीखना चाहिए।

(6) **क़ल्ब** (दिल) की महाफिजत को जो अल्लाह का हरम (काबा) है गैरअल्लाह से पाक करे यानी दिल से सिवा अल्लाह के नाम के कोई नाम न निकले। हज़रत खाजा अजमेरी फ़रमाते हैं-

शेर गर वस्ल खुदा खाही हमनशीने नामश बाश।
बुबीं विसाले ख़ुदा दर विसाले नामे खुदा।।

अर्थ- अगर अल्लाह से वस्ल (मिलना) चाहता है तो उनके नाम का वज़ीफ़ा पढ़, और उस नाम के वस्ल ही में वस्ले खुदा देख।

हजरत मगरबी-

शेर पाक गर्दद दिल अगर अज़ जुमला फ़िक्र।
हक शवद मश्हूद गैर अज जिक्र व फिक्र।।
यक सरे मू बाशदत गर फिक्र गैर।
दर दुरुने काबये दिल हस्त देर।।
पाक कुन अज़ बुत तू बैतुल्लाह रा।
ता अयाँ बीनी जमाले किबरिया रा।।

अर्थ- अगर तेरा दिल तमाम फिक्र से पाक हो जाये, तो हक़ मौजूद हो जाये जिक्र व फिक्र के बगैर। एक बाल के बराबर भी अगर दिल में गैर की याद है तो काबा के अन्दर बुतखाना है। बुतों (गैर अल्लाह का ख्याल) से तू बैतुल्लाह यानी दिल को पाक कर ताकि किबरिया के जमाल को साफ-साफ देखे।

129 अगर एक बाल की नोक बराबर भी गैर अल्लाह का ख्याल आया तो तूने दिल के काबा को बुतखाना बना दिया। लिहाजा अपने दिल को जो काबतुल्लाह है बुत (गैर अल्लाह) के नामों से पाक कर ताकि तू अल्लाह के जमाल को अलानिया देखे।

बेकार जिक्र से नूरे खुदा ज़ाये होता है। दिल में अगर कोई ख्याल आ जाये तो उसे रोक दे। माजी और आइन्दा के बारे में न सोचे सिर्फ मौजूदा हाल पर क़ायम रहे।

मौलाना रूम-

शेर नक्द हाले खेश रा गर पै बुरेम।
हम जे़ दुनिया हमज़े उक्बा बर खुरेम।।

अर्थ- अगर हम नक्द हाल पर कायम रहें तो दुनिया व उक्बा के गम से नजात पा जाएँ।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया। (अर्थ हदीस, जिसने सुकून अख्तियार किया वह सलामती पा गया, और जो सलामती पा गया उसको नजात मिल गई) हासिल यह कि बिला जरूरत न तो बोले न दिल में खतरात लाए सिर्फ अल्लाह का नाम ही ज़िहन में रहे। हज़रत अली फ़रमाते हैं (अर्थ, मैंने अपने रब को अपने इरादों के निदा देने से पाया) अगर दिल से अदले बदलते रहने की सिफ़त दूर हो जाये तो यह सही माने में अर्श हो जाये और अल्लाह का जलवा नजर आये। कम खाना, कम सोना, और कम बोलना तालिबे हक के लिये जरूरी है ताकि रूहानी

ताकत का गलबा हो और माद्दियत का खातमा और अल्लाह से कुर्बत हासिल हो। क्योंकि जिक्र इलाही रूही गिज़ा है और खाना पानी, माद्दी चीज़ें जिस्मानी गिज़ा। पस
130 खुरो नोश (खाना पीना) में जितनी कमी की जायेगी, उतनी ही रूहानी तरक्क़ी होगी। फुर्सत के वक्तों में अपने दिल की तरफ़ जो सीने में बायें तरफ होता है सर झुका कर मुतवज्जुह हो जाये और दिल से "अल्लाह अल्लाह" की आवाज निकाले और यह यकीन करे कि दिल अल्लाह के जिक्र में लगा है।

फिर उसके बाद आँखों को बन्द करके अपने पीरी मुर्शिद की सूरत अपने ख्याल के आईने में देखे और उसको फ़ना फ़िर-रसूल य़कीन करके साँस से 'सल्लल्लाहु अलैका या मुहम्मद' का पास अन्फास यानी साँस निकाले। जब यह तसव्वर खूब जम जाये, तो फिर बैअत यानी बेची नामा के राज को खूब समझ कर और यकीन करके कि मेरी सूरत बिक गई है और उसके बदले पीर की सूरत मोल में मिली हुई है। लिहाजा अपनी सूरत को उस सूरत से बदली हुई यकीन करके ख्याल से पलट कर देखें यानी अपनी सूरत ही पीर की सूरत समझे और यकीन करे मगर इसके साथ "सल्लल्लाहु अलैका या मुहम्मद" के पास अन्फ़ास से गाफ़िल न हो।

शेर अपना खोया हुआ पा जायेगा आपा बखुदा।
गौर से शीशए महबूब कोई देखे तो ।।
नूरे हक़ अपनी ही सूरत में नजर आयेगा।
है यही मतलये अनवार कोई देखे तो।।

हज़रत सूफी शाह मुहम्मद इफतिखारुल हक़ रहमत उल्लाह अलैह-

शेर धोका है तुझे शीन नहीं मीम है बिसमिल।
मीज़ान में असरात वही तौल रहा है।।
इस शक्ल मिसाली को समझ मीम का बरज़ख।
जो राज़ यह समझा वही लाहौल रहा है।।

131 दूसरी जगह फरमाते हैं-

शेर इदराक खुदी जब न रहे बाद को क्या हो।
बेरंगियो बेसूरती हो नामे खुदा हो।।
जब बुलबुले लाहूत रिसाई हो यहाँ तक।
तश्बीह बना शाहिदे तंजीह खड़ा हो।।
इस सिर में अलिफ चाहिए हो शाहिदो आशिक।
जो हो हर्फ मीम वह मश्हूद बना हो।।
तक़्सीम दो कौसैन में हो दायेरा हू का।
महबूब हो खुद खुद को खुद ही ताक रहा हो।।

रोजाना पीरो मुर्शिद के दिये हुये शजरा को पढ़ा करें और सुबह शाम सौ सौ मर्तबा कलिमा शरीफ और दरूद शरीफ के साथ ही भी सौ मर्तबा पढ़ लिया करें

يَابَدِيْعُ الْعَجَائِبِ بِالْخَيْرِ يَابَدِيْعُ

ताकि दीवानगी न पैदा हो। उसके बाद के औराद व मशगिल को अपने पीर से मालूम करके और पूछ कर करें ताकि अल्लाह के नाम का नहीं बल्कि मुसम्मा (जात) का पता चले और मुरीद होने का मक़सद पूरा हो।

मौलाना रूम-

शेर इस्म बुगुजारो मुसम्मा रा बजो।
क़ाल रा बुगज़ार मर्दे हाल शो।।

अर्थ- नाम को छोड़कर नाम वाले की तलाश कर, जिक्र छोड़कर मजकूर (जिसका जिक्र किया जाये) का इदराक कर। रबूबियत का भेद बहुत बड़ा राज है जिसके छुपाने का हुक्म है। जैसे मर्द अपनी बीबी को बालिग होने पर नुत्फा देता है, उसी तरह पीर कामिल जब मुरीद में काबलियत हक़ीक़त के कुबूल करने की पाता है तब उसे हकीकत का भेद बताता है। तालिबे हक़ की अक़ीदत का मेयार यह है कि वह अपने पीर को फ़ानी फिर रसूल और बाकी बिल्लाह जाने, और उसकी मुहब्बत इस दरजा बढ़ जाये कि अपनी जान और माल, और औलाद से बढ़कर मुहब्बत करने लगे।

132

इसलिए कि हकीकत यानी मुसम्मा (जात) का इदराक अपनी मेहनत मुजाहिदा और रियाज़त या इबादत से हासिल नहीं होता। बल्कि यह वहबी यानी पीर अता (देने) से हासिल होता है।

नीचे की चन्द (कुछ) दुआएँ और दस अशग़ाल जिक्र नुमा को अपने पीर से समझ कर और इजाजत लेकर उसके बताए हुए तरीकों से अपने अमल में लाए और इसको हमेशा अपने विर्द (दौरा) में रखे ताकि लताफत रूही और तजहुद मिसाली की कैफ़ियत हासिल हो।

हुआहाये मासूरा (असर रखने वाली दुआएँ)-

اَللّٰهُمَّ اَمِتْنَا قَبْلَ مَوْتِنَا وَبَارِكْ لَنَا فِى الْمَوْتِ وَفِيْمَا بَعْدَ الْمَوْتِ

(1) ऐ अल्लाह मार डाल तू हमको मौत तलबी से पहले और मुबारक हो हमारे लिए वह मौत और वह जो अता करें मौत के बाद।

اللّٰهُمَّ فَرِّجْ عَنْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ ۝ اللّٰهُمَّ اَصْلِحْ
اُمَّةَ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ ۝ اللّٰهُمَّ تَكَرَّمْ عَلٰى اُمَّةِ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ
وَالسَّلَامُ ۝ اللّٰهُمَّ اغْفِرْ اُمَّةَ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ
اللّٰهُمَّ ارْحَمْ اُمَّةَ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ ۝

(2) ऐ मेरे अल्लाह तू हर दुश्वारी से जिसमें उम्मते मुहम्मदिया मुबतिला हो या हो जाये, बचाये रखना, ऐ मेरे अल्लाह हर वह ऐबो अमल उम्मते मुहम्मदिया का जो तुझे नापसन्द हो, इस्लाह फरमा दे, ऐ मेरे अल्लाह करम फरमा तू उम्मते मुहम्मदिया पर, ऐ मेरे अल्लाह तू मग़फिरत और बख़्शिश फरमा उम्मते मुहम्मदिया पर, ऐ मेरे अल्लाह रहम फरमा तू उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम पर।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِنُوْرِ الْاَنْوَارِ الَّذِیْ هُوَ عَیْنُكَ لَا غَیْرُكَ
اَنْ تُرِیَنِیْ وَجْهَ نَبِیِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ كَمَا هُوَ عِنْدَكَ اٰمِیْن

(3) ऐ मेरे अल्लाह मैं तुझसे सवाल करता हूँ उसी नूर के तुफैल से जो तेरे नूर का ऐन है, गैर नहीं, अपने नबी के चेहरे के ओर मेरे दरमियान के परदों को फाड़ डाल, और उस चेहरे को मेरे सामने वैसे ही रख जैसा कि तू अपने सामने रखता है। (आमीन)

اللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِيْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ
لِرُؤْيَةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدُ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نُوْرَ اللّٰهِ وَظُهُوْرَهُ
الْاَوَّلَ ۝ فِيْ كُلِّ لَمْحَةٍ وَّنَفَسٍ عَدَدَ مَا وَسِعَهٗ عِلْمُ اللّٰهِ ۝

(4) ऐ मेरे अल्लाह हम सब तेरी तजल्लियाँ तमामी तऐयुनात को कुर्बान करके तेरी पनाह में आती हैं अपने शुरूर (शरारतों) से ताकि मुहम्मद की रूयत (जलवा) हासिल हो, और रहमते कामिला इलाहिया नाज़िल हो तुझ पर ए मुहम्मद और सलाम ताम्मे (कामिल) इलाही, ऐ नूर और पहले जहूर अल्लाह के, हर लम्हे और साँस भर के जमाने में उतनी मर्तबा जितने आदाद का इल्म अल्लाह को है।

سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ الَّذِيْ لَا يَبْقٰى بِتَجَلِّيْ عَظَمَتِهٖ شَيْءٌ ۝
سُبْحَانَ اللّٰهِ الْحَيِّ الْبَاقِيْ بَعْدَ فَنَاءِ خَلْقِهٖ ۝
لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۝ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ۝ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝
اللّٰهُمَّ اجْعَلْ وَجْهَكَ الْكَرِيْمَ مَقْصُوْدِيْ

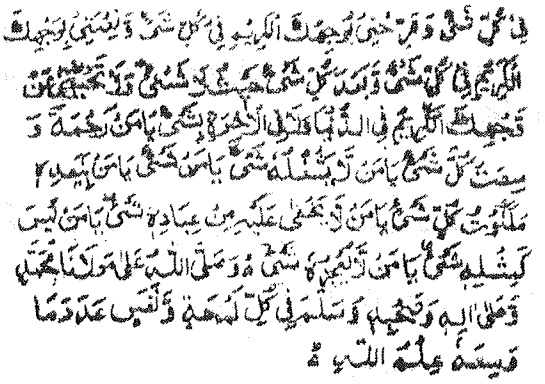

134 (5) ऐ मेरे अल्लाह गर्दान ले अपनी जात करीम को मेरा मक़्सूद हर शै (चीज) में और फरहत (ताजगी) बख्श मुझको अपनी जात करीम की नेमत से हर शै में और नेमत बख्श मुझको अपनी जात करीम से हर शै में, हर शै के कब्ल (पहले) और हर शै के बाद भी हत्ता (यहाँ तक) कि किसी शै का इदराक न रहे और मत परदा डाल मेरे हिस और इदराक और अपनी जात के दरमियान दुनिया और आखिरत में किसी शै में भी ऐ वह जात करीम अपनी अहदियत के जहूर की तजल्लियात सैयेआ में से किसी एक शै को गुम नहीं होने देती, ऐ वह जात कि जिसके हाथ में कुल भेद है, ऐ वह जात करीम कि जिससे अपने इबाद (बन्दों) पर कोई भेद पोशीदा (छुपा) नहीं किसी शै का, ऐ वह जात करीम कि जिसके मानिन्द दुनिया व आखिरत की कोई शै नहीं और न मजबूर व क़ासिर मुतलक है। किसी शै से, और रहमते कामिला नाजिल फरमा ऐ अल्लाह अपनी और हमारे आका मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनके आल व अस्हाब पर हर लम्हे और साँस भर के जमाने में उतनी बार जितने आदाद तेरे इल्म में हैं।

दस अश्ग़ाल जिक्र नुमा-

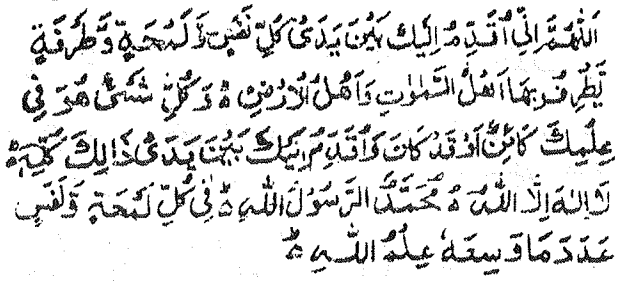

135 (1) ऐ मरे अल्लाह सबसे पहले मैं तेरी तरफ़ मुतवज्जुह होता हूँ अपने हर साँस व हर छन भर के जमाने और हर तरफ में कि तरफ होते रहते है, और उनमें अहलुस-समावात और अहलुल-अर्ज हैं और वह शै कि तेरे इल्म में थी जमाना गुजरे हुए में,

और हर वह शै जो हो गई तेरे इल्म में ज़माना आने वाले में, पस दोनों हाथों के दरमियान तू अकेला है। कोई मौजूद नहीं है सिर्फ तू है मुहम्मद रसूल अल्लाह के पास, पस कहने को एक बार मगर यह उतनी बार है कि हर साँस व हर लम्हे में जितना तुझे आदाद का इल्म है।

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ يَامُحَمَّدُ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نُوْرَ اللّٰهِ ظَهُوْرُهٗ
الْاَوَّلُ فِىْ كُلِّ لَمْحَةٍ وَّنَفْسٍ عَدَدَمَا وَسِعَهٗ عِلْمُ اللّٰه

مُحَمَّدٌ عَبْدُ اللّٰهِ

اِنِّىْ عَبْدُ اللّٰهِ

بِكَ الْكُلُّ وَمِنْكَ الْكُلُّ وَاِلَيْكَ الْكُلُّ يَا كُلَّ الْكُلِّ

(5) कुल तुझमें है कुल तुझसे है ऐ कुल के कुल।

اَنْتَ فَوْقِىْ اَنْتَ تُحْتِىْ اَنْتَ اَمَامِىْ اَنْتَ خُلْفِىْ اَنْتَ يَمِيْنِىْ اَنْتَ
يَسَارِىْ اَنْتَ فِىَّ وَاَنَا مَعَ الْجِهَاتِ فِيْكَ اَيْنَمَا تُوَلُّوْ فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰه

(6) तू मेरा फ़ौक़ है, तू मेरा तहत है, तू मेरा इमाम है, तू मेरा खलफ़ है, तू मेरा यमीन है, तू मेरा ईसार है, तू मेरे अन्दर है, और मैं तमाम जिहतों के साथ तुझमें हूँ, जिस जगह फेरे जावें वह पस उस जगह अल्लाह ही है।

اَلْحَقُّ اَحَقُّ بِاَنْ يَّقُوْلَ اَنَا الْاَوَّلُ اَنَا الْاٰخِرُ اَنَا الظَّاهِرُ اَنَا الْبَاطِنُ

(7) हक़ को हक़ है यह कहने का कि मैं अव्वल हूँ, मैं ही आखिर हूँ, मैं ही ज़ाहिर हूँ, मैं ही बातिन हूँ।

اَلْحَقُّ اَحَقُّ بِاَنْ يَّقُوْلُ اِنِّىْ اَنَا اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنَا

(8) हक़ को हक़ है यह कहने का कि मैं ही अल्लाह हूँ पस कोई शै बई हैसियत मौजूद नहीं है कि मौजूद भी हो और मेरी गैर भी हो।

اَلْحَقُّ اَحَقَّ بَاَنْ يَّقُوْلُ اِنِّى اَنَا اللّٰهُ الْاَحَدُ الصَّمَدُ

(9) हक़ को हक़ है यह कहने का कि मैं ही अल्लाहअहदुस-समद हूँ।

اَلْحَقُّ اَحَقُّ بِاَنْ يَّقُوْلَ اِنِّى اَنَا اللّٰهُ الظَّاهِرُ بِالْمَظَاهِرُ

(10) हक़ को हक़ है यह कहने का कि मैं अल्लाह जाहिर हूँ अपने मज़ाहिर कुल्लिया के साथ।

❖ ❖ ❖

अध्याय-11

ज़रूरी नसीहतें और शरीअत पर चलने की ताकीद

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ

(पारा 11, रुकू 2) अल्लाह खरीदार है मुसलमानों की जानों और मालों का और उसके एवज उनके लिए जन्नत है) यानी यह कि अपने ऊपर से अपना अख्तियार बिलकुल हटा ले और अपने आप को अल्लाह तआला के हवाले कर दे, और अल्लाह के कानून का पाबन्द हो जाये, उसकी मर्जी के खिलाफ कोई काम न करे, नमाज, रोजा, हज और ज़कात का पाबन्द रहे।

मुसलमानों अगर तुमको फरमान हक पर यकीन है तो ऐसा सौदा क्यों नहीं करते, फिर ऐसा कीमती मौका न पाओगे। अफ़सोस करोगे और पछताओगे। यह सौदा नहीं लूटने का वक्त है कि एक बादशाह अपना खजाना लुटा रहा है और तुम अपने दामनों में कंकरियाँ भरते फिर रहे हो, और तुम जवाहरात नहीं उठा सकते।

नादानों! कंकरियाँ फेंको और जावहरात उठाओ वर्ना मौत का फरिश्ता तुम्हारी जिन्दगी का चिराग बुझा देगा। और यह कंकरियाँ भी हाथ से जाती रहेंगी, और जवाहरात भी न मिलेंगे। जिसने अल्लाह के साथ सौदा करने के बजाये शैतान के साथ सौदा किया यानी अल्लाह व रसूल की मर्जी के खिलाफ अपनी खाहिशात की पैरवी की, बजाये जन्नत में जाने के जहाँ हर किस्म की नेमतें, ऐशो-इशरत के सामान हैं जहन्नम में जायेगा, जहाँ हमेशा-हमेशा सख्त से सख्त अज़ाब होगा।

रसूल मकबूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है (हदीस पाक का अर्थ, दुनिया आखिरत की खेती है) लेकिन हम लोगों ने आखिरत पर दुनिया को तरजीह दे रखा है। और रात व दिन दुनिया ही में फंसे रहते हैं दीन की तरफ़ कोई तवज्जुह नहीं है। मौलाना रूम-

शेर अहले दुनिया काफ़िराने मुतलक़ अन्द।
रोज़ो शब दर ज़क़ ज़क़ो दर बक़ बक़ अन्द।।

अर्थ- दुनियादार काफिर मुतलक हैं कि रात व दिन जक़ जक़ और बक़ बक़ में लगे

हैं यानी दुनियादार रात व दिन दुनिया के कमाने में लगे रहते हैं और आखिरत का कोई ख्याल नहीं आता, जहाँ उन्हें वापस जाना है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है, (अर्थ हदीस पाक, दुनिया मोमिन के लिए जहन्नम और काफ़िर के लिये जन्नत है,) अल्लाह के नजदीक दुनिया कमीनी चुड़ैल की तरह बदसूरत है, और दुनियादारों के नजदीक दुनिया सजी हुई दुलहन की तरह खूबसूरत है। अफ़सोस दुनिया चल चलाऊ है, और उमरें खत्म हो रही हैं, आखिरत करीब है, लेकिन हमको कोई फिक्र नहीं है। दुनिया के बदले आखिरत को बेच रहे हैं, और बाकी के बदले फानी को मोल ले रहे हैं। हालाँकि हम दुनिया के लिये नहीं आखिरत के लिये पैदा हुए हैं। मौलाना रूम अपनी मसनवी (किताब) में लिखते हैं। एक बादशाह को भुगन्दर का मर्ज हो गया और वह सख्त परेशान था। एक हकीम के मशविरे से उसके जख्म पर उम्दा किस्म का हलवा बाँधा जाता था और दूसरे दिन उसे खोलकर मेहतर बाहर फेंक आता था। एक रोज मेहतर ने देखा कि एक गरीब आदमी उसे नेमत समझ कर बहुत शौक से खा रहा है। मेहतर ने उस आदमी से कहा ऐ बेवकूफ जिसे तू नेमत समझ कर खा रहा है वह जहर कातिल है। कि बादशाह की शर्मगाह पर बाँधा जाता है, और उसमें जहरीले कीड़े होते हैं जो तेरी जिन्दगी का खात्मा कर देंगे। यह सुनकर उसे ऐसी नफ़रत पैदा हुई कि कै करने लगा और उसकी आँते तक उलट आईं। मौलाना फ़रमाते हैं कि इसी तरह जरा सी दुनिया की आरजी लज्जत के लिये उक्बा आखिरत की परवा नहीं कर रहे हैं। और यह नहीं समझते कि दुनिया की मुहब्बत अल्लाह व रसूल को नाराज, जन्नत से दूर और जहन्नम की आग से क़रीब करने वाली है। अल्लाह
139 तआला फरमाता है। (अर्थ- कुरआन, अल्लाह से डरो अगर तुम मोमिन हो) लिहाजा जो अल्लाह से डरेगा वह जरूर शरा (शरीअत) की पाबन्दी करेगा। मसनवी शरीफ में लिखा है कि एक शख्स हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाजिर हुआ और कहा कि अल्लाह की मुझ पर बहुत बड़ी इनायात है। मुझे दुनिया में इज्ज़त, दौलत, तन्दुरुस्ती अता फरमाई और मेरी तमाम जरूरतें पूरी फरमाता है, हालाँकि मैं उसका नाफरमान बन्दा हूँ। बल्लाह तआला की तरफ़ से हज़रत शुऐब पर वही (पैगाम इलाही) आई कि यह सब मेरे कहर और गजब की निशानियाँ हैं न कि इनायत की। क्योंकि मेरी इनायत तो यह है कि बन्दे को अपनी इबादत करने की तौफीक देता हूँ, और उसमें उसको लज्जत बख्शता हूँ। मालूम होना चाहिये कि ज़र्रा भर अल्लाह की याद हजारों साल की बादशाहत से अफ़ज़ल है। इस लिये कि दुनिया बिलकुल फ़ानी खाब व ख्याल है,और दिल मिस्ल आईना के है, अगर उसका रुख दुनिया की तरफ है और पुश्त (पीठ) खुदा की तरफ़, इसी लिये दीदार हक़ से महरूम है। और अगर उस आईने का रुख अल्लाह की तरफ और पुश्त दुनिया की तरफ हो जाये तो अललाह

की सच्ची मुहब्बत और कशिश पैदा हो जाये। और अगर उस आईने के रुख को दुनिया की तरफ से न मोड़ा, और उसी हालत में मरा, और उस आईने को औंधा ही बग़ल में दाब कर उस जहान में ले गया तो क़यामत में भी दीदार हक़ से महरूम रहेगा। पस दुनिया जिसको महबूब है वह काफिर व सियाह है। शैतान जो बारगाहेइलाही का कुत्ता है, जब दुनिया को जो मुरदार है उस मुरदारखाने वाले कुत्ते को निवाला न देगा बादशाहे आज़म (दरगाहेइलाही) के दरबार में न जा सकेगा। दुनिया महज खाबो-ख्याल है, जीस्त जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं, लिहाजा दुनिया की मुहब्बत दिल से निकाल कर आखिरत की फिक्र करनी जरूरी है।

140 एक मरतबा खाजा हसन बसरी वाज़ (नसीहत) फ़रमा रहे थे कि असर की नमाज़ का वक़्त आ गया और हजारों सुनने वाले मौजूद थे, आपने फरमाया "ऐ मुसलमानो इस वक्त से मगरिब तक जिस किसी को अपने जिन्दा रहने का यक़ीम कामिल हो वह आगे आ जाये। मगर कोई आगे न आया। फिर फ़रमाया कि ऐ मेरे भाइयो तुम्हारे न निकलने से यह मालूम होता है कि किसी को अपनी आइन्दा जिन्दगी पर जर्रा भर भी भरोसा नहीं है, तो फिर मौत को मुक़द्दम समझते होगे। तो जो कोई अपने मौत की तदबीर यानी आखिरत की फिक्र करता हो वह आगे निकल कर आये। फिर भी कोई न निकला। तो आपने फिर फरमाया कि अफसोस! ऐ गाफिलो, कि जिन्दगी का तुम्हें एतिबार नहीं और मौत की तदबीर नहीं, क्या गजब है और कैसी बेहोशी है कि आखिरत की परवाह नहीं। यह सुनते ही सब के सब रोने लगे, और बहुतों ने उसी वक्त तोबा की। मुसलमानो को इस वाक्या से सबक लेना चाहिए, और सच्चे दिल से तोबा करके साबित कदम रहना चाहिये। अल्लाह पाक हर छोटे बड़े गुनाहों का माफ़ करने वाला है, अगर कोई गुनाह हो जाये तो उसकी रहमत से मायूस न हो बल्कि गुनाह की गन्दगी को तोबा के पानी से धो डाले।

हलाल और हराम में पहचान होनी चाहिए। हलाल खाने से दिल रोशन होता है, और हराम लुक़्मा खाने से दिल सियाह हो जाता है। और भले बुरे की पहचान बाकी नहीं रहती। लिहाजा हराम से हमेशा परहेज करना चाहिये। शरीअत की पाबन्दी के साथ ही अल्लाह पर तवक्कल रखना चाहिए, इसलिये कि तवक्कल शर्त ईमान है।
141 पस तवक्कल करना हर फर्द बशर पर वाजिब है। तवक्कल यह है कि अल्लाह को अपना वकील बनाए और कुल दीनी व दुनियावी मामिलात में अपने दिल को फारिग़ रखे।

शेर सब काम अपना करना अल्लाह के हवाले।
नज़दीक आक़िलों के तदबीर है तो यह है।।

हज़रत इब्राहीम जब आग में डाले गये तो जिब्राईल ने पूछा कि जो जरूरत हो

बयान फरमाएं आपने फरमाया-

حَسْبِیَ اللّٰہُ وَ نِعْمَ الْوَکِیْل

(अर्थ, अल्लाह मुझको काफी है)

जब तुम उसकी मर्जी पर चलोगे तो इब्राहिम की तरह दोज़ख़ की आग तुम पर गुलज़ार हो जायेगी।

ज़ात वाजिबुल वजूद रूह व मिसाल, और जिस्म व लिबास शहूदिया है; जिस तरह तेरा जिस्म इस दुनिया में जामिद और रूह मुतहर्रिक है और उसी तरह आलमे अरवाह में रूह जामिद और उसकी मुतहर्रिक रूहुल अरवाह है यानी जात इलाही है। यही अर्थ (नेक व बद का क़ादिर अल्लाह है)

وَالْقَدْرِ خَیْرِہٖ وَشَرِّہٖ مِنَ اللّٰہِ تَعَالٰی

अर्थ- (अल्लाह के हुक्म के बगैर कोई जर्रा हरकत नहीं करता) का है। इसे यूँ समझो कि जब तुम्हें गर्मी मालूम होती है तो तुम हाथ में पंखा लेते हो, मगर हवा उस वक्त तक नहीं लगती है जब तक कि तुम पंखे को हिलाते नहीं हो, और पंखा नहीं हिलता जब तक कि तुम्हारा हाथ नहीं हिलाता, और तुम्हारा हाथ उस वक्त तक नहीं हिलता जब तक कि तुम्हारा दिल हुक्म न लगाए, और दिल अल्लाह के कब्जा में है। और वह कुदरत का हाथ है। पस मालूम हुआ कि असली हरकत करने वाला खुद खुदा है। जैसा कि अल्लाह ने फरमाया।

وَمَا رَمَیْتَ اِذْ رَمَیْتَ وَلٰکِنَّ اللّٰہَ رَمٰی

अर्थ- (ऐ पैगम्बर जब तूने कंकरियों को फेंका था, वह फेंकना अल्लाह ही का था) यानी यह काम तेरा न था बल्कि मेरा काम था।

मौलाना निज़ामी कंजवी फ़रमाते हैं-

142 **शेर** तू नेकी कुनी मन न बद करदा अम।
कि बद रा हवालत बखुद करदा अम।।

अर्थ- या अल्लाह जो तू नेकी करता है तो मैंने बदी नहीं की बल्कि बदी अपनी खुदी के हवाले किया है। जब तक हमारी वहमी व एतिबारी खुदी मौजूद है कुल काम हमारा है चाहे वह नेक हो या बद मगर सब बद है, और जब हमारी खुदी अल्लाह की हस्ती में फ़ना हो गई यानी हम न रहे तो फिर तू ही तू है सब काम तेरा है और वह नेक है।

गुनाहों से बचने का अल्लाह पाक ने एक मुजर्रब नुस्खा बताया है और वह यह है।

اِنَّ الصَّلوٰةَ تَنْهٰى عَنِ الفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ

अर्थ- (बित-तहकीक नमाज़ तमाम बुराईयों से रोक देती है) इसलिए कि जब हम हुज़ूर पाक के बताए हुए तरीके पर नमाज पढ़ने की हालत में यह यकीन रखेंगे कि हम अल्लाह को देख रहे हैं या यह कि अल्लाह हमको देख रहा है, तो अल्लाह के मशहूद व मौजूद होने का पक्का यकीन हो जाये तो हमसे कैसे कोई गुनाह होगा। और नमाज की पाबन्दी के बगैर अल्लाह के शाहिद और मशहूद होने का यकीन न तो पक्का हो सकता है और न ही हम गुनाहों से बच सकते हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पर बहुत ज्यादा जोर देकर फरमाया।

مَنْ تَرَكَ صَلاتِيْ مُتَعَمِّداً فَقَدْ كَفَرَ

अर्थ- (जिसने क़स्दन नमाज़ छोड़ी वह कुफ्र के करीब हो जाता है) लिहाजा बिला किसी उज्र शरई के नमाज़ हरगिज कज़ा न करनी चाहिये।

नमाज़ गुनाहों से रोकने के अलावा मोमिनों के लिए मेराज भी है। यानी अल्लाह से मिलाने वाली है।

एक रोज हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पास एक औरत ने आकर कहा कि मैंने जिना करके हरामी बच्चा जना और उसे कत्ल भी कर दिया। आप अल्लाह पाक से मेरी इस खता को माफ़ करने की दुआ कर दें। आपने गुस्सा में फरमाया कि इतना बड़ा गुनाह माफी के काबिल नहीं है। उसी वक्त अल्लाह पाक ने पैग़ाम भेजा कि ऐ मूसा मेरा जो बन्दा नमाज नहीं पढ़ता वह मेरे नज़दीक एक जानिया और कातिला औरत से कहीं ज्यादा बुरा है। लोगों इस वाक्या से सबक सीखो, और नमाज़ की पाबन्दी करके अल्लाह के कहर व गजब से बचो।

गुनाहों से बचने के लिए एक दूसरा नुस्खा हुज़ूर पाक ने बताया कि मौत को हमेशा करीब समझो, ज्यादा जीने की उम्मीद न रखो। मसलन अगर किसी को यह यकीन हो जाये कि वह एक महीना के अन्दर जरूर मर जायेगा, तो वह यकीनन उस एक महीना में कोई गुनाह न करेगा। रात दिन रोयेगा और तौबा करता रहेगा, खाना पीना और सोना उस पर हराम हो जायेगा। इसी तरह जब हमको मौत का यकीन होगा तो गुनाह करने से खौफ़ मालूम होगा। हजरत गौस आजम ने फरमाया कि जब रात को सोने लगो तो एक वसीयतनामा लिखकर सिरहाने रख दो ताकि अगर रात में मौत आ जाये तो वह वसीयतनामा बाल बच्चों के काम आ जाये। जब किसी से मिलो
144 तो समझो कि यह आखिरी मुलाकात न हो। जब खाओ और पियो तो समझो कि हो

सकता है कि यह आखिरी खाना पीना हो। अगर मौत को इस तरह याद किया जाये तो वाकई गुनाह करने की हिम्मत न होगी।

अल्लाह फरमाता है-

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِى نَفْسِكَ تَكَرُّعًا وَّ خِيفَةً

अर्थ- याद करो अपने रब को बीच अपने साँस के जोर से और आहिस्ता, लिहाजा याद से अल्लाह की कभी गाफिल नहीं रहना चाहिए।

يَا بَنِىْ اٰدَمَ اَلْفَاسُكَ مَعْدُوْدَةٌ فَمَنْ يَّخْوجُهَا بِغَيْرِ ذِكْرِىْ فَهُوَ مَهْتَهٌ

अर्थ- (हदीस पाक, ऐ इन्सान तेरी साँसें गिनी हैं पस जिसने निकाला अपनी साँस बग़ैर जिक्र अल्लाह के पस तहक़ीक़ वह मुर्दा है)।

يَابَنِىْ اٰدَمَ اَلْفَاسُكَ اَنْبِيَائِىْ فَمَنْ يَّخُوْجُهَا بِغَيْرِ ذِكْرِىْ فَقَتَلَتُ اَنْبِيَائِىْ

अर्थ- (हदीस, ऐ इन्सान तेरी साँसें मेरे नबी हैं, पस जिसने निकाला उन्हें बग़ैर मेरे जिक्र के पस उसने कत्ल किया मेरे नबियों को) लिहाजा जरूरी है कि हर साँस की महाफ़िज़त की जाये और हर साँस से "अल्लाह हू" निकाला जाये कोई भी साँस बेकार न जाये। इस जिक्र में तहारत और वक्त की कोई पाबन्दी नहीं है। इससे जौक़ शौक़ पैदा होता है और बदन हल्का होता है, रूह क़वी से क़वी तर हो जाती है। इसे इस्मे आज़म कहा गया है। यूँ तो हर नाम इस्म आज़म है लेकिन उनमें सिर्फ एक ही सिफत पाई जाती है। जैसे (समी) (बसीर) एक-एक सिफत वाले हैं। लेकिन इस्म अल्लाह तमामी सिफतों को लिए हुए है।

मौलाना रूम-

145 ***शेर*** अल्लाह अल्लाह गुफ्त अल्लाह मी शवद।
ईं सुखन हक़ अस्त बिल्लाह मी शवद।।

अर्थ- अल्लाह खुद अल्लाह कहे अल्लाह हो, यह बात हक है अल्लाह के साथ हो।

पस हर साँस को आखिरी साँस समझना चाहिये। क्योंकि आखिर दम जिसकी याद में निकलेगा उसका हश्र उसी के साथ होगा। लिहाजा अगर पास अन्फास (साँस के जरिया जिक्र) जारी हो गया तो याद इलाही में मौत होगी और अन्जाम बख़ैर होगा। अल्लाह फ़रमाता है।

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْ
ا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

अर्थ- (बित-तहकीक अल्लाह और उसके फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर तुम भी हमेशा उन पर दरूद और सलाम भेजो) चूँकि अल्लाह और उसका रसूल दोनों इस बारे में जोर दे रहे हैं, इसलिये दरूद का पढ़ना हर वज़ाइफ (जिक्र) और आमाल से बढ़कर है। ज्यादती के साथ इसको पढ़ना चाहिये ताकि दीन व दुनिया में दोनों जगह बहबूदी हासिल हो। दरूद की बरकत से रसूल करीम की ज्यारत होती है लिहाजा इसकी ज्यादती करनी चाहिये। एक छोटी मगर जल्दी असर करने वाली दरूद यह है।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّم عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّكَ

रसूल पाक ने फरमाया तीन ग्रोह बचा दिये गये हैं शैतान और उसके शर (बदी) से। अव्वल वह जो रात व दिन जिक्र इलाही में लगे रहते हैं। दूसरे वह जो अल्लाह की बारगाह में तोबा व इस्तिगफ़ार करते रहते हैं तीसरे वह जो खौफ़ इलाही से हर वक्त लरज़ते और आँसू बहाते रहते हैं। पस यह जरूरी है कि इस्तिग़फ़ार पर हमेशगी अख्तयार करे। यह तीन तरह के हैं।

(1) छोटा (2) दरमियानी (3) बड़ा। छोटा यह है

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّىْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ

अर्थ- (बख्शिश तलब करता हूँ मैं अपने अल्लाह से जो मेरा रब है तमाम किए हुए गुनाहों से और तोबा करता हूँ मैं यानी अहद (इक़रार) करता हूँ मैं अल्लाह की जनाब
146 में गुनाहों के न करने का)

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىَّ الْقَيُّوْمَ غَفَّارَ الذَّنْبِ ذِى الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ
وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ مِنْ جَمِيْعِ الْمَعَاصِىْ كُلِّهَا وَالذُّنُوْبِ وَالْاٰثَامِ

अर्थ- बख्शिश तलब करता हूँ मैं अल्लाह अज़मत वाले से वह अल्लाह कि जिसका सिवा और गैर नहीं है। और वह जिन्दा और कायम अपनी जात से भी, और वह साहब बख्शिश का है, हर किस्म के छोटे, दरमियानी और बड़े गुनाहों कुल से और, इसके अलावा मैं इकरार करता हूँ उसके साथ छोटे, दरमियानी और बड़े गुनाहों के करने से।

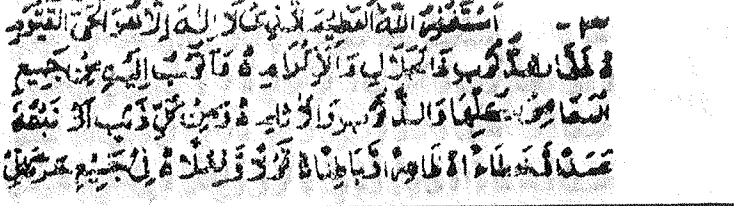

147 **अर्थ-** बख्शिश तलब करता हूँ मैं अल्लाह अज़मत वाले से जिसका कि ग़ैर और सिवा मौजूद नहीं है, और वह अपनी जात से जिन्दा और कायम है, गुनाहों का बख्श देने वाला, साहबे जलाल और बख्शिश का है, हर किस्म के छोटे, दरमियानी और बड़े गुनाहों का कुल से और अहद (इकरार) करता हूँ मैं उससे छोटे, दरमियानी और बड़े हर किस्म के कुल गुनाहों के न करने का, और बख्शिश भी तलब करता हूँ मैं उससे और तोबा भी करता हूँ मैं उसकी जनाब में उन गुनाहों से जिन्हें मैं जानता हूँ, और उन गुनाहों से भी जिन्हें मैं नहीं जानता हूँ या मैं उनको भूल गया हूँ, उतनी मरतबा इस्तिगफ़ार और तोबा का अमल करता हूँ जितने अददों को अल्लाह के इल्म मुहीत है, और उतने शुमार भर कि जिस कदर आदाद व शुमार किताबे मुबीन (रोशन किताब) में रखा गया है और जितने अददों का शुमार लिखा हो, कलमे इलाहिया ने, और जितने अददों को शुमार पाया हो कुदरते इलाहिया अज़ल से अबद तक, और जितने अददों के लिए मन्शाए इलाही कायम हुई हो, और उन तमाम किस्मों के आदाद के लिये कलिमाते इलाहिया लिखने के लिए जिस क़दर रोशनाई कुदरते इलाहिया ने तैयार की हो, उस रोशनाई भर, यहाँ तक कि मेरी इस्तिगफ़ार और तोबा कुल कायेनात के रब के जलाल व जमाल के लायक काबिल हो जाये। और उससे हमारा रब हमसे मुहब्बत करने लगे और हमारा रब हमसे राजी हो जाये और बस।

148 हुजूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "ऐ मेरी उम्मत के लोगो तुम पर फ़र्ज किया गया (लाइलाहा इल्लल्लाह) का पढ़ना और जरूरी किया गया तुम पर इस्तिगफ़ार का पढ़ना जो भी मिस्ल फर्ज के है। पस इब्लीस कहा करता है कि मैं उम्मते मुहम्मदिया के लोगों को हिलाक (मार डालना) किया करता हूँ, गुनाह कराकर, और उम्मते मुहम्मदिया के लोग (लाइलाहा इल्लल्लाहु) यानी कलिमाए तय्यबा की तकरार और ज़िक्र की कसरत (ज्यादती) से मुझको हिलाक किया करते हैं, और अल्लाह की जनाब में तौबा व इस्तिगफ़ार की ज्यादती से मुझको हिलाकत में डालते हैं।

अध्याय-12

ग़ज़लयात

लेखक किताब शम-ए-हक़ीक़त (उर्दू)

मुर्शिदी व मौलाई हज़रत सूफ़ी शाह मुहम्मद ख़लीक़ उल्लाह, क़ादिरी, इफ़्तिख़ारी रहमतुल्लाह अलैह।

(1) जामे मए अलस्त ने मस्ताना कर दिया।
मदहोश कर दिया मुझे दीवाना कर दिया।।
यक कैफ़ बे खुदी मुझे रहता है रात दिन।
साक़ी ने जब से वा दरे मैखाना कर दिया।।
जाहिद था ग़ज़ब का वले जामे इश्क़ में।
अब हालो क़ाल को मिरे रिन्दाना कर दिया।।
वह शाने दिल रुबाई है मेरे हबीब में।
हर दिल को अपने हुस्न का परवाना कर दिया।।
साक़ी तेरी निगाहे करम को मैं क्या कहूँ।
जिसने कि मेरे दिल को परीखाना कर दिया।।
खुददारी व खुदी की घटा दिल पे छाई थी।
पीरे मुग़ाँ ने हाल फ़क़ीराना कर दिया।।
मुझसे बता के मेरी हक़ीक़त का माजरा।
मुर्शिद ने दो जहाँ को अफ़साना कर दिया।।
पूछो न मुझसे मेरी हक़ीकत कहाँ गई।
हुस्नो जमाले यार का नज़राना कर दिया।।
तन्ज़ीह से बना हूँ मैं तश्बीह इश्क में।
मेरे जमाल ने मुझे दीवाना कर दिया।।
149 ग़ाफ़िल था अपने आप से खुद का न था पता।
लेकिन निगाहे यार ने फ़रज़ाना कर दिया।।
महफ़ूम सिर्रे अक़्बु व मअकुम ने ज़ाहिद।
खुद अपने ही वजूद को जानाना कर दिया।।
जामे जहाँ नुमा है तिरा दिल अब ऐ खलीक़।
खुद से तुझे जो इश्क़ ने बेगाना कर दिया।

(2) ज़ाते हक़ को शाने महबूबी में आना ही पड़ा।
शाने बेरंगी को नैरंगी में लाना ही पड़ा।।
शौक़ अपनी मारफ़त का जाते हक़ को जब हुआ।
शक्ल इन्साँ में मुतलसम हो के आना ही पड़ा।।
रूह को भी यक खलिश जाने में अन्दर जिस्म के।
नूरे अहमद देख कर फिर उसमें जाना ही पड़ा।।
मूतू क़ब्ल अन तमूतू मुस्तफ़ा से जब सुना।
मौत के पहले फ़ना के घाट जाना ही पड़ा।।
जब नफ़ख्तुफ़ीह मिर-रूही पे डाली यक़ नज़र।
जिन्दगी का राज पाकर मुस्कुराना ही पड़ा।।
मैं से तौबा कर चुका था देख उसमें अक्स यार।
बेखतर भट्टी में ज़ाहिद मुझको जाना ही पड़ा।।
हम गुनहगारों की बख्शिश चूँकि थी मद्दे नज़र।
सैयदुश-शुहदा को सर अपना कटाना ही पड़ा।।
मुर्शिदे बर हक़ ने सिर्रे हक़ जो समझाया मुझे।
नग़मए इन्नी अना रग रग से गाना ही पड़ा।।
काबए दिल में हुआ जब ऐ खलीक़ अपना गुज़र।
देखकर खुद अपना जलवा मुसकुराना ही पड़ा।।

(3) खुदा का आईना है देख अपने पीर की सूरत।
मुहम्मद की अली की है यही शब्बीर की सूरत।।
जिसे है याद सूरत वही है हाफ़िजे कुरआँ।
यह है बेशक कलामुल्लाह की तफ़सीर की सूरत।।
न समझो शक्ल तुम इसको यही सिर्रे हक़ायक़ है।
सरापा नूरे मुतलक़ है मगर तस्वीर की सूरत।।
यह कुल यक रंग बेरंगी है कसरत जिसको समझे हो।
यह है यक काग़जे बेरंग पर तहरीर की सूरत।।
जमी जिस शक्ल पर यह शक्ल कुन्दन कर दिया उसको।
यह कहने को है सूरत पर यह है अक्सीर की सूरत।।

150 खुदा उसका मुसख्खर है खुदाई भी है कब्जे में।
अजब है सूरते पीरे मुगाँ तस्खीर की सूरत।।
बड़ा ही नाज़ है मुझको सगे दरगाहे मुर्शिद हूँ।
मेरे हक़ में नहीं इसके सिवा तौक़ीर की सूरत।।

हक़ीक़त की निगाहों से ख़लीक़ अब कोई देखे तो।
रसूल अल्लाह की सूरत है अपने पीर की सूरत।।

(4) मुशरिक को भरा दरया क़तरा नज़र आता है।
मोमिन को हर यक़ क़तरा दरया नज़र आता है।।
आलम का हर यक ज़र्रा शीशा नज़र आता है।
हर शै में मुहम्मद का जलवा नज़र आता है।।
इन्साँ की हक़ीक़त को क़ुरआँ से कोई पूछे।
हर बन्दे के परदे में मौला नज़र आता है।।
जब ग़ैर नहीं मुमकिन फिर एक मुसम्मा है।
अपना ही सरापा खुद परदा नज़र आता है।।
मजनूने मुहब्बत की आँखों से कोई देखे।
कोनैन का हर ज़र्रा लैला नज़र आता है।।
मैख़ाने की चौखट ने आँखों को किया रोशन।
खाके कफ़े पा साक़ी सुरमा नज़र आता है।।
जब चश्मे हक़ीक़त से देखा तो हुआ ज़ाहिर।
खुद आप खलीक अपना शैदा नज़र आता है।।

(5) तमाशगाहे आलम यार की नैरंगे महफ़िल है।
जिसे सब ग़ैर कहते हैं वही जानाँ की मनज़िल है।।
अलमतरा कैफ़ा मद्दज़-ज़िल-से उक्दे खुल गए सारे।
जो मज़्हर है वही मुज़ाहिर जो आकिस है वही ज़िल है।।
हुवल-अव्वल, हुवल-आख़िर, हवज़-ज़ाहिर, हुवल-बातिन।
वही क़तरा वही दरया वही हक़ है जो बातिल है।।
इशारे नहनु अक़रब और मअकुम के समझ ज़ाहिद।
जो ज़ेवर है वही ज़र है जो कूज़ा है वही गिल है।।
तलब को छोड़ कर ग़ाफ़िल समझ तू मद्दआ अपना।
जो कुछ तू ढूंढ़ता है वह तो पहले ही से हासिल है।।
खुदी को जिसने पहचाना खुदा को आप में पाया।
यही है क़ौल मुरसल का यही फ़रमाने मुरसिल है।
मुतलसम नूरे हक़ है ज़ाहिदा इस जिसम खाकी में।
हक़ीक़त में तू नूरी है मगर ज़ाहिर में गिल है।।

151 मुनज़्ज़ह ही मुशम्बह है। मुशब्बह शाने महबूबी।
क़दम कोई कहां रखे जिधर देखो उधर दिल है।।

न फिर दीवाना मजनूं वार बस्ती और ब्याबाँ में।
कि खुद तेरा दिले शैदा तिरी लैला का महमिल है।।
हयाते जाविदाँ पाई मरा जो मौत से पहले।
जो भूला सब सिवा हक़ को वही इन्साने कामिल है।।
जिसे भी क़ल्ब हाथ आया वह मरकज़ बन गया कुल का।
जो कहलाता है अर्श अल्लाह दिले इन्साने कामिल है।।
है ज़ाहिर लाइलाहा से फ़कत अल्लाह ही अल्लाह है।
वही खुद अपना आरिफ़ है वही अपने से ग़ाफिल है।।
पिया है जामे इरफ़ान व मुहब्बत दस्ते मौला से।
खलीक अल्लाह ज़ाहिर है मगर बातिन में बिसमिल है।।

(6) जमाले मुहम्मद पे जिसकी नज़र है।
खुदा जाने किस जा पे उसकी नज़र है।।
सिरजम-मुनीरा वह नूरे तजल्ला।
किसी कन्ज़ मख़्फ़ी का ताबाँ गुहर है।।
रखा हुस्न का नाम अपने मुहम्मद।
वही हुस्न हक़ मज़हरे बहर-व-बर है।।
खुला मन-रआनी से अहमद का रुत्बा।
जुज़े कुल नुमा शाने वाला बशर है।।
हुआ लैसा फ़ी जुब्बती से यह जाहिर।
बशर ही के परदे में रब्बुल बशरह है।।
वही नूरे अज़ली जो गंजे निहाँ था।
अयाँ अब मुतलसम बशकले बशर है।।
जो है मब्दए कुल यासीना ताहा।
हर यक शै में नूर उसका अब जलवागर है।।
जमाले इलाही का है नाम अहमद।
है शम्स उनका अक्स और परतौ क़मर है।।
करे विर्द जो इस्मे आज़म मुहम्मद।
फ़ना हो वह हक़ में यह उसमें असर है।।
नहीं है नहीं सुनता जिस दर पे सायल।
खुदा की कसम वह मुहम्मद का दर है।।
है ओले के हैते में जिस तरह पानी।
मुहम्मद की सूरत में हक़ जलवागर है।।

मुहम्मद सरापा हैं इश्क़े इलाही।
यही इश्क़ परदा यही राहबर है।।
152 मुनज़्ज़ह मुशब्बह, मुशब्बह मुनज़्ज़ह।
नबूवत की मंशा यही यक खबर है।।
करे जिसको फ़ानी वह हो हक़ में बाक़ी।
यह इश्क़े नबी क्या अजूबा शरर है।।
मुहम्मद के रुतबे को क्या कोई जाने।
वह है नूरे मुतलक बज़ाहिर बशर है।।
मेरे दस्त में दस्त महबूबे हक़ है।
मुझे खौफ़ महशर न दोज़ख का डर है।।
तनो जाँ में पेवस्ता महबूबे हक़ हैं।
मुझे अपना धोका उसी ज़ात पर है।।
निगाहों में बस कर ख्यालों में जम कर।
मिटा कर मुझे अब कोई जलवागर है।।
खुदा का मुसम्मा है इन्साने कामिल।
है बातिन में मौला वज़ाहिर बशर है।।
है सिर्रे हयातुन नबी शेख कामिल।
वह फ़ानी है उसमें नबी जलवागर है।।
क़लम लगती आई नबी से वली की।
जो था नख्ले तुख्मी वह क़लमी शजर है।।
जो है शौक़े हक़ हो मुहम्मद में फ़ानी।
कि हक़ के वही ज़ात पेशे नज़र है।।
हुआ जो कोई अपने मुर्शिद में फ़ानी।
नबी उसमें ज़ाहिर खुदा मुस्ततर है।।
हो ज़ाहिद मुबारक तुझे तौफे काबा।
क़दम पर मेरे यार के मेरा सर है।।
दिलो जानो ईमाँ हो सब उसपे कुर्बां।
तसौवुर में मेरे जो आठों पहर है।।
सलात और सलाम ऐसे महबूबे हक़ पर।
यही विर्द अपना तो शामो सहर है।।
खलीक़ अब हुआ जाते मुर्शिद में फ़ानी।
यह क्या था हुआ क्या यह किस को ख़बर हैं।।

(7) यार का मैं ख्याल हूँ हिज्र है नै विसाल है।
ज़ात जो मेरी थी वह है उसको कहाँ ज़वाल है।।
बहरे अमाए ज़ात हूँ, हासिले कायनात हूँ।
वहदहू ला शरीक़ हूँ मेरी कहाँ मिसाल है।।
अर्ज़ हूँ मैं, समा हूँ मैं, मैं ही तो अर्श फ़र्श हूँ।
सब कुछ हूँ और कुछ नहीं मेरा यही कमाल है।।
153 आदम व शीश व हूद व नूह यह सब मेरे शुयून हैं।
पाता हूँ सबको आप में अब तो मेरा यह हाल है।।
आईनए ख्याल हूँ अपनी ही मैं मिसाल हूँ।
ज़ात मुनज़्ज़ह है मेरी ज़ाहिर मेरा जमाल है।।
फ़ानी हुए जो शेख में बाक़ी हुए हैं ज़ात में।
सारे ख्याल गुम हुए बाकी फ़क़त जमाल है।।
मौला हूँ न बन्दा हूँ, काफ़िर हूँ मैं न दीनदार।
अस्मा थे जितने मिट गए क़ील है अब न क़ाल है।।
शौके जहूरे जात में आया तऐयुनात में।
जो कुछ भी है वह खाब है ग़ैर मेरा मुहाल है।।
नुक्ता हूँ बहरे ज़ात का मब्दा हूँ कायेनात का।
मेरा सिवा न था न है जो कुछ भी है ख्याल है।।
धोका था अपने ग़ैर का उलझा था अपने खाब में।
यार ने अब जगा दिया बाक़ी न कुछ मलाल है।।
ऐन को है मेरे खबर मेरे वजूदे जात की।
ग़ैर हो मेरा आश्ना यह तो महज मुहाल है।।
क्यों न मगन खलीक़ हो अपने को पा के आप में।
फ़ानी है सूरतन मगर अस्ल में ला जवाल है।।

(8) ख्याले यार ही अपनी खुदी मालूम होती है।
हक़ीक़त एक है लेकिन दुई मालूम होती है।।
किसी का सब तख़ैयुल है जो कुछ भी है वह फ़ानी है।
सरासर सारी दुनिया खाब है मालूम होती है।।
मुनज़्ज़ह ही मुशब्बह है दुई का सिर्फ़ धोका है।
समझ में तेरी ऐ ज़ाहिद कजी मालूम होती है।।
मुतलसम नूरे हक़ है ज़ाहिदा इस जिस्म ख़ाकी में।
मगर ज़ाहिर में शक्ले माद्दी मालूम होती है।।

है ज़ाहिर लाइलाहा से फ़क़त अल्लाह ही अल्लाह है।
उसी की ज़ात हर शै में छुपी मालूम होती है।।
सिवा हक़ के कहीं मौजूद कोई है अरे तालिब।
तिरे ज़ौके नज़र ही में कमी मालूम होती है।।
जो अपने आपको जाना खुदा को उसने पहचाना।
मेरी हस्ती जो वहमी है नफ़ी मालूम होती है।।
दुई से साथ हक को ढूँढता है अपने से खारिज में।
तेरे इस फ़हम पर ज़ाहिद हँसी मालूम होती है।।
154 इशारे नहनु अक़रब और मअकुम के समझ ज़ाहिद।
तेरी खुद ज़ात ही शिरके खफ़ी मालूम होती है।।
जो हक़ को देखना है अपनी हस्ती का तू मुनकिर हो।
जुदाई का सबब तेरी खुदी मालूम होती है।।
नफ़ख्तु फ़ीह मिर-रूही पे जब मैं ग़ौर करता हूँ।
खुदा को पा के अपने में खुशी मालूम होती है।।
हयाते जाविदाँ पाई मरा जो मौत से पहले।
हक़ीक़त में उसी की जिन्दगी मालूम होती है।।
बनाया यार ने तुझको है अपना आईना तालिब।
उसी का अक्स ही हस्ती तेरी मालूम होती है।।
न फिर दीवाना मजनूँवार बस्ती और ब्याबाँ में।
तेरे दिल में हक़ीक़त की परी मालूम होती है।।
अयाँ है मन-रआनी से रसूले पाक का रुतबा।
खुदा की ज़ात ही शक्ले नबी मालूम होती है।।
हरीमे काबा पर जब डालता हूँ मैं नज़र अपनी।
मदीना की तरफ़ वह भी झुकी मालूम होती है।।
फ़ना फ़िल्लाह की मनज़िल में आकर हज़रते वाइज़।
खुदा की शान शाने मुर्शिदी मालूम होती है।।
जो पहुँचा काबए दिल में तो उक़्दा यह खुला मुझ पर।
खुदा की ज़ात ही अपनी खुदी मालूम होती है।।
खलीक़े खस्ता फ़ानी हो के बाक़ी हो गया हक़ में।
शगुफ़्ता दिल की अब उसकी कली मालूम होती है।।

❖ ❖ ❖

अध्याय-13

सावनिह हयात हज़रत मौलाना सूफ़ी शाहमुहम्मद इफतिख़ारुल हक़

क़ादिरी, चिश्ती, सुहरवर्दी, नक़्श बन्दी, रहमानी, मुजीबी क़द्स-अल्लाह सिररहू।

पीरो मुर्शिद हज़रत सूफी शाह मुहम्मद खलीक़ उल्लाह क़ादिरी रहमत-अल्लाह-अलैह

हज़रत का मुक़ाम पैदाइश रोहतक (पंजाब) देहली से मुताल्लिक़ है। अवायल (अव्वल) उमरी ही में आपने इल्म ज़ाहिर के हासिल करने के लिये वतन छोड़कर उत्तर प्रदेश में तश्रीफ़ लाये। आपके वालिदे माजिद (इज़्ज़त वाले) का नाम हजरत मौलाना मुहम्मद अन्सारुल हक़ था। और आपके बड़े भाई हज़रत मौलाना असरारुल हक़ साहब वाइजे खुश ब्यान तूतिए हिन्द के नाम (लक़ब) से मशहूर थे। आपने इल्म ज़ाहिरी हासिल करने में सूफ़ी मुहम्मद इनायत उल्लाह खाँ क़ादिरी, नक़्श बन्दी, मुजद्ददी रामपूरी शागिर्द व गद्दी नशीन सूफी मुहम्मद इर्शाद हुसैन रामपूरी,व सूफी मुहम्मद अब्दुल क़ादिर साहब उसमानी क़ादिरी बदायूनी व सूफी मुहम्मद अब्दुल मुकतदिर साहब उस्मानी क़ादिरी बंदायूनी व सूफी मोहम्मद सिराजुल हक़ साहब उसामानी क़ादिरी बदायूनी अल्लाह इन सभी पर अपना रहम फ़रमाए की सुहबतों से शागिर्दी की बरकात व फ़ुयूज़ात हासिल करके अपने मकसद व इरादे में कामयाब हुए। और उलूम बातिनी (मारफ़त) और फ़ुयूज़ रूहानी अपने पहले शेख (पीर) अम्मे मुकर्रम (बुज़ुर्ग चचा) सूफी मुहम्मद नोमानुल हक़ वद्दीन साहब क़ादिरी व चिश्ती
156 लखीमपूरी, व दूसरे पीर हज़रत शाह मुराद उल्लाह साहब सफ़वी खलीफ़ा हज़रत खादिम सफी चिश्ती क़ादिरी साकिन क़स्बा मुहम्मदी ज़िला खीरी, व हज़रत मुहम्मद अलीशाह टोंकी, खलीफ़ा हजरत शाह न्याज़ अहमद बरैलवी क़ादिरी चिश्ती अल्लाह उन सभी पर अपना रहम फ़रमाये की सुहबतों में रहकर हासिल फ़रमाया। उसके बाद तीसरे पीर सूफ़ी मुहम्मद तालिब हुसैन साहब क़ादिरी, चिश्ती, मुजद्ददी फ़र्रुखाबादी रहमतउल्लाह अलैह के साथ कुछ मुद्दत तक सुहबत में रह कर इल्म बातिनी व रुश्दी

(हिदायत का रास्ता) से मालामाल हुए।

आपका शुमार बड़े आलिम, माहिर हकीम और खुश गुलू (आवाज़) वाइज़ों में था। चेहरा मुबारक इनतिहाई नूरानी था। हर वक़्त इसतिग़राक़ी कैफ़ियत (डूब जाना) छाई रहती थी। बेहद खलीक़ और मुनकसिरुल मिज़ाज बुजुर्ग थे। रईसों से हमेशा दूर रहते और गरीबों से बहुत ज्यादा नज़दीक रहते थे। पीरज़ादों और सैयदों की अपने दिल में बेइनतिहा अज़मत रखते थे और उनका बेहद अदब फ़रमाते। एक दफ़ा आप कलकत्ता में एक रिक्शा पर बैठ कर कहीं जा रहे थे। इत्तिफ़ाकिया आपने उस रिक्शा वाले से पूछा कि तुम कौन हो? उसने कहा में सैयदज़ादा हूँ मेरे दादा यमन से हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए थे, यह सुनते ही आप रिक्शा से उतर पड़े उनके क़दमों को चूमा और खुद उनको रिक्शा पर बिठाकर दूर तक ले गये, जब आप थक गए तो उनका हाथ और पैर चूमे और पाँच रूपए नज़राना के तौर पर पेश करके रुख्सत फ़रमाया। और रोकर फ़रमाया कि मेरी खता माफ़ कर दो। निहायत शर्म की बात है कि एक सैयदज़ादा रिक्शा चलाए और गुलामज़ादा उस पर बैठे।

आपकी महफ़िल में जब कोई सैयद या परीज़ादा तशरीफ़ लाता तो आप फ़ौरन अपनी जगह छोड़ कर उसको अपनी जगह पर बिठाते और कौव्वालों को उन्हीं के हाथों से नज़रें दिलवाते। अगर कोई शख्स रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम या औलियाएकराम की शान में अदना गुस्ताखी करता तो आप बेताब हो जाते और उसके रोकने में सख्ती से पेश आते और उसे बा अदब बनाने की कोशिश फ़रमाते।

एक मर्तबा आप अपने पीरो मुर्शिद हज़रत सूफ़ी मुहम्मद तालिब हुसैन के पास तशरीफ़ ले गए। जब आपके मकान के क़रीब पहुँचे तो उस गली में एक कुत्ता नज़र आया आपने उसे यह कहकर प्यार किया कि यह मेरे महबूब की गली का कुत्ता है इसीलिये मुझे यह भी महबूब है। इन चन्द वाक़्यात से आपका सैयदज़ादों, पीरज़ादों और अपने पीरे तरीक़त से बेपनाह मुहब्बत और अक़ीदत का पता चलता है।

हिकमत और तबलीग़ ज़ाहिरी व बातिनी के सिलसिले से आपने आगरा, इलाहाबाद, लखीमपुर, अलीगढ़, लखनऊ, कलकत्ता वग़ैरह का सफ़र फ़रमाया और कुछ मुद्दत तक क़याम भी फ़रमाया।

जब आपकी उमर शरीफ़ तिरसठ (63) साल की हुई तो आप पर फ़ालिज का हमला हुआ और कलकत्ता में सात (7) साल क़याम फ़रमाने के बाद सन् 1947 ई0 में 7, जमादी-ऊला सुबह सादिक़ (तड़के) के वक़्त विसाल फ़रमाया।

اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ

अर्थ- (हम अल्लाह के माल हैं और हमको उसी की तरफ़ फिरना) आपका मज़ार पाक 57, साउथ तपस्सया रोड शहर कलकत्ता में है। और लोग आपके मज़ार पाक से बरकतें हासिल करते हैं। आपके सिलसिलए तरीक़त में हिन्दुस्तान के अलग-अलग हिस्सों के लाखों इन्सान दाखिल हुए, और उनमें से बहुतों को आपसे खिलाफ़त भी
158 हासिल हुई। उन खुलफ़ा और मुरीदीन में से कुछ अब तक जिन्दा हैं।

आपने कुछ किताबें भी लिखी, उनमें रुश्द रशीद हक़ीक़ी, हामिजुल असनान या मितरक़तुत-तौहीद और जवाज़े ताज़िया खास हैं उसके अलावा एक दीवान भी है (आपके कलाम यानी शायरी का मज्मूआ)

हज़रत के बड़े साहबज़ादे औरे खलीफ़ा मौलाना नूरुल हक़ जो उर्स कमेटी के नाज़िम (इनतिज़ाम करने वाले) थे कई साल पहले कलकत्ता में विसाल फ़रमा गये और आपकी पाइंती में आराम फ़रमा हैं। मौलाना महमूदल हक़ साहब आपके दूसरे साहबज़ादे और खलीफ़ा अपने बाल बच्चों के साथ कराची पाकिस्तान में मुकीम हैं।

हज़रत मौलाना की एक साहबज़ादी जो आपके खलीफ़ा मुहम्मद ज़की साहब जो चन्द साल पहले कलकत्ता में विसाल फरमा गये, की खुशदामन (सास) थी विसाल फ़रमा चुकी है। आपकी दो साहबजादियाँ कराची में हैं। हज़रत के तीसरे साहबज़ादे मुहम्मद ऐनुल हक़ साहब का विसाल हज़रत की मौजूदगी के ज़माना में इलाहाबाद में हो गया था।

आपका उर्स मुबारक तपस्सया रोड कलकत्ता में 6, 7, 8 तारीख जमादियुल अव्वल के महीने में बड़ी धूमधाम से होता है। इन तारीखों में उलमा की तक़रीरें, गागर, चादर, गुस्ल मज़ार शरीफ़ की रस्में अदा की जाती हैं और महफ़िलें समा (क़ौव्वाली) में मुक़ामी व ग़ैर मुकामी कौव्वाल शरीक होते हैं और आम लंगर होता है।

159 उर्स के तमाम मरासिम आपके मुरीदीन, मुतवस्सिलान और मोतक़िदीन के तआवुन से होते हैं आपके दामाद और खलीफ़ा अब्दुल हफ़ीज साहब जिनका विसाल हो चुका है के दामाद मौलाना मुहम्मद जक़ी साहब के सैकड़ों मुरीदीन कलकत्ता और उसके बाहर मौजूद हैं और उनका मज़ार भी हजरत की खानक़ाह में है।

हज़रत मौलाना (उनके भेदों को अल्लाह माफ़ फ़रमाये) आरिफ़ बिल्लाह साहबे करामत बुजुर्ग थे, आपकी बहुत सी करामतें मशहूर हैं। जिनमें चन्द करामातें लिखी जा रही हैं।

(1) आपके मुरीद मुहम्मद हुसैन ने सुबह (फ़जर) की नमाज़ के बाद आपसे सवाल किया कि कयामत में हिसाब व किताब के बाद लोग जन्नत व दोज़ख में जायेंगे, लेकिन रसूल अल्लाह ने उसके पहले मेराज में लोगों को जन्नत व दोज़ख में

देख लिया। आपने उन मुरीद से आँख बन्द करने को कहा। आँख बन्द करते ही उन्हें नींद सी मालूम हुई और उसी हालत में देखा कि दिल डूबने के क़रीब है और आधा घंटा तक गरज और चमक के साथ जोरदार बारिश हो रही है। हजरत ने यह दिखाने के बाद उनसे आँख खोलने को कहा। चुनाँचे उसी रोज दिन डूबने के करीब वैसी ही बारिश हुई जैसा कि उन्होंने आँख बन्द करके देखा था। आपने पूछा क्यों तुम्हारा जवाब मिल गया। मुहम्मद हुसैन ने कदम चूम कर कहा, "या हजरत अब कोई शक नहीं रहा।" मुहम्मद हुसैन साहब इन्तिकाल कर चुके हैं।

160 (2) बाबूराम सिरी नगर खीरी का रहने वाला आपका अक़ीदतमन्द था। उस पर एक मुक़दमा आराज़ी की बेदखली का चल रहा था और सिर्फ उसके पास यही एक जरिया रोजी कमाने का था। उसे मालूम हुआ कि वह मुकदमा हार जायेगा। फ़ैसला की तारीख पर वह आपकी तरफ मुतवज्जुह हुआ और कहा कि सरकार आप तो कलकत्ता में हैं मगर मेरी मदद कीजिये। बाबू राम सीतापुर जाने के लिये स्टेशन पर पहुँचा तो क्या देखता है कि हज़रत लखनऊ वाली गाड़ी से उतरे और फ़रमाया कि तू इतना परेशान क्यों है तेरी ही डिग्री होगी। चुनाँचे सीतापुर की अदालत से उसकी डिग्री हो गई और वह मिठाई और फूल लेकर हज़रत जहाँ क्याम फ़रमते थे पहुँचा तो उसके हैरत की कोई इनतिहा न थी कि आप कलकत्ता ही में हैं। यह आपकी तजद्दुद मिसाली और रूहानी ताक़त का मुज़ाहिरा था।

(3) एक दफ़ा हज़रत मौलाना सूफी शाह मुहम्मद खलीक उल्लाह क़ादिरी चिश्ती (हजरत के महबूब खलीफा और सज्जादा नशीन) जो विसाल फ़रमा चुके हैं (मजार मुबारक मौजा हलदी कलाँ तहसील करछना इलाहाबाद में है) के दौलत कदा पर रौनक़ अफ़रोज़ थे और मीलाद शरीफ़ की महफ़िल की तैयारी हो चुकी थी, आपने फ़रमाया कि आज मैं ब्यान न करूँगा बल्कि खलीक उल्लाह से कहो कि वह ब्यान करें। इससे पहले आपने कभी तक़रीर न की थी हिम्मत नहीं पड़ती थी कि क्या बोलें। हज़रत मौलाना ने अन्दर से आवाज़ दी कि खूब धड़ल्ले से बयान करो। पस आपका यह फ़रमाना था कि ज़बान खुल गई और निहायत जोरदार बयान हुआ कि
161 ज़बान रूकती ही न थी उसके बाद से तो हजारों बयानात हुए और होते रहे लेकिन जबान नहीं रूकी यह हज़रत मौलाना की रूहानी क़ूवत थी।

(4) एक मर्तबा हज़रत के मुरीद खास छोटे खाँ कलकत्ता के एक मकान की चौथी मंजिल के बारजा पर काम कर रहे थे। यकायक उस पर से नीचे आ गिरे लोगों ने समझा कि यक़ीनन मर गए ज़िन्दा नहीं बच सकते मगर वह फ़ौरन उठ कर बैठ गए। जरा सा खरोंच भी न आई। लोगों ने ज़िन्दा बच जाने का सबब पूछा तो बताया

कि जैसे ही बारजा से मेरा हाथ छूटा मैंने अपने को पीर मौलाना की तरफ रुजू किया और आपने मुझे अपनी गोद में लेकर नीचे बिठा दिया। छोटे खाँ का शुमार आपके बहुत ही मुखलिस मुरीदों और खुलफा में है।

(5) मीलाद शरीफ़ की अकसर महफ़िलों में आप इस्लाम हक़्क़ानियत (सदाक़त, सच्चाई) बयान फ़रमाया करते कि जो (लाइलाहा इल्लल्लाह) का दिल इक़रार कर लेता है उसको आग कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकती और अपना हाथ इसके सुबूत में देर तक जलती हुई मोमबत्तियों या शमा की लौ पर रखे रहते थे और आग कोई नुक़सान न पहुँचाती थी। इलाहाबाद और दूसरे मुकामात के बहुत से लोग आपकी इस करामत के चश्मदीद गवाह हैं और उसकी तस्दीक़ कर सकते हैं।

❖ ❖ ❖

अध्याय-14

ग़ज़लयात

हज़रत मौलाना सूफी शाह मुहम्मद इफ़्तिखारुल हक़ (बिसमिल) क़ादिरी, चिश्ती, मुजीबी, कद्स अल्लाह सिर्रहू।

(1) क़लम कह कर के बिस्मिल्लाह हो वस्साफ़ बेहद का।
मवहहिद हो के हामिद हो तू महमूद और अहमद का।।
शबे ज़ाते बहत सुबहे इरादह हो गई जिस दम।
सिफ़ाते हश्त हो के जगमगाया नूरे बहद का।।
हुई फिर सुबहे सानी या कहो तुम नूर का तड़का।
यह था नूरे अहद इल्लाक़ है उस पर मुहम्मद का।।
यही फिर नूर इतना बढ़ गया कि शम्श हो चमका।
तो बेहद में पता लगने लगा इस तौर से हद का।।
तो उस खुर्शीद पे लाहूत और उसकी शुआओं पे।
हुआ जब्रूत का इत्लाक़ है और रूहे अम्जद का।।
शुआओं से जो निकली धूप वह आलम मिसाली है।
मुक़ाबिल नूरो जुलमत हो गये नक़्शा खिंचा कद का।।
हुआ कन्ज़े खफ़ा ज़ाहिर उसे नासूत कहते हैं।
सबक़ पहला है यह ज़ाहिद सिर्रे पिन्हाँ की अबजद का।।
है इक़रारे खुदी कुफ्र और इन्कारे खुदी ईमाँ।
फ़ना हो के बक़ाई क़ौल है मंसूर व सरमद का।।
क़लम को रोक ले मत खोल असरारे खफ़ी बिसमिल।
अगर तू बह्र है क़ादिर है अपने जज़्र कामद का।।

(2) खुदी खोई हुई पाया अहा-हा-हा, अहा-हा-हा।
मेरी हस्ती वजूद उसका अहा-हा-हा, अहा-हा-हा।
मुझे पीरे मुगाँ ने अपने सागर की जो तलछट दी।
नशा चढ़ आया वहदत का अहा-हा-हा, अहा-हा-हा।।
मैं पहले परदा था उसका, रहा मुझमें वह मुद्दत गुम
उठा परदा तो मैं गुम था अहा-हा-हा, अहा-हा-हा।।

163 है मेरी जान फ़र्ते बेखुदी से महवे बेरंगी।
दुई बाक़ी नहीं असला अहा-हा-हा, अहा-हा-हा।।
वही अव्वल वही आखिर वही जाहिर वही बातिन।
हर यक जा है वही जलवा अहा-हा-हा, अहा-हा-हा।।
कहीं आशिक़ वह अपना है कहीं माशूक है अपना।
अजब अन्दाज है उसका अहा-हा-हा, अहा-हा-हा।।
वही अपने से जाहिल है वही अपने से गाफ़िल है।
वही आरिफ़ है खुद अपना अहा-हा-हा, अहा-हा-हा।।
वही मुरसिल वही मुरसल वही अख्बार और कुरआँ।
वही बन्दा वही मौला अहा-हा-हा, अहा-हा-हा।।
वही दोज़ख वही जन्नत वही अर्श और वही कुरसी।
वही दिल और वही काबा अहा-हा-हा, अहा-हा-हा।।
हरम वह शेख वह बुतखाना वह बरहमन वह।
वही पाट और वही पूजा अहा-हा-हा, अहा-हा-हा।।
वही बिसमिल वही तालिब वही शाकिर वही रहमाँ।
वही मतलूब है अपना अहा-हा-हा, अहा-हा-हा।।

(3) आईना देखा नहीं सूरत का पुतला हो गया।
शक्ल देखी ही नहीं शीशे में अल्लाह हो गया।।
आईना में आईना बर शक्ले लैला हो गया।
अक्स क्या देखा कि मजनूं और दिवाना हो गया।।
खुद वह अपने हुस्न का महवे नज़ारा हो गया।
लैला व मजनूं के छुप जाने का होला हो गया।।
फ़स्ल क्या और वस्ल क्या सब है बदौलत इश्क़ के।
इश्क़ आया क़ैस को मजनूं से लैला हो गया।।
सिर्र व क़ल्ब व रूह व अख़्फा व खफ़ी कुछ भी नहीं।
या लतीफ़ु इस्म जिसका है लतीफ़ा हो गया।।
सिद्क़ से ला कह के बिसमिल हो गया कब का फ़ना।
यह खुदा जाने कि वह क्या चीज़ था क्या हो गया।।

(4) चश्म इफ़्रां से अगर अपने तईं देख लिया।
बखुदा अपना खुदा तुमने यहीं देख लिया।।
अफ़ला तुबसिरून कुरआन में नहीं है नातिक़।
देखने वालो भला तुमने नहीं देख लिया।।

164 न वह तंज़ीह में महदूद व तश्बीह में है क़ैद।
जिसने पहचान लिया उसने यहीं देख लिया।।

सब मिलल कहते हैं उसको कि वह हरज़ाई है।
कौन किस जा है फिर जिसने नहीं देख लिया।।
वहदहू मुँह से कहे दिल में दुई को रखे।
तेरी तौहीद को शैताने लईं देख लिया।।
आँख है किस लिये क्यों मज़हरे हक़ इन्साँ है।
आपको देख लिया उसके तईं देख लिया।।
मासिवा छोड़ के बिसमिल हुआ है ऐने मुजीब।
कल वहाँ देखेगा और आज यहीं देख लिया।।

(5) अयाँ है वह निहाँ होकर निहाँ है वह अयाँ होकर।
अयाँ हैं जिस्मों जाँ होकर निहाँ हैं जानेजाँ होकर ।।
चमन में गुल की सूरत और गुल में रंग व बू है वह।
दिले बुलबुल में रहते हैं वह फ़रयादो फुगाँ होकर ।।
मेरे होते हुए क्यों आयेंगे भूले नहीं हैं वह।
मज़ा देता मेरा ग़म उन्हें आराम जाँ होकर ।।
अगर है जुस्तजू उनकी जरा अपने को खो बैठो।
रहो, पीरे मुगाँ के दर पे संगे आस्ताँ होकर ।।
वह काबा में तो बातिन और मैखाना में ज़ाहिर है।
पिलाया करते हैं रिन्दों को मैं पीरे मुगाँ होकर।
न मुकरो "लाइलाहा कह के बिसमिल आप ही तो हो।
भला किस तरह से मानूं नहीं हो जाने जाँ होकर।।

(6) ऐ मज़हरे हक़ दर हक़्क़े यहीं सुलतानुल हिन्द गरीब नवाज।
दे ऐने मुईन हक़्क़े दीं सुलतानुल हिन्द ग़रीब नवाज।।
मुझ 'ला' में आप ही 'इल्ला' है जुज़ं इज़्ज़ के पास मेरे क्या है।
दो मुझको अमल बा इल्मो यकीं सुलतानुल हिन्द ग़रीब नवाज़।।
मैं हैरत में मुस्तग़र्क़ हूँ बुरहानी दलील हो तुम ख़ाजा।
ऐ ग़ौस व ग़्यास व मुग़ीस व मुईन सुलतानुल हिन्द ग़रीब नवाज़।
दुर दुर के क़ाबिल मैं बेशक हूँ बहका भी बहुत हूँ ऐ ख़ाजा।
अब मुझ से न रहिये चीं ब जबीं सुलतानुल हिन्द ग़रीब नवाज़।।
क्यों मुझ से खफ़ा हो बन्दा हूँ दो भीक अज़ीज़ व हकीम हो तुम।
बा लुत्फ़ो करम बिठला दो कहीं सुलतानुल हिन्द ग़रीब नवाज़।।
है फ़िक्र हिसाबे हक़ हजरत जो आपकी मर्जी मेरे खुशी।
बेफ्रिक करो बा हक़ को यकीं सुलतानुल हिन्द ग़रीब नवाज़।।

165 मरदूद न मक़बूल होकर "अम्मस्साइला फ़लातन्हर"।
फ़रमान है तेरा दर शररुमुबीं सुलतानुल हिन्द ग़रीब नवाज़।।

है तू ही रहीम तू ही रहमत "लातक़नतू" है फ़रमान तेरा।
जब ग़ैर नहीं तो नहीं भी नहीं सुलतानुल हिन्द गरीब नवाज।।
अब या जब जो सरज़द हुआ हसनैन व मुहम्मद का सदक़ा।
हो जाये माफ़ कहो आमीन सुलतानुल हिन्द ग़रीब नवाज़।।
हो बलाए नअम में सबरो रज़ा नअमाए बला में शुकरो अता।
हो बलाओ क़ना के हाल करो सुलतानुल हिन्द ग़रीब नवाज़।।
हो जाये इज़ाज़त ऐ आक़ा बिसमिल को कहीं पर रहने की।
हाले ज़ारम लिल्लाह मुईन सुलतानुल हिन्द ग़रीब नवाज़।।

(7) हो गया हूँ जब से महवे लक़ाए ग़ौस पाक।
दोनों आलम में नहीं पाता सिवाये ग़ौस पाक।।
किस ज़बाँ से हो सके बेशक सिवाये ग़ौस पाक।
जब कि है वस्साफ़ खुद तेरा खुदाये ग़ौस पाक।।
कंज़ हक़ से बिलयकीं ज़र्रा भी हिल सकता नहीं।
तालिबे हक़ को न हो जब तक रज़ाए ग़ौस पाक।।
क़तरे से चश्मा हुआ चश्मे से दरया हो गया।
हो गई जिस पर ज़रा सी भी अताए ग़ौस पाक।।
पड़ गई कश्ती भंवर में बिस्मिले ना चीज़ की।
तुम सिवा अब पार कौन उसको लगाये ग़ौस पाक।।

(8) मरीजे ला दवायम खुश नसीबम।
हबीब अल्लाह रादारम तबीबम।।
नज़र दारम बसूए रहमते तो।
क़याम्म दिह कि मन ख़ाना ख़राबम।।
न सबरो शुक्र दारम ने क़नाअत।
न इश्क़ो मारफ़त बस हाले ज़ारम।।
सवालम रा न रद कुम या हबीबी।
कि आमुरज़हा दारी बिदानम।।
बजुज़ इज़्ज़ो गुनह मिज़्दम चेह दारम।
कि मनऐ जाने जाँ बर तु निसारम।।
ज़ेहस्तीहा कुनम चेह बर तु ईसार।
तुई जिस्मों तुई जानो शबीहम।।

166 न मन बातिन न मन ज़ाहिर तुई तू।
तआल्लल्लाह ज़हे शाने क़रीबम।।
बसा इल्मो अदब दारम चेह गोयम।
मुहम्मद इस्में तो कष्फ़े यक़ीनम।।

बर ज़मीने शोर सुंबुल बर न्यारद।
खमुश बिसमिल चुनीनस्तो चुनीनम।।

(9) किस को तो बन्दा और मैं किस को खुदा कहूँ।
जब दो नहीं बताए कौन किसको क्या कहूँ।।
काफ़िर को बुरा कहूँ मोमिन को क्या कहूँ।
अच्छा ही मैं कहूँ न किसी को बुरा कहूँ।।
हू हू जपूं न और कहूँ मैं अना अना।
गर मैं गुज़र गया हूँ खुदी से तो मैं कया कहूँ।।
जो मुझसे कह रहा है वही कह रहा हूँ मैं।
न मैं छुपाऊँ उसको न पूरा पता कहूँ।।
कीड़ा जो गू का है उसे कब भाये बूए गुल।
ज़ाहिद पे हक़ की मार है बस और क्या कहूँ।।
माबूद तो खुदा को कहे और हूर पर मरे।
ज़ाहिद को मुश्तही न कहूँ और क्या कहूँ।।
बिसमिल है या खुदा है ग़रज़ दो में एक है।
जेवर को ज़र नहीं कहूँ तो और क्या कहूँ।।

(10) लारैब मैं बज़ाहिर इन्साँ बना हुआ हूँ।
पर खूब जानता हूँ कि कौन हूँ और क्या हूँ।।
देखो तो मेरी हिरफ़त खुद मुझ को भी है हैरत।
हर शै का ऐन हो कर हर चीज़ से जुदा हूँ।।
हुस्ने अज़ल को अपने आईना वारपा के।
अपना पता मिला है कि मैं खला मला हूँ।।
चेहरों में गुलरुखें के जलवागरी है मेरी।
फ़रहादो क़ैस हूँ खुद, खुद खुद पे मुबतिला हूँ।।
रिन्दी व मैं परस्ती अपनी इबादतें हैं।
इमानो जुहदो तक़वा से दूर भागता हूँ।।
सज्दे से मैं सनम के आशिक़ को कैसे रोकूँ।
"फ़ख्रुज अलैका लानत" शैताँ से कह चुका हूँ।।
जब हो गया मुसल्लम कब ग़ैरे हक़ है मुमकिन।
167 बिसमिल नहीं है बिसमिल मैं खूब जानता हूँ।।

(11) खुदी अपनी खोई हुई पा गया मैं।
ग़लत है खुदा पा गया खो गया मैं।।
हुआ जब मुझे शौक़े इरफ़ान पैदा।
तो अपनी खुदी से जुदा हो गया मैं।।

हुई ग़ैर से मारफ़त मुझको हासिल।
न बन्दा न अल्लाह था, हाँ सिर्फ़ था मैं।।
हुआ अपने इरफ़ान का तकमिला जब।
तो जैसा था वैसा ही फिर हो गया मैं।।
खुदाई भुलाई तो सूरत को पाया।
जो सूरत भुलाई खुदा हो गया मैं।।
जो भूला मैं तंज़ीही तश्बीह दोनों।
तो बन्दा रहा और न अल्लाह रहा मैं।।
ग़रज़ थी न मतलब न कुछ मद्दुआ था।
मुहब्ब्त में सर ता बपा हो गया मैं।।
हदूसो क़िदम हैं शुयूनात अपने।
बक़ा से ब मक़्सद फ़ना हो गया मैं।।
मिटाये नहीं इश्क़ मिटता है बिसमिल।
बदौलत इसी के बुरा हो गया मैं।।

(12) कहें सब ग़ैर हक़ जिसको हम उसे अल्लाह कहते हैं।
समझ का फेर है अल्लाह को ग़ैर अल्लाह कहते हैं।।
हक़ीक़त में कहाँ है फ़र्क़ क़तरा और दरया में।
हक़ीक़त के मुख़ालिफ़ को अदूवल्लाह कहते हैं।।
ज़माले हक़ तो ज़ाहिर और हक़ पिन्हाँ नहीं समझे।
है ऐनुल्लाह वह जिसका जमालुल्लाह कहते हैं।।
वलायत कहते हैं कुफ्रे हक़ीक़ी को ज़रा समझो।
मिटी जिसकी दुई उसको फ़ना फ़िल्लाह कहते हैं।।
जो अपने आपको हक़कुल यक़ीं में खुब पहचाना।
उसी को वासिले हक़ और बक़ा बिल्लाह कहते हैं।।
वही है दुश्मने दीं जो आपको जो ग़ैर हक़ समझे।
क़सम है अपनी हस्ती की तुम्हें अल्लाह कहते हैं।।
बहुत ढूँढा दो आलम में न पाया ग़ैर हक़ हमने।
मगर कहने को हम भी ग़ैर हक़ वल्लाह कहते हैं।।
अगर तालिब खुदा का है तो बिसमिल से लगा ले दिल।
यही वह राह है जिसको सिरातुल्लाह कहते हैं।।

168 (13) बहरे इर्फ़ान वह अन्जान बने बैठे हैं।
वही जीशान हैं हर शान बने बैठे हैं।।
बाग़ फ़िरदौस वही बाग़ के मालिक भी वही।
वही हूर और वही ग़िलमान बने बैठे हैं।।
फ़र्श आलम भी वही सहने गुलिस्ताँ भी वही।
वही सुँबुल वही रेहान बने बैठे हैं।।

इश्क़ अपने से है वही आशिक़ व माशूक़ नुमा।
अक़्लकुल हो के वह हैरान बने बैठे हैं।।
आईना देख के कसरत का गुमाँ उनको हुआ।
वर्ना आयान हैं इमकान बने बैठे हैं।।
बात क्या लुत्फ़ की है "लैसा कामिसलिहि शैउन"।
कान तश्बीह में सुबहान बने बैठे हैं।।
क़ल्ब हो जिसके लिये भेद वही समझेगा।
जानने वाले हैं अनजान बने बैठे हैं।।
वही हाहूत हैं लाहूत हैं जबरूत वही।
वही हर जिस्म में हर जान बने बैठे हैं।।
वही बरज़ख़ वही नासूत ग़रज़ हर हर शै।
शक्ल बिसमिल में वह इन्सान बने बैठे हैं।।

(14) फ़क़त इक याद हूँ करना इबादत इसको कहते हैं।
ख़ुदी अपनी फ़ना करना रियाज़त इसको कहते हैं।।
समझना ग़ैर हक़ मौजूद है यह शिर्क जाती है।
फ़कत तस्दीक हक़ करना हिदायत इसको कहते हैं।।
उसे मारूफ़ कर इबरत से फिर उसमें गुमे रहना।
खबर से बेखबर होना वलायत इसको कहते हैं।।
खला में जो भला देखे भला में फिर खला देखे।
फ़क़ीरे बा सफ़ा अहले वलायत इसको कहते हैं।।
इरादे इल्मो क़ुदरत से खुदी पे हुक्म खुद कर के।
ज़ेलाहद हद में आ जाना करामत इसको कहते हैं।।
मुक़ामे इस्म में हो के मुसम्मा तक पहुँचना और।
मुअत्तल आपको करना खिलाफ़त इसको कहते हैं।।
जो थीं कहने की बातें कह चुके तालिब मियाँ बिसमिल।
अमल कर बैठना उस पे सआदत इसको कहते हैं।।

169 (15) इदराके खुदी जब न रहे बाद को क्या हो।
बेरंगियों बे सूरती हो नामे खुदा हो।।
ये वस्ल की मंज़िल है मगर सैर न होना।
आरिफ़ ज़रा हुश्यात मुहब्बत न फ़ना हो।।
बेरंगी के मैदान में टहरना नहीं अच्छा।
इस ज़ौक़ से ऐ आरिफ़े कज फ़हम ज़ुदा हो।।
जब बुलबुले लाहूत रिसाई हो यहाँ तक।
तश्बीह बना शाहिदे तंज़ीह खड़ा हो।।
इस सिर में अलिफ़ चाहिये हो शाहिदो आशिक़।
जो हो हर्फ़ मीम वह मशहूद बना हो।।

तक़्सीम दो क़ौसैन में हो दायरा हू का।
महबूब हो खुद खुद को खुद ही ताक रहा हो।।
बिसमिल की तरह दिल तेरा इस सीने के अन्दर।
बेचैन हो बेताब हो और लोट रहा हो।।

(16) बेखुदी में जिसे मज़ा आया।
सिबग़तुल्लाह उस पे रंग आया।।
मेरी आँखों ने तुझको पीरे मुग़ा।
किस तरह से बताऊँ क्या पाया।।
जिसको दैरो हरम में ढूँढता था।
फैज़े मुर्शिद से अपने घर पाया।।
नाम तालिब था और था मतलूब।
वाह क्या खूब धोका दिलवाया।।
यार हरजाई है वह ऐ ज़ाहिद।
पर अब तक कहीं पता न पाया।।
वाह बद नियती तेरी ज़ाहिद।
दिल भी आया तो हूर पर आया।।
फ़ैज़े मुर्शिद से अब तो ऐ बिसमिल।
मद्दआ दिल का सारा बर आया।।

(17) कोई पूछे तो तुमने क्या देखा।
उसे शक्ले इन्सान में खुदा देखा।।
न उसे अपने से जुदा देखा।
और न उसको कभी मिला देखा।।
170 हमने अपने में जब ज़रा देखा।
क्या बताएँ किसी को क्या देखा।।
दूसरा कौन है किसे ढूँढें।
आप अपने को जा बजा देखा।।
कभी वह हममें हम कभी उसमें।
कभी दोनों को लापता देखा।।
बिलयक़ीं देख ले वह बिसमिल को।
न हो जिसने कभी खुदा देखा।।

(18) अगर दावए मुहब्बत है बेताब रहा करना।
महरूमिये क़िस्मत का हरगिज़ न गिला करना।।
वाइज़ का कभी सालिक हरगिज़ न कहा करना।
बुत सामने रख करके तू यादे खुदा करना।।
हर दम ग़मे जानाँ से बेताब रहा करना।
शमए रुखे जानाँ में हर वक़्त जला करना।।

जिस तरह से मुमकिन हो अपने को फ़ना करना।
बे खौफ़ो खतर फिर तू दावाये अना करना।।
संगे दरे साक़ी पे सर अपना घिसा करना।
मैख़ारों की तलछट ही मिल जाये पिया करना।।
मख्मूर मए वहदत हर वक़्त रहा करना।
शुकरे करमे साक़ी हर वक़्त अदा करना।।
बिसमिल अदबे साक़ी हर वक़्त किया करना।
इक गाम शरीअत से आगे न बढ़ा करना।।

(19) दिल है बैतुल्लाह ज़ाहिद और क़िबला सूए दोस्त।
मेरा कुरआँ उसका चेहरा मेरी जन्नत कूए दोस्त।।
ज़िन्दगी के लुत्फ़ से बढ़ कर उठाता है मज़ा।
क़ब्ल मुर्दन हो गया हूँ मैं ग़ुबारे कूए दोस्त।।
दिल में छुप के बैठे हैं और कहते हैं ढूँढो मुझे।
सारे आलम से निराली पाई मैंने खूए दोस्त।।
जाहिदा काबा न था बेहोश होकर क्यों गिरा।
तूर में मूसा ने क्यों देखा जमाले रूए दोस्त।।
धूम मक़्तल में मची है क्या शहादत होयेगी।
याद आई क्या किसी को पुरख़मे अबरूए दोस्त।।
चख ले ज़ाहिद ज़रा सी मैं वह पीता हूँ शराब।
जिसमें है आमेख्ता बूए लुआब रूए दोस्त।।
171 वह नज़र पैदा करो बिसमिल कि जिससे साफ़ साफ़।
ज़र्रे ज़र्रे में नज़र आये जमाले रूए दोस्त।।

(20) तू ऐन मेरा मैं,ऐन तेरा तू और नहीं मैं और नहीं।
न तू ग़ैर मेरा न मैं ग़ैर तेरा तू और नहीं मैं और नहीं।।
जिस तरह से जेवर में जर है अल्लाह यूँ ही है इन्साँ में।
फ़ी अनफ़ुसिकुम नहीं समझा तू और नहीं मैं और नहीं।।
कूज़ा गिल है और गिल कूज़ा शोला आतश आतश शोला।
मौला बन्दा बन्दा मौला तू और नहीं मैं और नहीं।।
अल्लाह था ग़ैर अल्लाह न था अलआनो कमा काना है वही।
मज़मून हदीसे क़ुदसी का तू और नहीं मैं और नहीं।।
इन्सां पे कोई मौक़ूफ़ नहीं हर शै में मुहीत मै ही तो हूँ।
जिस तरह से ख़त में है नुक्ता तू और नहीं मैं और नहीं।।
मैं अपनी ख़ुदी में खुद गुम था इरफ़ान का इश्क़ हुआ मुझको।
इन्सान बना तब पहचाना तू और नहीं मैं और नहीं।।
बिसमिल तो बराये नाम हूँ मैं हैरत नहीं है अल्लाह हूँ मैं।
आरिफ़ हूँ अगर तू शक मत ला तू और नहीं मैं और नहीं।।

(21) जब फ़क़त हू है तो फिर ऐ नव जवाँ कुछ भी नहीं।
एक धोका है मकानो लामकाँ कुछ भी नहीं।।
मुल्क है और न मलक जबरूत न लाहूत है।
172 सब भुला दे वल्लाह बिल्लाह जाने जाँ कुछ भी नहीं।।
क़दरती इल्मी इरादा सब लिबासे मक्र हैं।
हिफ़्ज़ो हिस्सो वहमो ईनो आँ कुछ भी नहीं।।
मत अहद से हो तू अकसर अक्स अपना देख के।
कुल हुवल्लाह पढ़ कहाँ है बापो माँ कुछ भी नहीं।।
जब वही जाहिर वही बातिन है बिसमिल क्या रहा।
आपको पहचान ले ऐ नौजवाँ कुछ भी नहीं।।

(22) मैं ही मैं अयाँ हूँ मैं ही मैं निहाँ हूँ।
मकाँ भी मैं ही और मैं ही ला मकाँ हूँ।।
मैं ही शरा हूँ और मैं हुकमिराँ हूँ।
मैं ही मैकदा और मैं पीरे मुग़ाँ हूँ।।
तू हस्ती को अपनी समझ मेरी ज़ाहिद।
खुदी भूल मैं निहाँ और अयाँ हूँ।।
मैं ही शेख़ हूँ और मैं ही बरहमन।
मैं ही वेद हूँ और मैं ही फिर कुरआँ हूँ।।
मैं वाहिद हूँ कसरत से हैं नाम मेरे।
अहद से मैं ही हो के अहमद अयाँ हूँ।।
कोई मेरे असरात को कैसे समझे।
मैं मौजू व मुहमिल का खते बयाँ हूँ।।
झुके क्यों न सर तेरे क़दमों पे मुर्शिद।
मैं बिसमिल था कल आज शाहे जहाँ हूँ।।

(23) कहीं बादह कहीं साग़र कहीं पीरे मुग़ां तुम हो।
कहीं बन्दे हो तुम अपने कहीं अपने खुदा तुम हो।।
कहीं अश्वा कहीं ग़म्ज़ा कहीं नाज़ो अदा तुम हो।
कहीं ज़ोरो जफ़ा हो और कहीं महरो वफ़ा तुम हो।।
बरहमन दैर में और शेख कहलाते हो काबा में।
कहीं बदरूद्दुजा तुम हो कहीं शमसुद्दुहा तुम हो।।
तुम्हीं ने तुमको देखा और तुम्हीं ने तुमको पहचाना।
यकीं तुम दीद तुम और हुस्न भी तुम हाफ़िज तुम हो।।
173 जिगर भी तुम दिल भी तुम और जिस्म भी तुम जान भी तुम हो।
तुम्हीं तो जाने जाँ हो हर किसी के आशना तुम हो।।
मुही उद्दीन मुईन उद्दीन जलाल उद्दीन शमस उद्दीन।
अबू बकरो उमर उसमाल अली शेरे खुदा तुम हो।।

तुम ही हो अब्द रहमाँ तुम ही शाकिर तुम ही तालिब।
तुम्हारा ही निशाँ बिसमिल है बिसमिल का पता तुम हो।।

(24) अगर तू शमआ रोशन है तो मैं हूँ तेरा परवाना।
जो तू है बादये गुलगूं तो मैं हूँ तेरा पैमाना।।
शराबे शौक़ पी पी कुछ अजब हालत है मस्ताना।
खुदी तक मिट गई बेहोश हूँ मजनूँ हूँ दीवाना।।
बला नोशों से पाला पड़ गया है मेरा ऐ साक़ी।
अभी बाक़ी बहुत है तिशनगी ढलका दे खुमखाना।।
दुआ है ऐसा मौक़ा हो कि हम तुम दोनों तन्हा हों।
नशा हो बेखुदी हो उड़ रहा हो दौरे पैमाना।।
दुई बाक़ी न हो असला खुमारे इश्क़ हो इतना।
गुमे होशो खिरद सूझे न आबादी न वीराना।।
तुम्हें ढूँढूँ तो मैं पाऊँ मुझे ढूँढो तो तुम पाओ।
न वाँ मैं हूँ न तुम हो इक फ़क़त हूँ का हो काशाना।।
अगर है इमतिहाँ का क़स्द हो हुक्मे कज़ा जारी।
तेरी उलफ़त में मर जाना है मेरी जान जीजाना।।
174 बलायें सारी झेलो और रज़ा जूई करो बिसमिल।
वही है मर्द कामिल जिसकी हिम्मत होये मर्दाना।।

(25) अगर आरिफ़ है मत शर्मा अनल हक़ कह अनल हक़ कह।
कोई ग़ैर है अल्लाह का अनल हक़ कह अनल हक़ कह।।
वही हद है वही खनजर वही फ़तवा वही क़ाजी।
खुशी से दार पर चढ़ जा अनल हक़ कह अनल हक़ कह।।
जो है क़ादिरे मुत्लक़ अनल हक़ क्यों नही कहता।
तुझे क्यों पास है हद का अनल हक़ कह अनल हक़ कह।।
जो हो ख़ामोश कुछ शक है अगर शक है मुनाफ़िक़ है।
है "अल इन्सानो सिर्रुल्लाह अनल हक़ कह अनल हक़ कह।।
अनल हक़ सिर्फ़ बातिन ही नहीं है है वह ज़ाहिर भी।
अगर हो रम्ज़ हक़ समझा अनल हक़ कह अनल हक़ कह।।
खुदा भी और मुहम्मद भी शरीअत भी फ़राइज़ भी।
मुसम्मा सब का है अल्लाह अनल हक़ कह अनल हक़ कह।।
न रहमाँ है न शाकिर है न तालिब है न बिसमिल है।
वही अब है जो पहले था अनल हक़ कह अनल हक़ कह।।

(26) बन्दा बन के मौला ने अपने आप को छुपाया है।
आप अहद है आप ही अहमद आप पे आप रिझाया है।।
आप फ़ना हैं आप बक़ा हैं आप जुदा हैं आप मिला हैं।
आप ही इल्ला आप अल्लाह आप ही "लाइलाहा" हैं।।

आप ही काबा आप कलीसा आप ही दैरो मस्ज़िद हैं।
मुल्ला बन के आपको उसने चक्कर में ला डाला है।।
आप ही जद है आप ही अमजद आप ही मादर और पिदर।
आपकी गोद में आप ही खेले बन के मोहन लाला है।।
आप ही अर्श और आप ही फ़र्श आप ही खलदो नार हैं वह।
आप मकीं हैं आप मकाँ हैं क्या क्या रंग जमाया है।।
आप ही बुत और आप बरहमन आपकी पूजा आप करें।
आप ही मजनूं आप ही लैला आप पे आप लुभाया है।।
कोई न बिसमिल कोई न तालिब कोई न शाकिर और रहमाँ।
आप में आपको आप फ़ना कर आपको आप ही पाया है।।

(27) जिधर देखा जहाँ देखा वही खुद था वही खुद है।
लतीफ़ा था न दौरा था वही खुद था वही खुद है।।
न था क़ौसैन और न नूरा और न सैफ़े क़ाता थी।
शुहूदी बे सबब भटका वही खुद था वही खुद है।।
अगर वह वहदहू है लाइलाहा भूल जा सूफ़ी।
कि इल्लल्लाह और अल्लाह वही खुद था वही खुद है।।
भुला नासूत और मलकूत और जबरूत और लाहूत।
नसीरा कर न महमूदा वही खुद था वही खुद है।।
न बेरंगी न नै रंगी यह सब धोका यह सब धोका।
पता उसका न कुछ उसका वही खुद था वही खुद है।।
अशरफ़ी कर न आईना सिराजा कर न इबरत कर।
न हब्से नफ़सो सुलताना वही खुद था वही खुद है।।
न कोई शग़ल कर न फ़िक्र इतमीनान कर हासिल।
तरीक़ा है यह रिन्दो का वही खुद था वही खुद है।।
शरीअत और तरीक़त और हक़ीक़त मारफ़त यह सब।
मुसम्मा वह है यह अस्मा वही खुद था वही खुद है।।
तरक्की और भी गर चाहे बिसमिल भुला यह भी
वही खुद है वही खुद था वही खुद था वही खुद है।।

(28) तेरी शक्ल हूँ मैं मेरी जान तू है।
मैं तेरा पता मेरी पहचान तू है।।
फ़क़त मैं ही मैं हूँ व या तू ही तू है।
न मैं मैं न तू तू फ़क़त एक हू है।।
अदब मुझको मद्दे नज़र है व गर ना।
मैं एक खाब हूँ जिसका खाबिन्दा तू है।।
खुदी है खुदा में ख़ुदा है खुदी में।
दुई भूल मक़्सद तेरे रूबरू है।।

मुनज़्ज़ह मुशब्बह मुशब्बह मुनज़्ज़ह।
यह रूहे तसव्वुफ़ है क्या समझा तू है।।
जुदा का जो नुक्ता पलट दो खुदा हो।
अलस्तु का मतलब यही हू ब हू है।।
जमाअत है रिन्दों की खुम हैं ढलकते।
न जा मुहतसिब कैसा दीवाना तू है।।
हवा छू गई होश जाते रहेंगे।
समझ सोच लेना कि भट्टी की बू है।।
खबरदार बिसमिल मुसम्मा का मक़सद।
न बन्दा न अल्लाह न हा है न हू है।।

(29) मुर्शिदे बर हक़ ने सिर्रे हक़ है समझाया मुझे।
मिरअते मज़हर में है वल्लाह दिखलाया मुझे।।
आईना देखे से आईना नज़र आता नहीं।
मैं के आईने में मैं कैसे नजर आया मुझे।।
सुम्मा वज्हु का सिर आश्कारा हो गया।
ज़र्रा ज़र्रा ने खुदा अपने में दिखलाया मुझे।।
मौत की बीमारी लाहक़ हो गई थी दर्द दिल।
जामे इरफ़ाँ साक़िए वहदत ने पिलवाया मुझे।।
देख के ज़िल अपना आकिस खुद पे खुद शैदा हुआ।
ज़िल्ले आकिस ऐने आकिस ही नजर आया मुझे।।
177 आई आकिस को मुहब्बत ज़िल को भी प्यार आ गया।
मुझसे उलफ़त करके आशिक़ अपना करवाया मुझे।।
जिल में आकिस छुप गया मुफ़त अक्स रुसवा हो गया।
आप हो के मुबतिला बदनाम करवाया मुझे।।
मैं नहीं हूँ वह है गर मैं हूँ बुरा हूँ अब्द हूँ।
सिर्फ़ इतना बन्दगी का भेद जतलाया मुझे।।
रब ही रब है इसतिक़ामत पर ऐ बिसमिल चुप रहो।
किस तरीक़े से तुम्हें यह लफ़्ज़ याद आया मुझे।।

(30) तस्वीर मुहम्मद है खुदा बोल रहा है।
परदा मेरे भेदों का वही खोल रहा है।।
गो बहरे रिसालत के कई एक हैं मोती।
इन सब में मुहम्मद ही इक अनमोल रहा है।।
गो यह भी तरीका है कि मैं ला हूँ वह इल्ला।
जो मीम में गुम हो गया मक़बूल रहा है।।

धोका है तुझे शीन नहीं मीम है तालिब।
मीज़ान में असरार वही तौल रहा है।।
इस शक्ल मिसाली को समझ मीम का बरज़ख।
जो राज़ यह समझा वही लाहौल रहा है।।
बिसमिल मुझे कहते हैं मैं हूँ मीम की तस्वीर।
यह ग़ैर नहीं ऐन वही बोल रहा है।।
अग़यार भी असरार भी हिकमत है शरीअत।
चुप चुप अरे बिसमिल तू ये क्या बोल रहा है।।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اِنَّ الَّذِيۡنَ يُبَايِعُوۡنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوۡنَ اللّٰهَ يَدُ اللّٰهِ فَوۡقَ اَيۡدِيۡهِمۡ

अर्थ-वह जो तुम्हारी बैअत करते हैं वह अल्लाह ही से बैअत करते हैं। उल्लाह का हाथ उनके हाथों पर है।

❁ शजरा सिलसिलए कादिरिया रज़्ज़ाक़िया ❁

है सिर्रे हयातुन-नबी शेख़ कामिल।
वह फ़ानी है उसमें नबी जलवागर है।।
क़लम लगती आई नबी से वली की।
जो था नख्ल तुख्मी वह क़लमी शजर है।।
जो है शौक़ हक़ हो मुहम्मद में फ़ानी।
कि हक़ के वही ज़ात पेशे नज़र है।।
हुआ जो कोई अपने मुर्शिद में फ़ानी।
नबी उसमें जाहिर खुदा मुस्ततर है।।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمۡ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ بَعۡدَ دُكُلِّ مَعۡلُوۡمٍ لَّكَ

इलाहल आलमी। अरहम व अकरम।
हमीदो क़ादिरो खल्लाक़े आलम।।
खज़ीना हूँ मैं इस्याँ और ग़म का।
तू गन्जीना है बख्शिश और करम का।।
मेरे किरदार की कसरत को मत देख।
तू मुझ में वस्अते रहमत फ़क़त देख।।
खते आमाल में इस्याँ हैं जितने।
तू आबे अफ़व से उन सबको धो दे।।
जबानो दिल पे कर दे वह इनायत।
कि तेरे ज़िक्र की पाएँ हलायत।।

अता कर दे इलाही वह बसीरत।
जो तेरे ग़ैर की देखे न सूरत।।

179 मुझे छूने की क़ूवत बख्श ऐसी।
जिसे छूऊँ वह होवे ज़ात तेरी।।
अता कर वह समाअत या इलाही।
तजल्ली हो हर इक आवाज तेरी।।
मशामे जान को दे दे वह लज़्ज़त।
जो ले आठों पहर तेरी ही निगहत।।
जो आये वहम में वह सिर्फ़ तू हो।
ग़रज़ हर हिस में जो भी हो वह हू हों।।
मेरे दिल पर तू वह बिजली गिरा दे।
कि जो तेरे सिवा सब कुछ जला दे।।
मेरे अन्दर जो है सतहे ख्याली।
अयाँ कर उसमें तंजीही तजल्ली।।
खुदाया हिफ़्ज़ में महक़ूज़ कर दे।
तू इस्मे ज़ात को आज़म को अपने।।
शराबे मारफ़त ऐसी पिला दे।
करे मदहोश और सब कुछ भुला दे।।
नशा हद से बढ़ जाये तो क्या हो।
जो ढूँढूँ आपको तो पाऊँ तुझको।।
मुझे हर क़ैद व हर हद से कर आज़ाद।
मेरे दिल को अपने ग़म से रख आबाद।।
मेरे आक़ा न रख महरूम मुझको।
कि है रहमत तेरी मालूम मुझको।।
बहक़्क़े सरवरे कोनैन अहमद।
अता कर अपना इश्क़ो इरफ़ाँ बेहद।।
अलीयो हैदरो सफ़दर का सदक़ा।
अता कर मेरे सर को अपना सौदा।।
हुसैन इब्ने अली के वास्ते से।
मये वहदत मुझे भी तू पिला दे।।
इलाही सदक़ा ज़ैनुल आबिदीं का।
बना अपना मुझे मक़बूल बन्दा।।
इमामे बाक़रे आली का सदक़ा।
अता कर महवियत अपनी का रूत्बा।।
इमामे जाफ़रे सादिक़ का सदक़ा।
बढ़ा दे सिम्त खुद को मेरा जज़बा।।

इमामे मूसिये काज़िम का सदक़ा।
अता कुरबे मुकम्मल कर तू अपना।।
तसद्दुक़ से अली मूसा रज़ा के।
मुझे भी आँख हक़ बीनी की दे दे।।
180 बहक़्क़े हज़रते मारूफ़ करखी।
मुहब्बत कर अता तू अपनी सच्ची।।
बराये खाजये सिर्री सक़ती।
अता कर दे मुझे इरफ़ानी मस्ती।।
जुनैदे आरिफ़े कामिल का सदक़ा।
मुझे भी हिस्से बातिन बख्श देना।।
पए शिब्ली मुकम्मल या इलाही।
अता कर नफ़्सो शैताँ से रिहाई।।
ब हक़्क़ अब्द वाहिद शेख वासिल।
अता कर दे मुझे रुश्दे मुकम्मल।।
बहक़्क़े बुल फ़रह तरतूसी नामी।
तरीक़ा में न रख मेरे तू खामी।।
बराये बुलहसन हंकार वाले।
जो होवे मासिवल्लाह कुल भुला दे।।
बहक़्क़े बूसईद फ़ानी व बाक़ी।
अता कर मुझको हिस्से रूही व नूरी।।
मुही उद्दीन जीलानी का सदक़ा।
अता कर दे बक़ा बिल्लाह का रुत्बा।।
बहक़्क़े अब्द रज़्ज़ाक इब्न मीराँ।
अता ईक़ान कामिल कर और ईमां।।
तुफ़ैले हज़रते सैयद मुहम्मद खुदाया।
अता कर जौक़ी इसतिक़लाल पूरा।।
इलाही वास्ते सैयद अली के।
सफ़ाओ सिद्क़ तू मुझको भी दे दे।।
खुदावन्दा तुफ़ैले शाह मूसा।
न खाऊँ नफ़्स से शैताँ से धोका।।
बहक़्क़ शाह हसन मक़बूल आरिफ़।
मुझे कर दे तू दानाये मआरिफ़।।
बहक़्क़े शह अबुल अब्बास मशहूर।
अता कर हुस्न बातिन चश्म बद्दूर।।
बहा उद्दीन वली के वास्ते तू।
मेरे सीना को भी अब खोल दे तू।।

बराये हज़रते सैयद मुहम्मद।
मुझे भी बख्श दे सिर्रे मुहम्मद।।
बहक़्क़े शह जलाले हज़रते हक़।
बतालत से हटा कर, कर सूए हक़।।

181 बहक़्क़े शह फ़रीद कुन्बे दौराँ।
मुझे भी तू बता दे हक़ की पहयाँ।।
पए मुलतानी इब्राहीम आरिफ़।
मुझे गर्दान ले आशिक़ व आरिफ़।
बराये खाज़ा इब्राहीम आरिफ़।
अता कर अहमदी मस्ती मुझे भी।।
बहक़्क़े शह अमान उल्लाह ग्रामी।
तू मुझ पर खोल असरारे निहानी।।
बहक़्क़े शह हुसैन आरिफ़ मुकम्मल।
मुझे भी फिर तू पलटा दे ब साहिल।।
बहक़्क़े हज़रते शाहे हिदायत।
मुझे गर्दान जी रुश्दो हिदायत।।
तसद्दक से शहे अब्दुस्समद के।
बचा दे हिर्स से शिरको रिया के।।
बहक़्क़े अब्द रज़्ज़ाक़े मुअज़्ज़म।
मुझे कर दीनो दुनिया में मुकर्रम।।
गुलामे दोस्त के तू वास्ते से।
सफ़ाओ सिद्क़ तू मुझको भी दे दे।।
इलाही वास्ते गुलाम अली के।
लगावे मासिवा कुल दूर कर दे।।
बहक़्क़ अब्द रहमाँ शेख़ सिन्धी।
तू कर मक़बूलों में अपने मुझे भी।।
पए शाकिर हुसैने बख्श शाकिर।
बना मुझको भी शाकिर और साबिर।।
पए तालिब हुसैने शह मुकम्मल।
सही सालिम मुझे पलटा व साहिल।।
बराये इफ़तिखारे हक़ वद्दीन।
मुरादों से तू कर झोली पुर आमीन।।
पये हज़रत खलीक़ उल्लाह सूफ़ी।
अता कर रंग बेरंगी मुझे भी।।

❖ ❖ ❖

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمَ

किताब का खुलासा (सारांश)

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया।

كَانَ اللّٰهُ وَلَمْ يَكُنْ مَّعَهٗ شَيْءٌ اَلْآنَ كَمَا كَانَ

अर्थ- अल्लाह अकेला था और उसके साथ कोई शै (चीज़) मौजूद न थी और अब भी वह ज्यों का त्यों है। आपने फिर फ़रमाया।

رَحْبَبْتُ اَنْ اُعْرَفَ فَخَلَقْتُ خلقا

अर्थ- अल्लाह को मुहब्बत आई कि मैं पहचाना जाऊँ पस मखलूक़ को पैदा किया।

पस पैदाइश की असली ग़रज अल्लाह की पहचान है। इसी मक़सद को हासिल करने के लिये इबादत फ़र्ज हुई - कुरआन।

مَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَا لِيَعْبُدُوْن

अर्थ- जिन्नो और इन्सानों को अल्लाह ने अपनी इबादत के लिए पैदा फ़रमाया।

शेर- घी तो रहता दूध में पर बे मथे मिलता नहीं।
पी तो रहता आप में पर बे जपे मिलता नहीं।।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया।

وَفِيْ اَنْفُسِكُمْ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ

अर्थ- मैं तुम्हारे नफ़्सों (साँसों) में मौजूद हूँ क्या तुम देख रहे हो।

وَهُوَا مَعَكُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ

अर्थ- जहाँ तुम हो वहीं मैं हूँ।

وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدُ

अर्थ- (हम तुम्हारी शह रग (जान) से ज्यादा तुम्हारे क़रीब हैं इतना ज़्यादा क़रीब होते हुए भी वह हमारी पहचान में नहीं है। उसे पहचनवाने के लिये रसूल

करीम दुनिया में तशरीफ़ लाए और अब उनके खलफ़ा (नायब) औलिया अल्लाह जो हयातुन-नबी का भेद हैं इस मक़सद को पूरा कर रहे हैं। मौलाना रूम फ़रमाते हैं-

शेर- चूँ कुनी तू ज़ाते मुर्शिद रा क़ुबूल।
हम खुदायाबी व हमयाबी रसूल।।

अर्थ- जब तूने ज़ात मुर्शिद को क़ुबूल कर लिया तो तूने खुदा व रसूल को पा लिया।

ان التوحيد راس الطاعات

हुज़ूर ने फ़रमाया, तौहीद तमाम इबादतों का सर है।

183 तौहीद को समझे बग़ैर तमाम इबादों का सर कटा हुआ है। इसलिये कि तौहीद का ज़िद शिर्क है जिसकी माफ़ी ही नहीं है। तौहीद की मिसाल को अपने खाब की मिसाल से समझो। जैसे तुम्हारा ख्याल जो तुम खुद हो एक ख्याली दुनिया बन जाता है और तुम्हारा ग़ैर नहीं होता। उसी तरह अल्लाह का ख्याल जो वह खुद है सारा जहाँ बना हुआ है। उसका ग़ैर नहीं है- क़ुरआन।

كُل من عليها فان وَّيبقٰى وَجْهُ ربِّكَ ذو الجلالِ والاكرام

अर्थ- (तमाम आलम फ़ानी है सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात बाकी है)

هُوَ الاَوّل والاٰخر والظاهر والباطن

अर्थ- (अल्लाह ही अव्वल, आखिर, जाहिर और बातिन है)

शेर- जो कुछ तू देखता है वह फ़रेबे खाबे हस्ती है।
तख़ैयुल के करिश्मे हैं बलन्दी है न पस्ती है।।

हुज़ूर पाक ने फरमाया।

من عرف نفسه فقد عرف ربهٗ

अर्थ- (जिसने अपने आपको पहचाना उसने अपने खुदा को पहचाना) अल्लाह ने फ़रमाया।

اقرَاء كتٰبكَ كفٰى بنفسكَ اليومَ عليكَ حسيباً

अर्थ- (पढ़ तू अपनी किताब यानी अपनी ज़ात (हक़ीक़त) पर ग़ौर कर तो काफ़ी होगा तेरा नफ़्स ही तेरे ऊपर इसी वक्त मुहासिब (हिसाब लेने वाला)

وَلا تكونوا كالذين نسوا الله فانسٰهم

अर्थ- और न हो जाओ उन लोगों की तरह जो हमको भूल गये, अपने नफ़्स यानी अपने वजूद भूल ही हमारी भूल है और यही लोग फ़ासिक़ हो गये यानी अल्लाह को हरगिज़ न पायेंगे।

अल्लाह पाक ने अज़ल (पहले दिन) तमाम रूहों (जानों) से मुखातिब होकर सवाल किया।

اَلَسْتُ بربکه

क्या मैं ही तुम्हारा रब यानी हक़ीक़त और माद्दा नहीं हूँ। रूहों ने जवाब में कहा हाँ, तू ही है। इस लिये कि उस वक़्त रूहों पर जिस्म का ग़िलाफ़ (खोल) न था, और अपने को अल्लाह से मिला पाती थीं अपनी मजाज़ी खुदी का इन्कार और हक़ीक़ी खुदी का इक़रार था। दुई या शिर्क न थी अपने को अल्लाह से अलाहिदा और अलग
184 नहीं पा रही थीं, चुनाँचे जब अल्लाह ने पहला ग़िलाफ़ जिस्म का आदम अलैहिस्सलाम की रूह पर डाला तो तमाम फ़रिश्तों से सज्दा कराया ताकि रूह को बला (हाँ) कहने का वादा याद आ जाये और अपने को बजाये रूह के जिस्म न यक़ीन कर लें। मौलाना रूम फरमाते हैं-

शेर- गर न बूदे ज़ाते हक़ अन्दर वजूद।
के रवा बूदे मलक करदन सुजूद।।

अर्थ- अगर जात हक़ आदम के वजूद में न होती तो फ़रिश्तों को आदम के लिये कब सज्दा जायज़ होता।

लेकिन रूहें अपने को बजाये रूह के जिस्म ही समझ बैठीं और वहमी दुनिया में फँस गईं।

अल्लाह पाक ने फ़रमाया-

(लनतनालुलबिर्रा हत्ता तनफ़ेकू मिम्मातुहिब्बून)

अर्थ- (हरगिज़ फ़लाह यानी नजात न होगी जब तक अपनी सबसे प्यारी चीज़ को (जान) मुझ पर खर्च न कर दोगे)

सबसे ज्यादा प्यारी चीज़ जान जो अल्लाह की अमानत है और इन्सान को दी गई है और उसने उसमें ख्यानत कर ली है यानी जान पर अपनी खुदी का (मैं हूँ) धोका हो गया है और बला (हाँ) कहते वक़्त जो नशा था (अपना इन्कार और ख़ुदा का इक़रार) उतर गया। इसलिए रसूल अल्लाह को बैअत लेने यानी मुरीद करने का हुक्म हुआ ताकि इन्सान अपनी खुदी की ख्यानत को बेच कर अल्लाह की ज़ात को अमानत का अमीन हो जाये।

जब अपने को जान पा लिया तो खुद से फानी और अल्लाह की जात से बाकी हो गया।

शेर- अज़ल में जो सदा मैंने सुनी थी ज़ौक़े मस्ती में।
वही आवाज़ अब भी सुन रहा हूँ अपनी हस्ती में।।

❖ ❖ ❖

तसव्वफ़ की तस्दीक़ में दूसरे मज़हब के बुज़ुर्गों की बातें

(1) कृष्ण जी महाराज गीता में लिखते हैं। मनुष्य जन्म लेते ही दुनिया के धन्धों और माया जाल में फंस जाने के कारण मोह रूपी हो जाता है। क्योंकि वह अपने आपको बजाये (रूह) जीवआत्मा के शरीर यक़ीन कर लेता है और मुझ निराकार परमेश्वर को अपना जीवआत्मा नहीं समझता हालाँकि मैं ख़ुद ही जीवआत्मा बना हुआ मनुष्य के शरीर में मौजूद हूँ। मैं ही सुनता, बोलता और देखता हूँ। लेकिन मेरे ऊपर वह अपने होने का धोका जमा लेता है लेकिन जो हमारे सच्चे भक्त हैं और जिनका चित्त मज़बूती से निराकार स्वरूप में लगा रहता है वह बड़े उत्तम हैं।

क्योंकि मैं ही उदित हूँ, अपने होने का धोका और अहँकार दूर हो जाता है, और मैं ही मैं रह जाता हूँ।

(2) वशिष्ट जी ने राम चन्द्र जी से कहा कि ऐ राम दुनिया ब्रह्म की चेतन शक्ति की भावना है यानी मिथ्य (ख़ाब) है। जिसने इस बात पर यक़ीन कर लिया वह बैकुण्ठवासी हो गया और इस किस्म की परेशानियों से छुटकारा पा गया। और जिसने उसको सच मान लिया वह नरकवासी हो गया और अज़ाब में फँस गया। फिर आपने इसको एक मिसाल देकर समझाया।

भारत में लोन नामी एक राजा था। उसके पास एक मदारी आया और राजा के
186 सर पर मोछल झलने लगा और राजा गद्दी पर बैठे-बैठे सो गया और खाब में देखा किसी दूसरे राजा ने उसके पास एक उड़न घोड़ा भेजा है जो हरन की तरह तेज़ दौड़ने वाला है। राजा उस पर सवार हो गया और वह घोड़ा उस राजा को बहुत तेज़ी के साथ बहुत दूर ले गया और किसी तरह वह बस में न आता था।

इत्तेफ़ाफ़िया वह घोड़ा एक पेड़ के नीचे जैसे ही आया राजा पेड़ की डाल पकड़ कर घोड़े से नीचे उतरा। भूख और प्यास से बुरा हाल था कि उसे एक लड़की खाना पानी लिये हुए दिखाई दी। राजा ने उस लड़की से खाना-पानी माँगा लेकिन उसने देने से इसलिए इन्कार कर दिया कि वह मेहतरानी थी। उसने कहा कि अगर आप मेरे हाथ का खाना और पानी इस्तेमाल करेंगे तो आपका धर्म नष्ट हो जायेगा और मुझे बहुत बड़ा पाप होगा। हाँ अगर आप मेरी बिरादरी में शामिल होकर मुझसे शादी कर लें तो फिर मुझे कोई एतराज़ न होगा। राजा ने उसकी यह शर्त मान ली और दोनों पति-पत्नी के धागे में बंध गये। राजा ने उसके साथ बहुत लम्बी मुद्दत गुज़ारी यहाँ तक कि दोनों बूढ़े हो गये और उनके लड़के-लड़कियाँ, नाती-पोते पैदा हुए।

एक दिन उसकी बीबी की मौत हो गई और राजा उस ग़म को सह न सका और खुद भी मर गया। इतना सब कुछ देखने के बाद राजा की आँख खुल गई और उसने देखा कि वह अब भी अपनी गद्दी पर बैठा है और मदारी वैसे ही मोरछल झल रहा है।

इसके बाद वशिष्ट जी ने कहा कि ऐ राम वह दोनों ज़माने झूठ थे सिर्फ़ खुदा सच
187 था। राज का ज़माना खुदा का स्वप्न था और मेहतर का जमाना स्वप्न का स्वप्न था। यह बात कुरआन से साबित है कि दुनिया ख़ाब है।

(3) अष्टा बकर महाराज कहते हैं-

ब्रह्मा सत्यम् जगत मिथ्या।
जीव ब्रह्मेब न परा।।

अर्थ- खुदा ही सच और बाक़ी है और तमाम संसार खाब यानी झूठा है। जान ही खुदा है और उसका ग़ैर नहीं है।

राजा जनक बहुत बड़े तपस्वी थे लेकिन ज्ञान प्राप्त न होता था। उन्होंने महात्माओं को इकट्ठा किया और कहा तुममें से कोई ऐसा है जो जल्द से जल्द मुझको खुदा से मिला दे। अष्ट बकर महाराज ने कहा कि मैं ऐसा कर सकता हूँ लेकिन शर्त यह है कि तुम अपना मन यानी चेतन शक्ति मुझे दे दो और अपना अख्तियार उस पर से उठा लो। राजा ने वैसा ही किया और थोड़ी देर में शान्ति मिल गई।

(4) स्वामी विवेकानन्द जी लिखते हैं-

A- Whole world is a dream of some dreamer and the dream is dreamer only, there is no separate existance.

अर्थ- तमाम दुनिया किसी का स्वप्न है और स्वप्न सिर्फ़ स्वप्न देखने वाला ही है उससे अलग कोई चीज़ नहीं।

B- You are neither body nor mind nor Budhi, but alperveding and omnipresent Atma, by this belief and practice you will become one with God, will see that you are real and every thing is else unreal your imagination only.

अर्थ- तुम न तो जिस्म हो न जान और न बुद्धि लेकिन सबमें मुहीत और हर जगह मौजूद रूह हो। इस पर यक़ीन और मश्क़ से तुम खुदा के साथ एक हो जाओगे और मालूम करोगे कि तुम सच हो और हर चीज़ फ़ानी (मिट्टी) है और सिर्फ़ तुम्हारा गुमान है।

C- A restless mind is Banda and Peaceful mind is God. So to become thoughtless is the highest form of meditation.

अर्थ- ख्याल चंचल बन्दा है और ख्याल साकिन (ठहरा हुआ) खुदा है। लिहाज़ा बे ख्याल हो जाना ही सबसे बड़ी इबादत है।

हुजूर पाक ने फ़रमाया-

(मन सकता सलमा वमन सलमा फ़क़द नजा)

अर्थ- जो चुप रहा उसने सलामती पाई और जिसने सलामती पाई उसकी नजात हो गई। यानी जबान से बोलना और दिल से सोचना बन्द कर दिया वह जिस्म की क़ैद से आजाद हो गया यानी उसकी नजात हो गई।

189 D- Our main object of comming in this world is realisation, which is obtainable by self surrender is not a state to be obtained as, we are already surrendered to Him. We are only to become concious of it.

अर्थ- इस दुनिया में आने का असली मक़सद खुदा की पहचान है जो अपने आपको उसके आगे अर्पण कर देने से हासिल होती है। अपने आपको अर्पण कर देना कोई हासिल करने की चीज नहीं है। क्योंकि हम लोग तो पहले से ही अपने आपको अर्पण किये हुए हैं, हमें सिर्फ इसकी जानकारी जोनी चाहिये।

(5) **कबीर दास जी कहते हैं-**

जहाँ सेन्हीं आयो अगम वाहू देस्वा।
पानी पवन नाहीं धरती अकस्वा।।
चाँद सुरुज नाहीं रैन दिवस्वा।
जहाँ सेन्हीं आयो अगम वाहू देस्वा।।
हिन्दू तुरुक नाहीं रूप नाहीं रिख्वा।
मुग़ल पठान नाहीं सैयद नाहीं शेख्वा।।
ब्रह्मा बिशुन नाहीं संत महेस्वा।
आदि जोत नाहीं गौरी गनेस्वा।।
कहत कबीर सुनो भाई साधो।
अजर अमर धर पाक सन्देस्वा।।

◆◆◆

तन विष की बेलरी गुरु अमृत की खान।
शीश दिये जो गुरु मिलें तो भी सस्ता जान।।

◆◆◆

दर्पन कीरि गुफ़ा में सहा बैठे धाये।
देख प्रतिमा अपनी भूक भूक मर जाये।।

(6) तुलसी दास जी कहते हैं-

मोरे मन प्रभू अस बिस्वासा।
राम से अधिक राम के दासा।।
राम सिन्धु धन सज्जन धीरा।
चन्दन तरु हर संथ समीरा।।

190

अर्थ- हमारे दिल में ऐसा यक़ीन है कि खुदा से बढ़कर खुदा के दास (वली, गुरु, पीर) का मर्तबा है। राम (अल्लाह) समुन्दर की तरह हैं और गुरु बादल की तरह हैं। अल्लाह चन्दन के पेड़ के मिस्ल है और गुरु मिस्ल हवा के है।

(7) वेद कहता है-

अकल अनीह अनाम उरूपा।
अंभव अगम अखंड अनूपा।।
मन मुतीत अमल अभिनाशी।
निराकार निरबध सुखरासी।।
मन तोह ताहि नहीं भेदा।
बार बीच हम गावें बेदा।।

अर्थ- न उसकी ज़ात है, न किसी से पैदा हुआ न उसका कोई नाम है न कोई सूरत है, टुकड़े भी नहीं हो सकता। कोई जिस्म नहीं रखता और न मरता है। आनन्द रूपी है। तुझमें और महसूसात और अल्लाह में कोई फ़र्क़ नहीं है। वह मिस्ल पानी के है और तमाम आलम (दुनिया) मिस्ल बर्फ़ के है।

क़ुरआन से भी साबित है कि वह ज़ात अपने ग़ैर से पाक है। उसके अज़्ज़ा (टुकड़े) नहीं हो सकते सब कुछ जानने वाला न किसी से पैदा हुआ न किसी को पैदा किया। वही अव्वल, आखिर ज़ाहिर और बातिन सब वही है।

191 हज़रत मुही उद्दीन इब्न अरबी फ़ुसूसुल हकम में लिखते हैं।

जो हक़ और खल्क़ (आलम) को एक कहता है वही मवहहिद और आरिफ़ों का इमाम है और जो दो कहता है वह मुशरिक है। और वह अल्लाह को हरगिज़ न पायेगा।

हज़रत ख्वाजा मुईन उद्दीन ने अल्लाह तआला से पूछा। कब तक परदे में रहोगे? जवाब मिला। जब तक कि तुम हो।

ख्वाजा साहब फ़रमाते हैं। एक साँस के लिये भी अगर अपनी हस्ती (खुदी) से जुदा हो जाओ तो वह साँस उस सैकड़ों साल से बेहतर है जिसमें दिन को रोज़ा रखे और तमाम रात नमाज़ पढ़े।

शेर- दूई के साथ हक़ को ढूँढता है अपने खारिज में।
तेरे इस वहम पर ज़ाहिद हँसी मालूम होती है।।

◆◆◆

उसे चाहता है तो अपने को खो दे।
यही उसके मिलने की राहे निको है।।

❖ ❖ ❖

अध्याय-15

तरीक़-ए-फ़ातिहा

और खलफ़ा के नाम व पते

طریقۂ فاتحہ

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِوَجْھِکَ الْکَرِیْمِ ۚ وَسُلْطَانِکَ الْعَظِیْمِ ۚ وَحُکْمِکَ الْقَدِیْمِ ۚ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّ
جِیْمِ ۚ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۚ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اُقَدِّمُ اِلَیْکَ بَیْنَ یَدَیْ کُلِّ نَفْسٍ وَّ لَمْحَۃٍ
تَطْرِفُ بِھَا اَھْلُ السَّمٰوٰتِ وَاَھْلُ الْاَرْضِ ۚ وَکُلَّ شَیْءٍ ھُوَ فِیْ عِلْمِکَ کَائِنٌ اَوْ قَدْ کَانَ اُقَدِّمُ
اِلَیْکَ یَدَیْ رَالِکَ کُلِّہٖ ۚ مُخَاطِبًا اِلٰی اَرْوَاحِ رِجَالِ اللّٰہِ فِی الْعَالَمِ مَنْقُوْلًا مِّنَ الشَّیْخِ شَھَا بِ
الدِّیْنِ السُّھْرَوَرْدِیِّ قَدَّسَ اللّٰہُ سِرَّہُ الْعَزِیْزَ ۚ اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ یَا اَھْلَ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ ۚ
مِنْ اَھْلِ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ ۚ بِحَقِّ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ ۚ اِغْفِرْ لِمَنْ قَالَ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ ۚ ھُوَ الْاَوَّلُ
وَالْاٰخِرُ وَالظَّاھِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَھُوَ بِکُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ۚ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْکَ یَا مُحَمَّدُ ۚ اَلسَّلَامُ
عَلَیْکَ یَا نُوْرَ اللّٰہِ وَظُھُوْرَہُ الْاَوَّلُ ۚ فِیْ کُلِّ لَمْحَۃٍ وَّ نَفْسٍ عَدَدَ مَا وَسِعَہُ عِلْمُ اللّٰہِ ۚ
اَعُوْذُ بِاللّٰہِ السَّمِیْعِ الْعَلِیْمِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۚ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۚ
اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰہِ قَرِیْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِیْنَ ۚ وَمَا اَرْسَلْنٰکَ اِلَّا رَحْمَۃً لِّلْعٰلَمِیْنَ ۚ مَا کَانَ
مُحَمَّدٌ اَحَدٌ مِّنْ رِّجَالِکُمْ وَلٰکِنْ رَّسُوْلَ اللّٰہِ وَخَاتَمَ النَّبِیّٖنَ ۚ وَکَانَ اللّٰہُ بِکُلِّ شَیْءٍ
عَلِیْمًا ۚ اِنَّ اللّٰہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ ۚ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ ۚ یٰٓاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْہِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ۚ
اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلَی الْکَمَالِ الْمُطْلَقِ وَالْجَمَالِ الْمُحَقَّقِ عَیْنِ اَعْیَانِ الْخَلْقِ وَنُوْرِ تَجَلِّیَاتِ الْمُحَقَّقِ فَصَلِّ
اَللّٰھُمَّ بَارِکْ مِنْکَ فِیْہِ عَلَیْہِ وَسَلِّمْ فِیْ کُلِّ لَمْحَۃٍ وَّ نَفْسٍ عَدَدَ مَا وَسِعَہُ عِلْمُ اللّٰہِ ۚ
اَلَآ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰہِ لَا خَوْفٌ عَلَیْھِمْ وَلَا یَحْزَنُوْنَ ۚ اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَکَانُوْا یَتَّقُوْنَ ۚ سُبْحَانَ
رَبِّکَ رَبِّ الْعِزَّۃِ عَمَّا یَصِفُوْنَ ۚ وَسَلَامٌ عَلَی الْمُرْسَلِیْنَ ۚ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۚ
اَللّٰھُمَّ صَلِّ مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ کُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّکَ ۚ اَللّٰھُمَّ بَلِّغْ وَاَوْصِلْ ثَوَابَ ھٰذِہِ الْخَتْمَۃِ
وَھٰذِہِ التُّحْفَۃِ اِلٰی اَرْوَاحِ جَمِیْعِ الْاَنْبِیَآءِ وَالْمُرْسَلِیْنَ ۚ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْھِمُ الصَّلٰوۃُ
وَالسَّلَامُ ۚ خُصُوْصًا مِّنْھُمْ اِلٰی رُوْحِ سَیِّدِنَا وَمَلَاذِنَا وَمَلْجَانَا وَمَاوَانَا وَقُرَّۃِ اَعْیُنِنَا
وَشِفَآءِ صُدُوْرِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ ۚ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَاَوْلِیَاءِ اُمَّتِہٖ
اَجْمَعِیْنَ ۚ وَاِلٰی رُوْحِیْ وَالِدَیْہِ مَاجِدَیْہِ وَاِلٰی رُوْحِ مُرَبِّیَتِہٖ سَیِّدَتِنَا حَلِیْمَۃَ ۚ وَاِلٰی

اَرْوَاحِ پنجتن پاک وَ دوازدہ امام وَ چہاردہ معصوم وَ خُلَفَاءِ الرَّاشِدِیْنَ الْمَهْدِیِّیْنَ
وَاِلٰی اَرْوَاحِ جَمِیْعِ اَهْلِ بَیْتِ النُّبُوَّةِ وَاِلٰی اَرْوَاحِ جَمِیْعِ اَوْلِیَاءِ اُمَّتِهٖ فِیْ جَمِیْعِ اَقْطَارِ الْاَرْضِ
مِنْ مَغَارِبِهَا وَمَشَارِقِهَا عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ ۝ خُصُوْصًا مِنْهُمْ اِلٰی رُوْحِ
سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا وَمَلْجَانَا وَمَاوَانَا وَقُرَّةِ اَعْیُنِنَا وَشِفَاءِ صُدُوْرِنَا مَحْبُوْبِ سُبْحَانِیْ قُطْبِ
رَبَّانِیْ غَوْثِ صَمَدَانِیْ شَیْخِ سَیِّدِ اَبُوْ مُحَمَّدٍ عَبْدُ الْقَادِرِ جِیْلَانِیْ قَدَّسَ اللّٰهُ سِرَّهُ الْعَزِیْز
وَاِلٰی رُوْحِ وَالِدَیْهِ مَاجِدَیْهِ وَاِلٰی اَرْوَاحِ صَاحِبَاتِهٖ مِنْ اُصُوْلِهٖ وَفُرُوْعِهٖ وَاِلٰی اَرْوَاحِ اَصْحَابِهٖ
وَاَحْبَابِهٖ وَخُدَّامِهٖ وَصَادِرِیْهِ وَوَارِدِیْهِ وَسَائِرِیْهِ وَزَائِرِیْهِ اَهْلِ بَلْدَتِهٖ وَسَائِرِ سِلْسِلَتِهٖ
وَاِلٰی مُنْتَمَاءِ رِضَائِهٖ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ ۝ وَاِلٰی اَرْوَاحِ مَشَائِخِ قَادِرِیَّه

چشتیہ نقشبندیہ سہروردیہ مجددیہ کبرویہ شطاریہ سیاریہ طیفوریہ طبقاتیہ
ارادیہ قلندریہ جلالیہ اویسیہ مداریہ رفاعیہ شاذلیہ عطاسیہ ملامتیہ مرودیہ
قدوسیہ احمدیہ برہنشاہیہ مَا عَلِمْتُ مِنْهُمْ وَمَا لَمْ اَعْلَمْ ۝ خُصُوْصًا مِنْهُمْ اِلٰی اَرْوَاح
جَمِیْعِ اَهْلِ اللّٰهِ الْمُوَحِّدِیْنَ وَالْمَدْفُوْنِیْنَ فِی الْعَرَبِ وَالْعَجَمِ ۝ خُصُوْصًا مِنْهُمْ اِلٰی اَرْوَاحِ جَمِیْعِ
اَهْلِ اللّٰهِ الْمُوَحِّدِیْنَ وَالْمَدْفُوْنِیْنَ فِی الْهِنْدِ وَسْتَانِ خُصُوْصًا مِنْهُمْ اِلٰی اَرْوَاحِ جَمِیْعِ اَهْلِ
اَهْلِ اللّٰهِ الْمُوَحِّدِیْنَ وَالْمَدْفُوْنِیْنَ فِیْ بِلَادِ الْاَجْمِیْرِ وَالدِّهْلِیْ وَالَّاهُوْرِ وَالْجَوْنْپُوْرِ مَا عَلِمْتُ
مِنْهُمْ وَمَا لَمْ اَعْلَمْ ۝ خُصُوْصًا مِنْهُمْ اِلٰی رُوْحِ خَوَاجَہ مُحَمَّدٌ مُعِیْنُ الدِّیْنِ اَجْمِیْرِیْ وَدَاتَا مُحَمَّد
گنج بخش ہجویری ثُمَّ اللَّاهُوْرِیْ وَخَوَاجَہ مُحَمَّد قُطْبُ الدِّیْن وَخَوَاجَہ مُحَمَّد نِظَامُ الدِّیْن
سُلْطَانُ الْاَوْلِیَاءِ وَخَوَاجَہ مُحَمَّد نَصِیْرُ الدِّیْن چِرَاغِ دِهْلِیْ وَخَوَاجَہ مُحَمَّد اَمِیْر خُسْرَو دِهْلِیْ
وَحَضْرَتْ شَیْخِ مُحَمَّد رَشِیْد عُثْمَانِیْ جَوْنْپُوْرِیْ وَجَمِیْعِ اَهْلِ اللّٰهِ الْبَنْگَالَةِ الْهِنْدِ مَا عَلِمْتُ مِنْهُمْ وَمَا
لَمْ اَعْلَمْ ۝ خُصُوْصًا مِنْهُمْ اِلٰی رُوْحِ سَیِّدِنَا عَارِیْ مُحَمَّد مُبَارَکْ عَلِیْ بَانْسُرْوِیْ قَدَّسَ سِرَّهُمُ الْعَزِیْزِ
اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً ۝ نَفَخْتُ فِیْهِ مِنْ رُّوْحِیْ اِلٰی آخِرِہٖ ۔ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّیْ ۔
مَنْ عَرَفَ نَفْسَهٗ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهٗ اَلَسْتُ بِرَبِّکُمْ قَالُوْا بَلٰی لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰی تُنْفِقُوْا مِمَّا
تُحِبُّوْنَ ۝ یُبَایِعُوْنَکَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ

इसके बाद आयतल कुर्सी खालिदून तक एक मर्तबा। सूरए वज़्ज़ुहा, सूरए अलम नशरह एक-एक मर्तबा। सूरए काफ़िरून चार मर्तबा। सूरए कुलहुवल्लाह तीन मर्तबा और सूरए फ़लक़, सूरए नास, सूरए अलहम्दु एक-एक मर्तबा। सूरए बक़र अलिफ़-लाम-मीम से मुफ़लिहून तक एक मर्तबा पढ़ कर नीचे की आयतें पढ़ें।

(इन्ना रहमतल्लाहे..........)

एक मर्तबा पढ़ कर दुआ के लिये हाथ उठाने से पहले यह दरूद शरीफ़ पढ़ें तब दुआ के लिए हाथों को उठाए।

(अल्लाहुम्मा सल्ले अला मोहम्मदिंव.....)

बुजुर्गानेदीन की नज़्र, के लिये खाना, पानी, मिठाई जो भी हो सके सामने रख कर यह दुआ पढ़े।

(अल्ला हुम्मा बलिग़ा व औसिल.....)

हज़रत सूफ़ी शाह मुहम्मद ख़लीक़ उल्लाह

(रहमत हो उन पर अल्लाह की)

के ख़ुलफ़ा के नाम व पते

ख़लीफ़ा का अर्थ।

अल्लाह पाक फ़रमाता है।

اِنِّیۡ جَاعِلٌ فِی الۡاَرۡضِ خَلِیۡفَةً

अर्थ- (मैं ज़मीन पर अपना खलीफ़ा बनाने वाला हूँ)

सबसे पहले खलीफ़ा हज़रत आदम थे- क़ुरआन।

(नफ़ख़तो फ़ीहे मिन रूही व इलाआखिरेहि)

अर्थ- जब मैं अपनी रूह आदम के क़ालिब (ढाँचा) में फूँक दूँ तो तमाम फ़रिश्ते आदम के लिए सज्दा में झुक जायें। इसीलिए कि वह सज्दा रूह यानी अल्लाह के लिए था। इसी लिए फ़रमाया-

(कुलिर्रूही मिन अमरे रब्बी)

अर्थ- (कह दो ऐ महबूब कि रूह रब का हुक्म है) हुक्म की दो किस्में हैं। एक इरादा के तौर पर दसरा ज़बान से हुक्म किया जाता है। हुक्म इरादा खुद अपने ऊपर और हुक्म ज़बानी अपने से ग़ैर पर किया जाता है।

लिहाज़ा आमिर (हुक्म करने वाला) खुद ही अम्र (हुक्म) बना क्योंकि उसका अम्र खुद पर था ग़ैर पर नहीं क्योंकि खुदा का ग़ैर मौजूद न था। लिहाज़ा हर इन्सान की हस्ती में वही रूह मौजूद है, इसी लिए हर इन्सान अल्लाह का खलीफ़ा यानी क़ायम मुकाम है। लेकिन सही मानों में खलीफ़ा वही है जिसने हुजूर के फ़रमान के मुताबिक़ अपने आपको पहचान लिया हो, और उसकी पहचान ही खुद की पहचान है।

مَنۡ عَرَفَ نَفۡسَهٗ فَقَدۡ عَرَفَ رَبَّهٗ

पस वह शख्स खुद से और अल्लाह की जात के साथ बाकी हो गया। उसका देखना, सुनना, बोलना अल्लाह ही का हो गया। रसूल पाक के तशरीफ़ लाने और कुरआन के उतरने की वजह यही मारफ़ते इलाही है।

अज़ल के दिन अल्लाह तआला ने रूहों को मुखातिब करके यही कहा था।

اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوْا بَلٰى

क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ। चूँकि उस वक़्त रूहों पर जिस्म का परदा न था जवाब में कहा था (बला) हाँ। यानी अपना इन्कार और खुदा का इक़रार था। लेकिन जब रूहों पर जिस्म का परदा पड़ गया तो अपनी खुदी का इक़रार करके खुदा को तलाश करने लगीं।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया।

(लनतनालुलबिर्रह हत्ता तनफ़ेकू मिम्मा तोहिब्बून)

जब तक अपनी सबसे प्यारी चीज़ को हम पर खर्च न करोगे तुम्हारी नजात (फ़लाह) न होगी जब यह आयत उतरी तो चालीस सहाबा मौजूद थे। हुजूर ने फ़रमाया। लोगो! अल्लाह तआला तुम्हारी सबसे प्यारी चीज़ यानी जान को तुमसे तलब कर रहा है। यानी ख्यानत को बेच कर अमानत के अमीन हो जाओ।

(वायऊ तहतश्शजरा)

चुनाँचे (ऐ महबूब इस पेड़ के नीचे बैअत (पीरी मुरीदी) का सिलसिला क़ायम करो) आपने यह सिलसिला क़ायम फ़रमाया और सहाबा कराम खुदी मजाज़ी की ख्यानत को बेच कर अल्लाह की ज़ात के अमीन हो गये। और सही मानों में अल्लाह के खलीफ़ा कहलाने के हक़दार हो गये।

शेर- अज़ल में जो सदा मैंने सुनी थी ज़ौके मस्ती में।
वही आवाज़ अब भी सुन रहा हूँ अपनी हस्ती में।।

पस ऐ तालिबे सादिक़ पैदाइश का सबब अल्लाह को पहचान है और बैअत पीरी मुरीदी का मक़सद यही है कि बन्दा अपनी हक़ीक़त यानी रूह को इदराक (पकड़) में लाए और दुनिया में आने का मक़सद पूरा हो।

❖ ❖ ❖

ख़लफ़ा के नाम व पते

(1) जनाब मुहम्मद मियाँ सिद्दीक़ी क़ादिरी चिश्ती (सज्जादह नशीन), इलाहाबाद
(2) जनाब मुहम्मद फ़रीद कादिरी चिश्ती (रहमत हो उन पर) विसाल (19-2-1992), इलाहाबाद
(3) जनाब मक़बूल अहमद क़ादिरी चिश्ती (सज्जादा नशीन) 105, नीम सराय, बेगम सराय, इलाहाबाद
(4) जनाब मुहम्मद इफ़तिखार उल्लाह क़ादिरी चिश्ती (खलीफ़ए आज़म) दारा शह अजमल, इलाहाबाद
(5) जनाब शब्बीर उद्दीन कादिरी चिश्ती नीम सराय, बेगम सराय, इलाहाबाद
(6) जनाब हाजी मुहम्मद सिद्दीक़ क़ादिरी चिश्ती भारत गंज, इलाहाबाद
(7) जनाब अहमद हुसैन कादिरी चिश्ती, कटरा, बख्शी, फर्रूखाबाद
(8) जनाब महमूद शाह कादिरी चिश्ती, कटरा, बख्शी, फर्रूखाबाद
(9) जनाब मु0 असरार हुसैन कादिरी चिश्ती खुरासा, गोंडा
(10) जनाब अ0 हई क़ादिरी चिश्ती, खुरासा, गोंडा
(11) जनाब मुजीबुल हक़ क़ादिरी चिश्ती निदौरा, रावतपुर, गोंडा
(12) जनाब अख्तर हुसैन कादिरी चिश्ती मुहम्मदपुर " "
200 (13) जनाब अनवारुल हक़ कादिरी चिश्ती " " "
(14) जनाब हकीम हाफ़िज सिराजउद्दीन क़ा0 चि0 खीरी
(15) जनाब मुबारक अली कादिरी चिश्ती लखरवाँ, मूँडा सवाराम, खीरी
(16) जनाब ज़हूर खाँ साहब क़ादिरी चिश्ती (सज्जादा नशीन) तपस्या रोड, साउथ, कलकत्ता
(17) जनाब करीम खाँ कादिरी चिश्ती कलकत्ता
(18) जनाब मुईन उद्दीन क़ादिरी चिश्ती तारापुरवा, गोंडा
(19) जनाब हाफ़िज गुलाम मुर्तजा कादिरी चि0 मादी डीह सजवा, धनबाद
(20) जनाब मु0 अमीन कादिरी चिश्ती " "
(21) जनाब नेमत अली कादिरी चिश्ती गुत्वन, जौनपुर
(22) जनाब बिसमिल्लाह कादिरी चिश्ती " "
(23) जनाब मु0 लतीफ़ क़ादिरी चिश्ती सुल्तानपुर
(24) जनाब अहमद उल्लाह "
(25) जनाब मु0 ऐयूब कादिरी चिश्ती "
(26) जनाब अला उद्दीन क़ादिरी चिश्ती "
(27) जनाब मु0 असग़र आलम क़ादिरी चिश्ती जहाँनाबाद
(28) जनाब अ0 सत्तार क़ादिरी चिश्ती "
(29) जनाब अ0 गफ़्फ़ार खाँ कादिरी चिश्ती "
(30) जनाब मु0 यूसुफ़ कादिरी चिश्ती "

नोट- कुछ खलफ़ाओं के नाम नहीं छप सके हैं। अगले एडीशन में छापे जाएंगे।

❖ ❖ ❖